उत्तर प्रदेश शासन



संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

वर्ष 2015-16

का

कार्यपूर्ति दिग्दर्शक आय-व्ययक

(परफार्मेन्स बजट)

उत्तर प्रदेश शासन

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

वर्ष 2015-16

का

कार्यपूर्ति दिग्दर्शक आय-व्ययक

(परफार्मेन्स बजट)

प्राक्कथन

विभागीय योजनाओं के वित्तीय एवं भौतिक पक्षों में पारस्परिक सामंजस्य स्थापित करने के उद्देश्य से कार्यक्रमों/कार्यकलापों का वर्गीकरण करते हुये संस्कृति विभाग का कार्यपूर्ति दिग्दर्शक आय-व्ययक 2015-16 प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा है कि आय-व्ययक में प्राविधानित धनराशि के उपयोग पर सूक्ष्म नियंत्रण रखने तथा उसके समतुल्य उपलब्धियाँ प्राप्त करने में यह सहायक होगा।

अनीता सी0 मेश्राम
सचिव
संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

भूमिका

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश की गौरवमयी धरोहर एवं परम्पराओं तथा लोक एवं शास्त्रीय कलाओं के विकास में अपने तीन निदेशालयों यथा उ0प्र0 संस्कृति निदेशालय, उ0प्र0 पुरातत्व निदेशालय एवं उ0प्र0 संग्रहालय निदेशालय तथा अपनी अशासकीय संस्थाओं के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। प्रदेश की लोक-संस्कृति की लुप्त होती विधाओं को गॉव-गॉव पहुॅचाना, मंच प्रदान करना एवं इनसे सम्बन्धित सर्वेक्षण/दस्तावेजीकरण आदि का कार्य भी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से विभाग द्वारा किया जा रहा है।

कला एवं संस्कृति के संवर्धन हेतु विभाग के अधीन स्वायत्तशासी संस्थाऐं कार्यरत हैं, जिनके माध्यम से प्रदेश में कला और संस्कृति को जनमानस से जोड़ने के लिए लोक एवं शास्त्रीय कलाओं के साथ-साथ ललित कलाओं के विकास का कार्य एवं सांस्कृतिक उत्सव सम्पन्न कराये जाते हैं।

प्रदेश के विभिन्न अंचलों में समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिनमें देश के प्रतिष्ठित कलाकारों के साथ-साथ युवा नवोदित/लोक कलाकारों को भी अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का समुचित अवसर प्रदान किया जाता है।

प्रदेश सरकार द्वारा भारत सरकार की सहायता से प्राचीन संस्कृति की थाती को संरक्षित रखने हेतु पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति योजना का संचालन किया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत उ0प्र0 में उपलब्ध 100 वर्ष पुराने पुरावशेषों का रजिस्ट्रीकरण का कार्य किया जाता है।

उ0प्र0 सरकार के विभिन्न विभागों एवं अर्द्धशासकीय एवं व्यक्तिगत अधिकारों व स्रोतों से प्राप्त अप्रचलित अभिलेखों के स्थानान्तरण एवं समुचित संरक्षण का कार्य उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार, लखनऊ एवं इसकी इकाइयों द्वारा आधुनिक उपकरणों के माध्यम से वैज्ञानिक ढंग से दुर्लभ पाण्डुलिपियों एवं प्रपत्रों का अभिलेखीकरण तथा अभिलेखों के डिजिटाइजेशन एवं शोध कार्य हेतु शोधार्थियों को सहायता प्रदान की जाती है।

प्रदेश के विभिन्न भागों व अंचलों में बिखरी पड़ी प्राचीन संस्कृति व सम्पदा के अवशेषों को प्रकाश में लाने एवं भावी पीढ़ियों के लिये उन्हें संरक्षित करने, एवं पुरातात्विक महत्व के स्थलों/स्मारकों/पुरावशेषों का सर्वेक्षण, प्राचीन स्मारकों के जीर्णोद्धार एवं परिरक्षण, पुरातात्विक महत्व के स्थलों का उत्खनन, डाकूमेन्टेशन एवं प्रकाशन आदि का कार्य के साथ ही ऐतिहासिक इमारत छतरमंजिल एवं फरहदबक्स कोठी को संरक्षित करने एवं सांस्कृतिक तथा पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित करने का कार्य भी उ0प्र0 राज्य पुरातत्व निदेशालय द्वारा किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त प्रदेश के विभिन्न भागों में बिखरी हुई प्राचीन मूर्तियों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए मिर्जापुर, सोनभद्र, महोबा एवं ललितपुर में स्थलीय संग्रहालयों का निर्माण कराया गया है तथा जौनपुर की बदलापुर तहसील, जालौन की कालपी तहसील, बॉदा की नैरनी तहसील व सई नदी क्षेत्र का ग्राम स्तरीय पुरातात्विक सर्वेक्षण किया जाना प्रस्तावित है।

कल्याणकारी योजनाओं के अन्तर्गत प्रदेश के 60 वर्ष के वृद्ध एवं विपन्न कलाकारों को जिन्होनें अपना पूरा जीवन कला एवं संस्कृति तथा साहित्य की अराधना में लगा दिया परन्तु वृद्धावस्था एवं खराब स्वास्थ्य के कारण अपनी जीविका-उपार्जन में असमर्थ हो गये हैं, उन्हें रू0 2000/- मासिक पेंशन दी जाती है तथा चिकित्सा सुविधा भी उपलब्ध कराये जाने की योजना भी प्रारम्भ की गयी है।

ऐसे उत्कृष्ट कलाकारों/महानुभावों जिन्होंने अपने व्यक्तिगत प्रयासों से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गौरव प्राप्त किया हो, को यश भारती सम्मान पुरस्कार तथा बेगम अख्तर पुरस्कार दिये जाने की योजना चलायी जा रही है।

विभाग के अधीन प्रदेश में 14 संग्रहालय कार्यरत हैं, जिनमें सांस्कृतिक सम्पदा, पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक धरोहरों को संरक्षित किया जाता है। इन संग्रहालयों में प्रस्तर कलाकृतियों, मृणमूर्तियों, लघुचित्र, सिक्के, हस्तलिखित अभिलेख, पाण्डुलिपियों, धातु, चर्म, कास्ट तथा हॉथी दॉत आदि की कला वस्तुऐं भी प्रदर्शित की जाती हैं।

जनपद कुशीनगर में महात्मा बुद्ध की महापरिनिर्वाण स्थली पर मैत्रेय परियोजना ट्रस्ट के साथ संस्कृति विभाग द्वारा ज्ञापन-पत्र हस्ताक्षरित किया गया है जिसके अनुसार महात्मा बुद्ध की लगभग 200 फिट ऊँची कॉस्य के आवरण युक्त प्रतिमा की स्थापना के साथ-साथ उच्च स्तरीय स्वास्थ्य, शिक्षा एवं अन्य कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन किया जायेगा। मैत्रेय परियोजना ट्रस्ट को इस सम्बन्ध में अधिग्रहीत की गयी भूमि हस्तान्तरित करने हेतु लीज़ डीड निष्पादित करने की कार्यवाही प्रचलन में है।

प्रदेश में कला एवं संस्कृति के प्रदर्शन हेतु खुले मंच, चित्रकूट में लोहिया प्रेक्षागृह, आजमगढ़ में हरिऔध कला केन्द्र, इलाहाबाद में जनेश्वर मिश्र पुस्तकालय, मथुरा वृन्दावन के मध्य आडिटोरियम का निर्माण, भारतरत्न बिस्मिल्लाह खॉं की स्मृति में संग्रहालय एवं मकबरे का निर्माण, मो0अली जौहर विश्वविद्यालय, रामपुर में मंच का निर्माण, बदायूँ में प्रेक्षागृह का निर्माण, जसवन्तनगर इटावा में पंचवटी भवन का जीर्णोद्धार, उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार परिसर में आरकाईवल गैलरी का निर्माण, राजकीय पुरातत्व संग्रहालय कन्नौज के प्रथम व द्वितीय तल पर आधुनिकीकरण, जनपद कन्नौज में विज्ञान संग्रहालय एवं चिल्ड्रेन पार्क की स्थापना, राजकीय बौद्ध संग्रहालय गोरखपुर में साइंस म्यूजियम की स्थापना एवं आल इण्डिया कैफ़ी आज़मी अकादमी लखनऊ में कला केन्द्र का निर्माण, प्राचीन/दुर्लभ पेन्टिंग नीलामी हेतु प्लेटफार्म का निर्माण, फैजाबाद में सांस्कृतिक मंच की स्थापना, भातखण्डे संगीत संस्थान समविश्वविद्यालय के नये परिसर हेतु भूमि व्यवस्था एवं भवन निर्माण की योजनाऐं प्रस्तावित हैं।

विषय-सूची

वित्तीय आवश्यकताएँ

क–कार्यक्रम तथा कार्य–कलापों

क.सं.	कार्य	वास्तविक व्यय 2013–2014			आय–व्ययक अनुमान 2014–2015		
		आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
1	2	3	4	5	6	7	8
क. संस्कृति निदेशालय							
1	निदेशन एवं प्रशासन	0	41760	41760	0	56470	56470
2	ललित कलाओं की शिक्षा	4500	108811	113311	6750	151309	158059
3	कला और संस्कृति का संवर्धन	26200	9882	36082	37000	13016	50016
4	पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम का कार्यान्वयन	0	8884	8884	0	10692	10692
5	अभिलेखागार	458	32320	32778	3600	44410	48010
6	अन्य व्यय	0	9659	9659	0	12000	12000
	योग–क	31158	211316	242474	47350	287897	335247
ख. पुरातत्व निदेशालय				0			
1	निदेशन एवं प्रशासन			0			0
	योग–ख–मतदेय	0	46293	46293	0	58825	58825
	भारित	0	0	0	0	5	5
ग. संग्रहालय निदेशालय							
1	निदेशन एवं प्रशासन	11533	73277	84810	27100	99168	126268
	योग–ग	11533	73277	84810	27100	99168	126268
घ. पूँजीलेखा							
1	पूँजीगत व्यय	66121	0	66121	789929	0	789929
	योग–घ	66121	0	66121	789929	0	789929
मतदेय		108812	330886	439698	864379	445890	1310269
	भारित	0	0	0	0	5	5

आवश्यकतायें
का वर्गीकरण

(धनराशि हजार रु0 में)

पुनरीक्षित आय–व्ययक अनुमान 2014–2015			आय–व्ययक अनुमान 2015–2016		
आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
9	10	11	12	13	14
0	54086	54086	0	58429	58429
26750	151309	178059	149532	167496	317028
37500	13016	50516	39550	14216	53766
0	9816	9816	0	9848	9848
3600	43188	46788	3600	44367	47967
0	12000	12000	0	12000	12000
67850	283415	351265	192682	306356	499038
		0			0
0	53802	53802	0	53457	53457
0	5	5	0	5	5
27100	95757	122857	30000	91652	121652
27100	95757	122857	30000	91652	121652
758636	0	758636	654904	1250	656154
758636	0	758636	654904	1250	656154
853586	432974	1286560	877586	452715	1330301
0	5	5	0	5	5

क्र.सं.	कार्य	वास्तविक व्यय 2013-2014			आय-व्ययक अनुमान 2014-2015		
		आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
1	2	3	4	5	6	7	8
2205-कला एवं संस्कृति							
001-निदेशन एवं प्रशासन							
03	संस्कृति निदेशालय						
01	वेतन	0	11369	11369	0	11634	11634
02	मजदूरी	0	1218	1218	0	1300	1300
03	महँगाई भत्ता	0	9338	9338	0	12216	12216
04	यात्रा व्यय	0	76	76	0	150	150
05	स्थानीय यात्रा व्यय	0	42	42	0	50	50
06	अन्य भत्ते	0	1371	1371	0	1400	1400
07	मानदेय	0	0	0	0	50	50
08	कार्यालय व्यय	0	250	250	0	250	250
09	विद्युत देय	0	947	947	0	1100	1100
10	जलकर	0	14	14	0	50	50
11	लेखन सामग्री	0	200	200	0	200	200
12	कार्यालय फर्नीचर	0	93	93	0	100	100
13	टेलीफोन	0	86	86	0	160	160
15	पेट्रोल	0	599	599	0	600	600
16	व्यवसायिक तथा विशेष सेवाओं के लिये भुगतान	0	99	99	0	100	100
18	प्रकाशन	0	84	84	0	160	160
25	लघु निर्माण	0	52	52	0	100	100
29	अनुरक्षण	0	218	218	0	700	700
42	अन्य व्यय	0	14544	14544	0	23800	23800
44	प्रशिक्षण	0	0	0	0	100	100
45	अवकाश यात्रा	0	0	0	0	100	100
46	कम्प्यूटर हार्डवेयर	0	132	132	0	400	400
47	कम्प्यूटर स्टेशनरी	0	130	130	0	200	200
49	चिकित्सा व्यय	0	872	872	0	1500	1500
51	वर्दी व्यय	0	26	26	0	50	50
	योग-001	0	41760	41760	0	56470	56470

वर्गीकरण

(धनराशि हजार रू0 में)

पुनरीक्षित आय-व्ययक अनुमान 2014-2015			आय-व्ययक अनुमान 2015-2016		
आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
9	10	11	12	13	14.
0	10471	10471	0	11413	11413
0	1300	1300	0	1400	1400
0	10995	10995	0	13696	13696
0	150	150	0	150	150
0	50	50	0	50	50
0	1400	1400	0	1400	1400
0	50	50	0	50	50
0	250	250	0	250	250
0	1100	1100	0	1600	1600
0	50	50	0	50	50
0	200	200	0	200	200
0	100	100	0	100	100
0	160	160	0	160	160
0	600	600	0	600	600
0	100	100	0	300	300
0	160	160	0	160	160
0	100	100	0	0	0
0	700	700	0	700	700
0	23800	23800	0	23800	23800
0	100	100	0	100	100
0	100	100	0	100	100
0	400	400	0	400	400
0	200	200	0	200	200
0	1500	1500	0	1500	1500
0	50	50	0	50	50
0	54086	54086	0	58429	58429

क्र.सं.	कार्य	वास्तविक व्यय 2013-2014			आय-व्ययक अनुमान 2014-2015		
		आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
1	2	3	4	5	6	7	8
101-	ललित कला शिक्षा						
06	ललित कला अकादमी						
20	सहायता अनुदान	250	3900	4150	500	3900	4400
43	वेतन अनुदान	0	3341	3341	0	3800	3800
07	संगीत नाटक अकादमी						
20	सहायता अनुदान	500	9600	10100	500	9600	10100
43	वेतन अनुदान	0	10264	10264	0	12220	12220
08-	भारतेन्दु नाट्य अका.						
20	सहायता अनुदान	3750	6100	9850	3750	6100	9850
43	वेतन अनुदान	0	9277	9277	0	11379	11379
09	कथक केन्द्र						
20	सहायता अनुदान	0	0	0	0	0	0
43	वेतन अनुदान	0	2398	2398	0	3550	3550
12	वृन्दावन शो0सं0						
20	सहायता अनुदान	0	1100	1100	0	1100	1100
43	वेतन अनुदान	0	1110	1110	0	1800	1800
13	अखिल भा0सं0परि0						
20	सहायता अनुदान	0	225	225	0	225	225
43	वेतन अनुदान	0	0	0	0	0	0
16	जैन विद्या शो0सं0						
20	सहायता अनुदान	0	1500	1500	0	1500	1500
43	वेतन अनुदान	0	522	522	0	870	870
17	अयोध्या शोध संस्थान						
20	सहायता अनुदान	0	13935	13935	2000	27870	29870
43	वेतन अनुदान	0	2633	2633	0	3605	3605
20	कथक नृत्य संस्थान						
20	सहायता अनुदान	0	8650	8650	0	8650	8650
43	वेतन अनुदान	0	1490	1490	0	2572	2572
21	भातखण्डे संगीत संस्थान						
20	सहायता अनुदान	0	4142	4142	0	4142	4142
43	वेतन अनुदान	0	26791	26791	0	45926	45926
22	जनजाति एवं लोककला संस्थान						
20	सहायता अनुदान	0	1500	1500	0	1500	1500
43	वेतन अनुदान	0	333	333	0	1000	1000
24	मु0 अली जौ0 विश्व0, रामपुर						
35	पूँजीगत अनुदान	0	0	0	0	0	0
.	योग-101	4500	108811	113311	6750	151309	158059

वर्गीकरण

(धनराशि हजार रू0 में)

पुनरीक्षित आय-व्ययक अनुमान 2014-2015			आय-व्ययक अनुमान 2015-2016		
आयोजनागत 9	आयोजनेत्तर 10	योग 11	आयोजनागत 12	आयोजनेत्तर 13	योग 14
500	3900	4400	21025	4400	25425
0	3800	3800	0	4000	4000
500	9600	10100	525	13480	14005
0	12220	12220	0	12800	12800
3750	6100	9850	23800	8710	32510
0	11379	11379	0	12517	12517
0	0	0	0	0	0
0	3550	3550	0	3905	3905
					0
0	1100	1100	0	1100	1100
0	1800	1800	0	2200	2200
					0
0	225	225	0	225	225
0	0	0	0	0	0
					0
0	1500	1500	0	1500	1500
0	870	870	0	957	957
					0
2000	27870	29870	2500	27870	30370
0	3605	3605	0	3966	3966
					0
0	8650	8650	0	10000	10000
0	2572	2572	0	2706	2706
					0
0	4142	4142	0	4142	4142
0	45926	45926	0	50518	50518
0	1500	1500	0	1500	1500
0	1000	1000	0	1000	1000
20000	0	20000	101682	0	101682
26750	151309	178059	149532	167496	317028

क्र.सं.	कार्य	वास्तविक व्यय 2013-2014			आय-व्ययक अनुमान 2014-2015		
		आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
1	2	3	4	5	6	7	8
102	कला और संस्कृति का संवर्धन						
03	रविन्द्रालय को अनुदान						
20	सहायता अनुदान	0	0	0	0	0	0
04	यश भारती सम्मान						
42	अन्य व्यय	24200	0	24200	35000	0	35000
05	कैफी आज़मी अकादमी						
20	सहायता अनुदान	0	0	0	0	0	0
42	अन्य व्यय	2000	0	2000	2000	0	2000
06	बेगम अख्तर पु0						
42	अन्य व्यय	0	0	0	0	0	0
09	वृद्ध कलाकारों को पेंशन						
20	सहायता अनुदान	0	5871	5871	0	8016	8016
16	क्षेत्रीय सां0 केन्द्र						
42	अन्य व्यय	0	4011	4011	0	5000	5000
	योग-102	26200	9882	36082	37000	13016	50016
103	पुरातत्व विज्ञान						
01	पुरावशेष योजना						
01	वेतन	0	4353	4353	0	4270	4270
03	महँगाई भत्ता	0	3661	3661	0	4484	4484
04	यात्रा व्यय	0	125	125	0	160	160
05	स्था0 यात्रा व्यय	0	0	0	0	30	30
06	अन्य भत्ते	0	343	343	0	425	425
07	मानदेय	0	0	0	0	20	20
08	कार्यालय व्यय	0	199	199	0	200	200
09	विद्युत देय	0	8	8	0	65	65
10	जलकर	0	0	0	0	30	30
11	लेखन सामग्री	0	71	71	0	150	150
12	कार्यालय फर्नीचर	0	55	55	0	100	100
13	टेलीफोन	0	0	0	0	30	30
17	किराया उपशुल्क	0	43	43	0	78	78
45	अवकाश यात्रा	0	0	0	0	100	100
49	चिकित्सा व्यय	0	26	26	0	500	500
51	वर्दी व्यय	0	0	0	0	50	50
	योग-01	0	8884	8884	0	10692	10692

वर्गीकरण (धनराशि हजार रू0 में)

पुनरीक्षित आय-व्ययक अनुमान 2014-2015			आय-व्ययक अनुमान 2015-2016		
आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
9	10	11	12	13	14
0	0	0	0	0	0
35000	0	35000	35000	0	35000
0	0	0	2000	0	2000
2000	0	2000	2000	0	2000
500	0	500	550	0	550
0	8016	8016	0	9216	9216
					0
0	5000	5000	0	5000	5000
37500	13016	50516	39550	14216	53766
					0
					0
0	3843	3843	0	3508	3508
0	4035	4035	0	4210	4210
0	160	160	0	160	160
0	30	30	0	30	30
0	425	425	0	460	460
0	20	20	0	20	20
0	200	200	0	200	200
0	65	65	0	100	100
0	30	30	0	30	30
0	150	150	0	150	150
0	100	100	0	100	100
0	30	30	0	30	30
0	78	78	0	100	100
0	100	100	0	100	100
0	500	500	0	600	600
0	50	50	0	50	50
0	9816	9816	0	9848	9848

क्र.सं.	कार्य	वास्तविक व्यय 2013-2014			आय-व्ययक अनुमान 2014-2015		
		आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
1	2	3	4	5	6	7	8
03	पुरातत्व निदेशालय						
01	वेतन	0	20686	20686	0	24500	24500
03	महँगाई भत्ता	0	17387	17387	0	25725	25725
04	यात्रा व्यय	0	496	496	0	500	500
05	स्थानीय यात्रा व्यय	0	6	6	0	20	20
06	अन्य भत्ते	0	2225	2225	0	2700	2700
07	मानदेय	0	20	20	0	20	20
08	कार्यालय व्यय	0	332	332	0	300	300
09	विद्युत देय	0	131	131	0	250	250
10	जलकर	0	9	9	0	15	15
11	लेखन सामग्री	0	66	66	0	70	70
12	कार्यालय फर्नीचर	0	100	100	0	100	100
13	टेलीफोन	0	56	56	0	80	80
14	मो0 गाड़ी क्रय	0	0	0	0	0	0
15	पेट्राल	0	60	60	0	60	60
17	किराया उपशुल्क	0	60	60	0	185	185
18	प्रकाशन	0	150	150	0	150	150
25	लघु निर्माण	0	49	49	0	50	50
29	अनुरक्षण	0	944	944	0	1000	1000
42	अन्य व्यय मतदेय	0	1943	1943	0	1900	1900
	भारित	0	0	0	0	5	5
44	प्रशिक्षण	0	0	0	0	25	25
45	अवकाश यात्रा	0	0	0	0	100	100
46	कम्प्यूटर हार्डवेयर	0	99	99	0	100	100
47	कम्प्यूटर स्टेशनरी	0	120	120	0	150	150
49	चिकित्सा व्यय	0	1354	1354	0	800	800
51	वर्दी	0	0	0	0	25	25
	योग-03 मतदेय	0	46293	46293	0	58825	58825
	भारित	0	0	0	0	5	5
	योग-103 मतदेय	0	55177	55177	0	69517	69517
	भारित	0	0	0	0	5	5

वर्गीकरण (धनराशि हजार रू0 में)

पुनरीक्षित आय-व्ययक अनुमान 2014-2015			आय-व्ययक अनुमान 2015-2016		
आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
9	10	11	12	13	14
0	22050	22050	0	19865	19865
0	23152	23152	0	23838	23838
0	500	500	0	600	600
0	20	20	0	100	100
0	2700	2700	0	2384	2384
0	20	20	0	20	20
0	300	300	0	300	300
0	250	250	0	600	600
0	15	15	0	15	15
0	70	70	0	70	70
0	100	100	0	100	100
0	80	80	0	80	80
0	0	0	0	800	800
0	60	60	0	60	60
0	185	185	0	300	300
0	150	150	0	150	150
0	50	50	0	0	0
0	1000	1000	0	1000	1000
0	1900	1900	0	1900	1900
0	5	5	0	5	5
0	25	25	0	100	100
0	100	100	0	100	100
0	100	100	0	100	100
0	150	150	0	150	150
0	800	800	0	800	800
0	25	25	0	25	25
0	53802	53802	0	53457	53457
0	5	5	0	5	5
0	63618	63618	0	63305	63305
0	5	5	0	5	5

क्र.सं.	कार्य	वास्तविक व्यय 2013-2014			आय-व्ययक अनुमान 2014-2015		
		आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
1	2	3	4	5	6	7	8
104	अभिलेखागार						
01	केन्द्रीय आयोजनागत/ केन्द्र द्वारा पुरो0 यो0						
0101	रा0अभि0 की पाण्डु. का संरक्षण						
42	अन्य व्यय	0	0	0	1200	0	1200
03	राज्य अभिलेख						
01	वेतन	0	13868	13868	0	16530	16530
02	मजदूरी	0	113	113	0	280	280
03	महँगाई भत्ता	0	11759	11759	0	17356	17356
04	यात्रा व्यय	0	93	93	0	200	200
05	स्थाना0 यात्रा व्यय	0	0	0	0	100	100
06	अन्य भत्ते	0	1813	1813	0	2201	2201
07	मानदेय	0	2	2	0	50	50
08	कार्यालय व्यय	0	288	288	0	500	500
09	विद्युत देय	0	785	785	0	874	874
10	जलकर	0	704	704	0	724	724
11	लेखन सामग्री	0	137	137	0	200	200
12	कार्यालय फर्नीचर	0	13	13	0	150	150
13	टेलीफोन	0	42	42	0	165	165
15	पेट्रोल	0	80	80	0	80	80
17	किराया उपशुल्क	0	689	689	0	925	925
18	प्रकाशन	0	0	0	0	200	200
19	विज्ञापन, बिक्री आदि	0	0	0	0	25	25
22	आतिथ्य व्यय	0	9	9	0	10	10
25	लघु निर्माण	0	122	122	0	500	500
26	मशीनें	0	45	45	0	200	200
29	अनुरक्षण	0	145	145	0	370	370
42	अन्य व्यय	458	873	1331	2400	1030	3430
44	प्रशिक्षण	0	0	0	0	100	100
45	अवकाश यात्रा	0	0	0	0	100	100
46	कम्प्यूटर हार्डवेयर	0	2	2	0	300	300
47	कम्प्यूटर स्टेशनरी	0	127	127	0	250	250
49	चिकित्सा व्यय	0	611	611	0	900	900
51	वर्दी व्यय	0	0	0	0	90	90
	योग-104	458	32320	32778	3600	44410	48010

वर्गीकरण (धनराशि हजार रू0 में)

पुनरीक्षित आय-व्यय अनुमान 2014-2015			आय-व्यय अनुमान 2015-2016		
आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
9	10	11	12	13	14
1200	0	1200	1200	0	1200
0	14877	14877	0	13714	13714
0	280	280	0	350	350
0	15621	15621	0	16457	16457
0	200	200	0	200	200
0	100	100	0	100	100
0	2201	2201	0	1852	1852
0	50	50	0	50	50
0	500	500	0	500	500
0	874	874	0	1160	1160
0	724	724	0	2452	2452
0	200	200	0	200	200
0	150	150	0	150	150
0	165	165	0	165	165
0	80	80	0	80	80
0	3091	3091	0	3042	3042
0	200	200	0	200	200
0	25	25	0	25	25
0	10	10	0	10	10
0	500	500	0	0	0
0	200	200	0	200	200
0	370	370	0	370	370
2400	1030	3430	2400	1030	3430
0	100	100	0	100	100
0	100	100	0	100	100
0	300	300	0	300	300
0	250	250	0	250	250
0	900	900	0	1200	1200
0	90	90	0	110	110
3600	43188	46788	3600	44367	47967

क्र.सं.	कार्य	वास्तविक व्यय 2013-2014			आय-व्ययक अनुमान 2014-2015		
		आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
1	2	3	4	5	6	7	8
107	संग्रहालय निदेशालय						
01	वेतन	0	29392	29392	0	38589	38589
02	मजदूरी	0	1717	1717	0	1550	1550
03	महँगाई भत्ता	0	25098	25098	0	40518	40518
04	यात्रा व्यय	0	392	392	0	350	350
05	स्थाना0 यात्रा व्यय	0	0	0	0	40	40
06	अन्य भत्ते	0	2643	2643	0	3904	3904
07	मानदेय	0	60	60	0	60	60
08	कार्यालय व्यय	0	414	414	0	430	430
09	विद्युत देय	0	3181	3181	0	4535	4535
10	जलकर	0	70	70	0	65	65
11	लेखन सामग्री	0	277	277	0	330	330
12	कार्यालय फर्नीचर	0	339	339	0	400	400
13	टेलीफोन	0	106	106	0	135	135
15	पेट्रोल	0	400	400	0	400	400
17	किराया उपशुल्क	0	414	414	0	482	482
18	प्रकाशन	0	150	150	0	150	150
25	लघु निर्माण	0	535	535	0	600	600
26	मशीनें और सज्जा	0	258	258	0	300	300
29	अनुरक्षण	0	2589	2589	0	1000	1000
42	अन्य व्यय	11533	2286	13819	27100	2700	29800
44	प्रशिक्षण	0	147	147	0	300	300
45	अवकाश यात्रा	0	6	6	0	245	245
46	कम्प्यूटर हार्डवेयर	0	346	346	0	350	350
47	कम्प्यूटर स्टेशनरी	0	146	146	0	150	150
49	चिकित्सा व्यय	0	2306	2306	0	1500	1500
51	वर्दी व्यय	0	5	5	0	85	85
	योग-107	11533	73277	84810	27100	99168	126268
800	अन्य व्यय						
11	अभिलेखीकरण योजना						
42	अन्य व्यय	0	0	0	0	2000	2000
13	सैफई महोत्सव						
42	अन्य व्यय	0	9659	9659	0	10000	10000
	योग-800	0	9659	9659	0	12000	12000
2205	मतदेय	42691	330886	373577	74450	445890	520340
	भारित	0	0	0	0	5	5

वर्गीकरण

(धनराशि हजार रू0 में)

पुनरीक्षित आय-व्ययक अनुमान 2014-2015			आय-व्ययक अनुमान 2015-2016		
आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
9	10	11	12	13	14
0	34730	34730	0	32038	32038
0	1550	1550	0	2018	2018
0	36466	36466	0	38446	38446
0	350	350	0	350	350
0	40	40	0	40	40
0	3904	3904	0	3845	3845
0	60	60	0	60	60
0	430	430	0	430	430
0	6535	6535	0	5000	5000
0	65	65	0	75	75
0	330	330	0	330	330
0	400	400	0	400	400
0	135	135	0	135	135
0	400	400	0	400	400
0	482	482	0	490	490
0	150	150	0	150	150
0	600	600	0	0	0
0	300	300	0	300	300
0	3500	3500	0	1300	1300
27100	2700	29800	30000	2700	32700
0	300	300	0	300	300
0	245	245	0	245	245
0	350	350	0	350	350
0	150	150	0	150	150
0	1500	1500	0	2000	2000
0	85	85	0	100	100
27100	95757	122857	30000	91652	121652
0	2000	2000	0	2000	2000
0	10000	10000	0	10000	10000
0	12000	12000	0	12000	12000
94950	432974	527924	222682	451465	674147
0	5	5	0	5	5

क.सं.	कार्य	वास्तविक व्यय 2013-2014			आय-व्ययक अनुमान 2014-2015		
		आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
1	2	3	4	5	6	7	8
पूँजीलेखा-4202							
800	अन्य व्यय						
31	छतर मंजिल अनु0						
24	वृहत निर्माण कार्य	0	0	0	0	0	0
04	कला तथा संस्कृति						
104	अभिलेखागार						
03	राज्य अभिलेख						
25	लघु निर्माण	0	0	0	0	0	0
04	रा0पाण्डु0,इला0			0	0	0	0
24	वृहत निर्माण कार्य	3500	0	3500	1500	0	1500
106	संग्रहालय						
01	केन्द्र प्रा0यो0						
0101	संग्रहालय का सुदृ0						
24	वृहत निर्माण कार्य	0		0	0	0	0
03	अधिष्ठान व्यय						
25	लघु निर्माण	0	0	0	0	0	0
04	13वॉं वित्त आयोग						
24	वृहत निर्माण कार्य	8390	0	8390	570000	0	570000
05	संग्रहालय की स्थापना						
24	वृहत निर्माण कार्य	0	0	0	9180	0	9180
06	रा0पुरा0संग्र0कन्नौज						
24	वृहत निर्माण कार्य	0		0	0	0	0
09	मूर्तियों का निर्माण						
24	वृहत निर्माण कार्य	341	0	341	5000	0	5000
800-अन्य व्यय							
01	के0प्रा0योजनाएं						
0102	रा0कथक म0नि0						
24	वृहत निर्माण कार्य	0	0	0	10000	0	10000
0104	मथुरा-वृन्दावन ऑडि0						
24	वृहत निर्माण कार्य	0	0	0	50000	0	50000
03	प्रेक्षागृह/खुला मंच का निर्माण			0	0	0	0
24	वृहत निर्माण कार्य	2210	0	2210	30000	0	30000
04	जसवन्त न0पंचवटी						
24	वृहत निर्माण कार्य	0	0	0	0	0	[illegible]

वर्गीकरण (धनराशि हजार रू0 में)

पुनरीक्षित आय-व्ययक अनुमान 2014-2015			आय-व्ययक अनुमान 2015-2016		
आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
9	10	11	12	13	14
18000	0	18000	0	0	0
0	0	0	0	500	500
0	0	0	0	0	0
1350	0	1350	0	0	0
0	0	0	30000	0	30000
0	0	0	0	600	600
513000	0	513000	0	0	0
8262	0	8262	10000	0	10000
0	0	0	50000	0	50000
4500	0	4500	1000	0	1000
9000	0	9000	15000	0	15000
45000	0	45000	50000	0	50000
0	0	0	0	0	0
27000	0	27000	30000	0	30000
0	0	0	14377	0	14377

क्र.सं.	कार्य	वास्तविक व्यय 2013-2014			आय-व्ययक अनुमान 2014-2015		
		आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
1	2	3	4	5	6	7	8
05	फ़ैज़ाबाद में मंच का नि0						
24	वृहूत निर्माण कार्य	0	0	0	0	0	0
06	भातखण्डे स0 सं0भूमि क्रय						
24	वृहूत निर्माण कार्य	0	0	0	0	0	0
07	राजापुर लो0प्रे0				10000	0	10000
24	वृहूत निर्माण कार्य	0	0	0			
08	आजमगढ़ हरिऔध				5000	0	5000
24	वृहूत निर्माण कार्य	10000	0	10000			
09	इलाहाबाद जनेश्वर मिश्र				50000	0	50000
24	वृहूत निर्माण कार्य	0	0	0			
16	फ़ैज़ाबाद में संकुल का नि0				10000	0	10000
24	वृहूत निर्माण कार्य	10000	0	10000			
20	भातखण्डे स0 सं0भवन सुदृ0				100	0	100
24	वृहूत निर्माण कार्य	1680	0	1680			
25	रा.कथक सं0 लख. के भवन सं. 27/2/2 का सुदृढ़ीकरण/परिवर्धन				7092	0	7092
24	वृहूत निर्माण कार्य	0	0	0			
26	लो.क.संग्र.लख. परिसर में लोकमंच एवं रा0अभि0 लखनऊ के परिसर में अवध मंच की स्थापना				100	0	100
24	वृहूत निर्माण कार्य	0	0	0			
27	इटावा नुमा0पं0का वि0				24957	0	24957
24	वृहूत निर्माण कार्य	30000	0	30000			
28	उ0विस्मिल्ला खां के मकबरा स्थल				2000	0	2000
24	वृहूत निर्माण कार्य	0	0	0			
29	चित्र0में लो0प्रेक्षा0				5000	0	5000
24	वृहूत निर्माण कार्य	0	0	0			

वर्गीकरण

(धनराशि हजार रू0 में)

पुनरीक्षित आय-व्ययक अनुमान 2014-2015			आय-व्ययक अनुमान 2015-2016		
आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
9	10	11	12	13	14
0	0	0	50000	0	50000
0	0	0	100000	0	100000
9000	0	9000	0	0	0
4500	0	4500	156773	0	156773
45000	0	45000	20000	0	20000
9000	0	9000	15833	0	15833
90	0	90	13472	0	13472
6383	0	6383	100	0	100
90	0	90	0	0	0
22461	0	22461	100	0	100
1800	0	1800	987	0	987
4500	0	4500	42262	0	42262

ख-उद्देश्यवार

क्र.सं.	कार्य	वास्तविक व्यय 2013-2014			आय-व्ययक अनुमान 2014-2015		
		आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
1	2	3	4	5	6	7	8
30	आ0इ0कैफी आज़0अ0						
24	वृहृत निर्माण कार्य	0	0	0	0	0	0
31	छतर मंजिल का अनु0						
24	वृहृत निर्माण कार्य	0	0	0	0	0	0
32	जन0बदायूं में प्रे0नि0						
24	वृहृत निर्माण कार्य	0	0	0	0	0	0
33	राज0अभि0,लख0 में आर्का0गैलरी						
24	वृहृत निर्माण कार्य	0	0	0	0	0	0
34	संस्कृति निदेशालय						
25	लघु निर्माण	0	0	0	0	0	0
35	पुरातत्व निदेशालय						
25	लघु निर्माण	0	0	0	0	0	0
	योग 4202	66121	0	66121	789929	0	789929
	महायोग	108812	330886	439698	864379	445890	1310269
	भारित	0	0	0	0	5	

वर्गीकरण

(धनराशि हजार रू0 में)

पुनरीक्षित आय-व्ययक अनुमान 2014-2015			आय-व्ययक अनुमान 2015-2016		
आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
9	10	11	12	13	14
4500	0	4500	10000	0	10000
0	0	0	20000	0	20000
7200	0	7200	5000	0	5000
18000	0	18000	20000	0	20000
0	0	0	0	100	100
0	0	0	0	50	50
758636	0	758636	654904	1250	656154
853586	432974	1286560	877586	452715	1330301
0	5	5	0	5	5

क्र. सं.	अनुदान संख्या	लेखाशीर्षक	वास्तविक व्यय 2013-2014			आय-व्ययक अनुमान2014-2015		
			आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
1	2	3	4	5	6	7	8	9
संस्कृति विभाग								
1	92	2205-कला एवं संस्कृति						
		मतदेय	42691	330886	373577	74450	445890	520340
		भारित	0	0	0	0	5	5
2	92	4202-कला एवं संस्कृति पर पूँजीगत परिव्यय	66121	0	66121	789929	0	789929
		योग मतदेय	108812	330886	439698	864379	445890	1310269
		भारित	0	0	0	0	5	5

स्रोत

(धनराशि हजार रू0 में)

पुनरीक्षित आय-व्ययक अनुमान 2014-2015			आय-व्ययक अनुमान 2015-2016		
आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग	आयोजनागत	आयोजनेत्तर	योग
10	11	12	13	14	15
94950	432974	527924	222682	451465	674147
0	5	5	0	5	5
758636	0	758636	654904	1250	656154
853586	432974	1286560	877586	452715	1330301
0	5	5	0	5	5

घ-राजस्व प्राप्तियॉं

(धनराशि हजार रू0 में)

क्र.सं.	मद	आय-व्ययक अनुमान 2014-2015	पुनरीक्षित अनुभान 2014-2015	आय-व्ययक अनुमान 2015-2016
1	2	4	4	4
संस्कृति विभाग				
1	0202-शिक्षा, खेलकूद, कला और संस्कृति			
	04-कला और संस्कृति			
	101-अभिलेखागार और संग्रहालय	700	700	1400
	800-अन्य प्राप्तियॉं	2100	2100	2200
	900-घटायें प्राप्तियॉं	-1	-1	-1
	योग- 0202	2799	2799	3599
2	1601-केन्द्रीय सरकार से सहायता अनुदान			
	04-केन्द्र द्वारा समर्थित योजनागत स्कीमों के लिये अनुदान			
	92-संस्कृति विभाग			
	92-संस्कृति विभाग की प्राप्तियॉं	41346	42246	68473
	योग-1601	41346	42246	68473
	महायोग	44145	45045	72072

भाग - 1
संस्कृति निदेशालय

निदेशन एवं प्रशासन
संस्कृति निदेशालय

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश से संबंधित कार्यों का सम्पादन विभागाध्यक्ष के स्तर पर संस्कृति निदेशालय द्वारा किया जाता है। निदेशालय विभाग के अधीनस्थ शासकीय एवं अशासकीय संस्थाओं की देखरेख करता है और निर्देश देता है।

प्रदेश के विभिन्न अंचलों में समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिनमें देश के प्रतिष्ठित कलाकारों के साथ-साथ युवा नवोदित कलाकारों को भी अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का समुचित अवसर प्रदान किया जाता है। कला और संस्कृति को जनमानस से जोड़ने के लिये यह सांस्कृतिक उत्सव संस्कृति निदेशालय अपनी अधीनस्थ अकादमियों/संस्थानों के माध्यम से भी सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है।

निदेशालय द्वारा महापुरूषों की मूर्तियों का निर्माण, क्षेत्रीय सांस्कृतिक कलाओं के कलारूपों के अभिलेखीकरण के साथ-साथ छोटे एवं नवोदित कलाकारों को सांस्कृतिक मंच प्रदान करने एवं स्थापित करने का प्रयास भी किया जाता है। विभिन्न सांस्कृतिक महोत्सवों में जिला स्तर एवं अन्य स्वायत्तशासी संगठनों के सहयोग से सांस्कृतिक आयोजन किये जाते हैं।

प्रदेश की लोक संस्कृति की लुप्त होती विधाओं को गाँव-गाँव तक पहुँचाना, मंच प्रदान करना एवं इनसे संबंधित सर्वेक्षण/दस्तावेजीकरण आदि का महत्वपूर्ण कार्य भी निदेशालय द्वारा किया जाता है।

ऐसे उत्कृष्ट कलाकारों/महानुभावों जिन्होंने अपने व्यक्तिगत प्रयासों से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गौरव प्राप्त किया हो, को यश भारती सम्मान पुरस्कार तथा बेगम अख्तर पुरस्कार दिये जाने की भी योजना चलायी जा रही है।

कल्याणकारी योजनाओं के अन्तर्गत प्रदेश के 60 वर्ष के वृद्ध एवं विपन्न कलाकारों को जिन्होनें अपना पूरा जीवन कला एवं संस्कृति तथा साहित्य की अराधना में लगा दिया परन्तु वृद्धावस्था एवं खराब स्वास्थ्य के कारण अपनी जीविका-उपार्जन में असमर्थ हो गये हैं, उन्हें रू0 2000/- मासिक पेंशन दी जाती है तथा चिकित्सा सुविधा भी उपलब्ध कराये जाने की योजना भी प्रारम्भ की गयी है।

संस्कृति निदेशालय, उ0प्र0 लखनऊ में वर्तमान समय में स्वीकृत पद

क्रमांक	पदनाम	वेतन बैण्ड	पदों की संख्या
1	2	3	4
1.	निदेशक	संवर्गीय	01
2.	अपर निदेशक	संवर्गीय	01
2.	संयुक्त निदेशक	पी.बी.3 15600-39100	01
3.	उपनिदेशक	पी.बी.3 15600-39100	04
4.	वित्त नियन्त्रक	प्रादेशिक वित्त एवं लेखा संवर्ग से	01
5.	सहायक निदेशक	पी.बी.3 15600-39100	03
6.	सहायक निदेशक(प्रशा.)	पी.बी.2 9300-34800	01
7.	प्रोग्राम इंक्जीक्यूटिव	पी.बी.2 9300-34800	01
8.	प्रशासनिक अधिकारी	पी.बी.2 9300-34800	01
9.	वैयक्तिक सहायक ग्रेड-1	पी.बी.2 9300-34800	01
10.	वैयक्तिक सहायक ग्रेड-2	पी.बी.2 9300-34800	03
11.	आशुलिपिक	पी.बी.2 9300-34800	02
12.	लेखाकार	पी.बी.2 9300-34800	03
13.	सहायक लेखाकार	पी.बी.1 5200-20200	01
14.	ज्येष्ठ सम्परीक्षक	पी.बी.2 9300-34800	01
15.	सम्परीक्षक	पी.बी.1 5200-20200	02
16.	प्रधान सहायक	पी.बी.1 5200-20200	05
17.	वरिष्ठ सहायक(विधि)	पी.बी.1 5200-20200	01
18.	वरिष्ठ सहायक	पी.बी.1 5200-20200	01
19.	कनिष्ठ सहायक	पी.बी.1 5200-20200	07
20.	प्रोग्राम सहायक	पी.बी.2 9300-34800	02
21.	कनिष्ठ प्रोग्राम सहायक	पी.बी.1 5200-20200	02
22.	टेक्नीशियन	पी.बी.1 5200-20200	01
23.	लाइट टेक्नीशियन	पी.बी.1 5200-20200	01
24.	साउण्ड टेक्नीशियन	पी.बी.1 5200-20200	01
25.	वीडियो टेक्नीशियन	पी.बी.1 5200-20200	01
26.	ड्राइवर	पी.बी.1 5200-20200	05
27.	साइक्लोस्टाइल मशीन आप0	पी.बी.1 5200-20200	01
28.	चपरासी/अर्दली/प्रोग्राम अटेण्डेंट/चौकीदार-कम-कुक/ सफाई कर्मचारी/ प्रेक्षागृह परिचर	एस.1 4440-7440	18
			73

उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार

उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार का संक्षिप्त परिचय, उद्देश्य एवं गतिविधियाँ

उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार की स्थापना सन् 1949 में इलाहाबाद में सेन्ट्रल रिकार्ड आफिस के रूप में हुई थी। इसका मुख्य उद्देश्य उत्तर प्रदेश सरकार के विभिन्न विभागों, मण्डलीय एवं जिला स्तर के कार्यालयों एवं अर्द्धशासकीय संस्थाओं में उपलब्ध ऐतिहासिक एवं प्रशासनिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण अभिलेखों का स्थानान्तरण तथा स्थानान्तरित अभिलेखों का वर्गीकरण, पैकिंग एवं लेबलिंग तथा समुचित वैज्ञानिक संरक्षण करके सुव्यवस्थित ढंग से कार्टन बाक्स में रखना, शोध-छात्रों को सुविधा देना, शासन को आवश्यक सूचनाएँ उपलब्ध कराना, अभिलेखों की माइक्रोफिल्मिंग एवं फोटोकापी से सम्बन्धित सुविधाएँ और व्यक्तिगत अधिकारों से दुर्लभ पाण्डुलिपियों एवं प्रपत्रों को प्राप्त करना है। उक्त कार्यो की सम्पूर्ति हेतु समय-समय पर विभिन्न सरकारी कार्यालयों के अभिलेखों का सर्वेक्षण किया जाता है। उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार, शासकीय कार्यालयों, स्वायत्तशासी संस्थाओं एवं व्यक्तिगत अधिकार में रखे गये अभिलेखों को सुव्यवस्थित ढंग से रखने एवं उनके वैज्ञानिक संरक्षण के लिए परामर्श भी देता है। उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार में अभिलेखों का आधुनिकतम् वैज्ञानिक विधियों से संरक्षण हेतु सभी प्रकार के आधुनिक उपकरण उपलब्ध हैं।

मौखिक इतिहास योजना के अन्तर्गत विशिष्ट व्यक्तियों के संस्मरण टेप कराकर संरक्षित किये जाते हैं। राज्य के विभिन्न कार्यालयों के अभिलेख कक्षों में कार्यरत कर्मचारियों को दो सप्ताह का अभिलेख प्रशिक्षण भी दिया जाता है। इस अभिलेखागार द्वारा समय-समय पर संरक्षित अभिलेखों पर आधारित महत्वपूर्ण प्रकाशन भी किये जाते हैं। उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार में सन् 1803 से अभिलेख संरक्षित हैं तथा व्यक्तिगत अधिकार से प्राप्त सन् 1540 से अभिलेख संरक्षित हैं।

प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के एक महत्वपूर्ण अंग-अभिलेखीय धरोहर के प्रति जन-सामान्य एवं छात्र-छात्राओं में जागरूकता उत्पन्न करने के निमित्त समय-समय पर प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर अभिलेख प्रदर्शनियों एवं संगोष्ठियों आदि का आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त जनपद के विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं हेतु अभिलेख अभिरूचि कार्यक्रम के अन्तर्गत अभिलेखागार भ्रमण एवं अभिलेखों पर आधारित प्रश्नोत्तर कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

इस अभिलेखागार के अन्तर्गत तीन क्षेत्रीय अभिलेखागार - क्रमशः इलाहाबाद, वाराणसी, आगरा में स्थित हैं तथा एक पाण्डुलिपि पुस्तकालय भी इलाहाबाद में है।

वित्तीय वर्ष 2014-15 में उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार लखनऊ एवं उसकी अधीनस्थ इकाइयों के कार्यकलाप

1. **अभिलेखीय प्रबन्ध**

   सत्यापन - 9518 पत्रावलियों, 2236 वाल्यूम्स, 2020 व्यक्तिगत अभिलेख, 4149 पाण्डुलिपियाँ संस्कृत/फारसी।

   सुव्यवस्था - 9997 पत्रावलियां, 2450 वाल्यूम्स, 2020 व्यक्तिगत अभिलेख, 4354 पाण्डुलिपियाँ संस्कृत/फारसी।

2. **अभिलेखों का सन्दर्भ साधन** :- अभिलेख कक्ष के विभिन्न विभागों की 3033 पत्रावलियों का सूचीकरण किया गया।

3. **शोध छात्र** - देश-विदेश के 176 शोध छात्रों ने अभिलेखागार में उपलब्ध अभिलेखों का अध्ययन किया।

4. **खोज कार्य** - इस अवधि में अभिलेखों से सम्बन्धित 11 खोज कार्य किए गये।

5. **अभिलेखों का संरक्षण/मरम्मत :-**

		–	140810 शीट्स
1.	पृष्ठीकरण	–	26453 शीट्स
2.	शीट्स अलग करना	–	54533 शीट्स
3.	सिलाई	–	3367 शीट्स
4.	सैण्डविच	–	5197 शीट्स
5.	निशान	–	16293 शीट्स
6.	कटिंग	–	4091 शीट्स
7.	लामीनेशन	–	818 वाल्यूम्स
8.	वैक्यूम फ्यूमीगेशन	–	10093 शीट्स सफाई
9.	फुल पेस्टिंग	–	20571 शीट्स
10.	सफाई	–	3681 शीट्स
11.	साधारण मरम्मत	–	2811 पत्रावलियाँ/वाल्यूम्स
12.	फ्यूमीगेशन	–	65 शीट्स
13.	अमोनिया विअम्लीकरण		

6. **पुस्तकालय :-**

1.	शोध छात्रों को निर्गत	–	648 पुस्तकें
2.	सुव्यवस्था	–	2127 पुस्तकें
3.	सत्यापन	–	1899 पुस्तकें
4.	पुस्तकालय के शोध छात्र	–	98 छात्र

7. **अभिलेख प्रदर्शनी :-**

- क्षेत्रीय अभिलेखागार, वाराणसी द्वारा माह अगस्त में मुंशी प्रेमचंद, लमही महोत्सव 2014 के अवसर पर ललित कला विभाग, माहात्मा गाँधी, काशी विद्यापीठ, वाराणसी में मुंशी प्रेमचंद से जुडे अभिलेखों एवं चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
- राजकीय पाण्डुलिपि पुस्तकालय, इलाहाबाद द्वारा दिनांक 30 अगस्त, 2014 को हमीदिया गर्ल्स डिग्री कालेज, इलाहाबाद में पाण्डुलिपि कार्यशाला एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
- उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार, लखनऊ द्वारा दिनांक 19 दिसम्बर, 2014 को काकोरी शहीद स्मृति स्थल, बाज नगर, हरदोई रोड, लखनऊ में अभिलेख प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
- क्षेत्रीय अभिलेखागार, आगरा द्वारा दिनांक 19 से 23 दिसम्बर, 2014 तक 'प्रथम विश्व युद्ध में उत्तर प्रदेश के योगदान' विषयक अभिलेख प्रदर्शनी का आयोजन आगरा कालेज, आगरा में किया गया।
- राजकीय पाण्डुलिपि पुस्तकालय, इलाहाबाद द्वारा दिनांक 20 दिसम्बर, 2014 को जगत तारन डिग्री कालेज, इलाहाबाद में पाण्डुलिपि की कार्यशाला एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

8. **मौखिक इतिहास योजना** :- इस योजना के अन्तर्गत निम्न स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के संस्मरण रिकार्ड कर संरक्षित किया गया।

- श्री बैजनाथ सिंह, गोरखपुर।
- श्री हेमन्त कुमार, मेरठ।
- श्री महावीर सिंह, बुलन्दशहर।
- श्री राजकुमार मित्तल, इलाहाबाद।

9. **व्यक्तिगत अभिलेख :-**

- उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार द्वारा माह अगस्त, 2014 में ऐतिहासिक महत्व के 130 पुस्तकों, प्रपत्रों को प्रोफेसर हरिशंकर श्रीवास्तव, गोरखपुर से स्थायी संरक्षण के लिए दान स्वरूप प्राप्त किया गया।
- क्षेत्रीय अभिलेखागार, वाराणसी द्वारा माह अगस्त, 2014 में प्रो0 दिनेश चन्द्र चौधरी, ठठेरी बाजार, वाराणसी से ऐतिहासिक महत्व के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से जुडे अभिलेखों की प्रतिलिपि दान स्वरूप प्राप्त किया गया।

10. **अभिलेख कक्ष निरीक्षण :-**

- उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार द्वारा उ0प्र0 अभिलेख नीति 1990 के अनुपालन के क्रम में जिलाधिकारी कार्यालय मेरठ एवं बुलन्दशहर के अभिलेख कक्षों का निरीक्षण किया गया।
- क्षेत्रीय अभिलेखागार, इलाहाबाद द्वारा जिलाधिकारी हमीरपुर से स्थानान्तरण हेतु चिन्हित अभिलेखों की सूची से मिलान कराया गया।

11. **रिप्रोग्राफी :-**

- पूर्व में तैयार 49 रोल माइक्रोफिल्म की भौतिक एवं रासायनिक जाँच की गयी।
- 11800 एक्सपोजर्स की माइक्रोफिल्म तैयार की गयी।

उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार, लखनऊ तथा इसकी इकाइयों के लिए स्वीकृत पदों का विवरण निम्नानुसार है:-

उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार, लखनऊ के अन्तर्गत वर्तमान में निम्नलिखित पद स्वीकृत है

क्र0 सं0	पदनाम	वेतनमान	स्वीकृत पदों की संख्या
1	निदेशक	15600-39100	1
2	उपनिदेशक	15600-39100	1
3	सहायक निदेशक एवं प्रशासकीय अधिकारी	9300-34800	1
4	सहायक निदेशक (संरक्षण)	9300-34800	1
5	प्राविधिक सहायक (इतिहास)	9300-34800	6
6	प्राविधिक सहायक (फारसी)	9300-34800	1
7	प्राविधिक सहायक (संरक्षण)	9300-34800	1
8	प्रकाशन सहायक	9300-34800	1
9	फोटो अधिकारी	9300-34800	1
10	लेखाकार	9300-34800	2
11	फोटोग्राफर	9300-34800	1
12	कनिष्ठ प्राविधिक सहायक	5200-20200	3
13	क्षेत्रीय सहायक	5200-20200	1
14	पुस्तकालयाध्यक्ष	5200-20200	1
15	फोरमैन	5200-20200	1
16	प्रधान सहायक	9300-34800	1
17	आशुलिपिक	5200-20200	2
18	वरिष्ठ सहायक	5200-20200	2
19	उर्दू अनुवादक सह वरिष्ठ लिपिक	5200-20200	1

		5200-20200	6
20	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	1
21	सहायक लेखाकार	5200-20200	1
22	माइक्रोफिल्म आपरेटर	5200-20200	1
23	वाहन चालक	5200-20200	1
24	ज्येष्ठ मेण्डर	5200-20200	12
25	मेण्डर	5200-20200	1
26	बिजली मिस्त्री	5200-20200	1
27	बण्डल लिफ्टर	5200-20200	1
28	बुक लिफ्टर	5200-20200	1
29	प्रयोगशाला परिचर	5200-20200	1
30	कारपेन्टर	5200-20200	1
31	फर्राश	5200-20200	6
32	चपरासी	5200-20200	2
33	माली	5200-20200	3
34	चौकीदार	5200-20200	1
35	चौकीदार-कम-माली	5200-20200	2
36	सफाई कर्मी	5200-20200	1
37	वाटरमैन-कम-साइकिल स्टैण्ड परिचर	5200-20200	1
			72

<u>क्षेत्रीय अभिलेखागार, आगरा</u>

क्र0 सं0	पदनाम	वेतनमान	स्वीकृत पदों की संख्या
1	क्षेत्रीय अभिलेख अधिकारी	9300-34800	1
2	कनिष्ठ प्राविधिक सहायक	5200-20200	1
3	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	1
4	मेण्डर	5200-20200	2
5	चपरासी	5200-20200	1
6	चौकीदार	5200-20200	1
7	सफाई कर्मी	5200-20200	1
			08

<u>क्षेत्रीय अभिलेखागार, इलाहाबाद</u>

क्र0 सं0	पदनाम	वेतनमान	स्वीकृत पदों की संख्या
1	क्षेत्रीय अभिलेख अधिकारी	9300-34800	1
2	प्राविधिक सहायक (इतिहास)	9300-34800	1
3	प्राविधिक सहायक (फारसी)	9300-34800	1
4	वरिष्ठ सहायक	5200-20200	1
5	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	2
6	मेण्डर	5200-20200	3
7	बण्डल लिफ्टर	5200-20200	1
8	चपरासी	5200-20200	1
9	चौकीदार	5200-20200	1
10	सफाई कर्मी	5200-20200	1
			13

क्षेत्रीय अभिलेखागार, वाराणसी

क्र0 सं0	पदनाम	वेतनमान	स्वीकृत पदों की संख्या
1	क्षेत्रीय अभिलेख अधिकारी	9300-34800	1
2	प्राविधिक सहायक (इतिहास)	9300-34800	1
3	वरिष्ठ सहायक	5200-20200	1
4	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	1
5	मेण्डर	5200-20200	2
6	चपरासी-कम-बण्डल लिफ्टर	5200-20200	1
7	सफाई कर्मी-कम-चौकीदार	5200-20200	1
			08

पाण्डुलिपि पुस्तकालय, इलाहाबाद

क्र0 सं0	पदनाम	वेतनमान	स्वीकृत पदों की संख्या
1	पाण्डुलिपि अधिकारी	9300-34800	1
2	प्राविधिक सहायक (संस्कृत)	9300-34800	1
3	प्राविधिक सहायक (फारसी)	9300-34800	1
4	वरिष्ठ सहायक	5200-20200	1
5	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	1
6	मेण्डर	5200-20200	2
7	चपरासी	5200-20200	1
8	चौकीदार	5200-20200	1
9	सफाई कर्मी	5200-20200	1
			10

वर्ष 2015-16 में कराये जाने वाले कार्यों का विवरण

अभिलेख कक्ष निरीक्षण

उ0प्र0 अभिलेख नीति सन्-1990 के अनुपालन में विभिन्न जिलाधिकारी कार्यालयों के अभिलेख कक्षों एवं अन्य शासकीय कार्यालयों के अभिलेख कक्षों का निरीक्षण किया जाना प्रस्तावित है।

अभिलेख स्थानान्तरण

प्रशासनिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण विभिन्न शासकीय कार्यालयों के अभिलेख कक्षों से स्थायी संरक्षण के निमित्त अभिलेख स्थानान्तरित किया जाना प्रस्तावित है।

अभिलेख प्रदर्शनी

वर्ष 2015-16 में अभिलेखीय जनजागरूकता उत्पन्न करने के लिए भारत में स्वतंत्रता आन्दोलन, महिला उद्धार एवं काकोरी के शहीद आदि विषयों पर अभिलेख प्रदर्शनी का आयोजन प्रस्तावित है।

अभिलेख अभिरूचि कार्यक्रम

वर्ष 2015-16 में लखनऊ जनपद के विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं में प्रदेश की समृद्ध अभिलेखीय धरोहर के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करने के लिए अभिलेखागार के भ्रमण एवं प्रश्नोत्तर कार्यक्रम का आयोजन प्रस्तावित है।

सेमिनार/संगोष्ठी

अभिलेखों के महत्व एंव उनके सम्यक् संरक्षण विषय पर सेमिनार एवं संगोष्ठी का आयोजन प्रस्तावित है।

अभिलेख संरक्षण

व्यक्तिगत अधिकार में संरक्षित ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण एवं दुर्लभ अभिलेख/ पाण्डुलिपियों का सर्वेक्षण कर उनका सूचीकरण किया जाना प्रस्तावित है।

मौखिक इतिहास योजना

प्रदेश के जीवित स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का संस्मरण टेप कर संरक्षित किया जाना प्रस्तावित है।

डिजिटाइजेशन

द्वितीय चरण में अवध जनरल विभाग, होम पुलिस एवं अन्य विभागों की पत्रावलियों का डिजिटाइजेशन कार्य किया जाना प्रस्तावित है।

उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार की गतिविधियाँ

- उत्तर प्रदेश सरकार के विभिन्न विभागों, मण्डलीय एवं जिला स्तर के कार्यालयों एवं अर्द्धशासकीय संस्थाओं में उपलब्ध ऐतिहासिक एवं प्रशासनिक दृष्टिकोण से **महत्वपूर्ण अभिलेखों का स्थानान्तरण** तथा स्थानान्तरित अभिलेखों का वर्गीकरण, पैकिंग एवं लेबलिंग तथा समुचित वैज्ञानिक संरक्षण करके सुव्यवस्थित ढंग से कार्टन बाक्स में रखना, **शोध-छात्रों को सुविधा देना,** शासन को आवश्यक सूचनाऐं उपलब्ध कराना, अभिलेखों की माइक्रोफिल्मिंग एवं फोटोकापी से सम्बन्धित सुविधाऐं और व्यक्तिगत अधिकारों से दुर्लभ पाण्डुलिपियों एवं प्रपत्रों को प्राप्त कराना।
- उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार, शासकीय कार्यालयों, स्वायत्तशासी संस्थाओं एवं व्यक्तिगत अधिकार में रखे गये अभिलेखों को सुव्यवस्थित ढंग से रखने एवं उनके **वैज्ञानिक संरक्षण के लिए परामर्श देना।**
- मौखिक इतिहास योजना के अन्तर्गत **विशिष्ट व्यक्तियों के संस्मरण टेप कराकर** संरक्षित करना।
- राज्य के विभिन्न कार्यालयों के **अभिलेख कक्षों में कार्यरत कर्मचारियों को दो सप्ताह का अभिलेख प्रशिक्षण** दिया जाना।
- अभिलेखागार द्वारा समय-समय पर **संरक्षित अभिलेखों पर आधारित महत्वपूर्ण प्रकाशन** भी करना।
- प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के एक महत्वपूर्ण अंग-अभिलेखीय धरोहर के प्रति जन-सामान्य एवं छात्र-छात्राओं में जागरूकता उत्पन्न करने के निमित्त समय-समय पर प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर **अभिलेख प्रदर्शनियों एवं संगोष्ठियों आदि का आयोजन** करना।

पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति योजना एवं क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र

प्राचीन काल से अब तक भारतीय सभ्यता के क्षितिज पर अभ्युदित होने वाली मानव संस्कृति के इतिहास में पुरावशेषों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ये पुरावशेष अतीत के स्तम्भ तथा उससे मुखरित होने वाली संस्कृति के आधारपीठ होते हैं, इसीलिए इनकी चोरी एवं तस्करी को रोकने के लिए भारत सरकार द्वारा राष्ट्रहित में पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम-1972 पारित कर इसे 05 अप्रैल, 1976 से पूरे देश में लागू किया गया। पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति योजना अधिनियम-1972 की अधिसूचना के अनुसार 100 वर्ष अथवा 100 वर्ष से अधिक निम्न श्रेणियों के प्राचीन पुरावशेषों का पंजीकरण किया जाता है।

1. मूर्ति (पाषाण, धातु, हड्डी, हाथी दाँत, काष्ठ आदि) तथा टेराकोटा।
2. चित्र (कागज, ताड़पत्र, चमड़ा, कपड़ा आदि पर बने) तथा थंग एवं मिनियेचर पेन्टिंग।
3. हस्तलिखित पाण्डुलिपि (सौन्दर्यात्मक एवं कलात्मक) कागज, भोजपत्र, ताड़पत्र आदि।
4. भारत सरकार द्वारा समय-समय पर अधिसूचित अन्य मूर्ति आदि।

उक्त अधिनियम के कार्यान्वयन हेतु उत्तर प्रदेश सरकार के अन्तर्गत तत्कालीन सांस्कृतिक कार्य एवं वैज्ञानिक अनुसंधान विभाग तथा भारत सरकार के मिनिस्ट्री ऑफ एजूकेशन सोशल वेलफेयर एण्ड कल्चर द्वारा समन्वय कर शासन द्वारा संस्कृति विभाग के अन्तर्गत रजिस्ट्रीकरण कार्यालयों की स्थापना की गयी है। इन कार्यालयों के संचालन तथा पुरावशेषों के पंजीकरण हेतु प्रत्येक कार्यालय में स्टाफ की व्यवस्था निम्नवत् है :-

पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति कार्यालय एवं क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, लखनऊ

क्र0सं0	पदनाम	वेतनमान	पदों की संख्या
1	2	3	4
1.	रजिस्ट्रीकरण अधिकारी	15600-39100	01
2.	अवर वर्ग लिपिक	5200-20200	01
3.	परिचर	4440-7440	02

पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति कार्यालय एवं क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद

क्र0सं0	पदनाम	वेतनमान	पदों की संख्या
1	2	3	4
1.	रजिस्ट्रीकरण अधिकारी	15600-39100	01
2.	अवर वर्ग लिपिक	5200-20200	01
3.	परिचर	4440-7440	02

पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति कार्यालय एवं क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, झाँसी

क्र0सं0	पदनाम	वेतनमान	पदों की संख्या
1	2	3	4
1.	रजिस्ट्रीकरण अधिकारी	15600-39100	01
2.	अवर वर्ग लिपिक	5200-20200	01
3.	परिचर	4440-7440	02

पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति कार्यालय एवं क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, आगरा

क्र0सं0	पदनाम	वेतनमान	पदों की संख्या
1	2	3	4
1.	रजिस्ट्रीकरण अधिकारी	15600-39100	01
2.	अवर वर्ग लिपिक	5200-20200	01
3.	परिचर	4400-7440	02

पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति कार्यालय एवं क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, बरेली

क्र0सं0	पदनाम	वेतनमान	पदों की संख्या
1	2	3	4
1.	रजिस्ट्रीकरण अधिकारी	15600-39100	01
2.	अवर वर्ग लिपिक	5200-20200	01
3.	परिचर	4400-7440	02

पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति कार्यालय एवं क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, वाराणसी

क्र0सं0	पदनाम	वेतनमान	पदों की संख्या
1	2	3	4
1.	रजिस्ट्रीकरण अधिकारी	15600-39100	01
2.	अवर वर्ग लिपिक	5200-20200	01
3.	परिचर	4400-7440	02

पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति कार्यालय एवं क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, फैजाबाद

क्र0सं0	पदनाम	वेतनमान	पदों की संख्या
1	2	3	4
1.	रजिस्ट्रीकरण अधिकारी	15600-39100	01
2.	अवर वर्ग लिपिक	5200-20200	01
3.	परिचर	4400-7440	02

पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति कार्यालय एवं क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, गोरखपुर

क्र0सं0	पदनाम	वेतनमान	पदों की संख्या
1	2	3	4
1.	रजिस्ट्रीकरण अधिकारी	15600-39100	01
2.	अवर वर्ग लिपिक	5200-20200	01
3.	परिचर	4400-7440	02

पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति कार्यालय (मुख्यालय)

क्र0सं0	पदनाम	वेतनमान	पदों की संख्या
1	2	3	4
1.	अवर लिपिक/आशुलिपिक	5200-20200	01
2.	परिचर	4400-7440	02

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों द्वारा वर्ष 2015-16 में प्रस्तावित सांस्कृतिक कार्यक्रम

1. मुंशी प्रेमचन्द्र लमही महोत्सव
2. सुबह-ए-बनारस का नियमित आयोजन
3. बुढ़वा मंगल

4. शास्त्रीय गायन/वादन/नृत्य की कार्यशालाएँ
5. गुलाब बाड़ी
6. सुगम संगीत संध्या

भातखण्डे संगीत संस्थान, समविश्वविद्यालय, लखनऊ

शास्त्रीय संगीत की विभिन्न विधाओं में अपनी शिक्षण पद्धति एवं विशिष्ट पाठ्यक्रम के लिए सुविख्यात इस महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 1926 में मैरिस कालेज के नाम से हुई। बाद में इसका नाम बदलकर भातखण्डे हिन्दुस्तानी संगीत महाविद्यालय कर दिया गया। राज्य सरकार द्वारा दिनांक 26 मार्च, 1966 को इसे अपने नियंत्रण में लिया गया और विश्वविद्यालय घोषित होने तक एक शासकीय संस्था के रूप में गतिशील रहा।

भारत सरकार द्वारा दिनांक 24 अक्टूबर, 2000 को अपनी अधिसूचना में इसे समविश्वविद्यालय घोषित कर देश में इस संस्थान को संगीत शिक्षा के क्षेत्र में अपनी तरह का पहला विश्वविद्यालय होने का गौरव प्रदान किया गया है। संगीत शिक्षा के क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित करने वाले इस महाविद्यालय को विश्वविद्यालय का स्तर प्रदान कर दिये जाने से संगीत के विद्यार्थियों को प्रदेश में ही मान्यता प्राप्त उच्च स्तरीय शिक्षा ग्रहण करने का अवसर उपलब्ध हो गया है।

संगीत जैसी प्रदर्शन प्रधान कलाओं को सीखने के लिए कम आयु वर्ग के विद्यार्थियों की उपयुक्तता को ध्यान में रखकर महाविद्यालय में पहले संचालित पाठ्यक्रमों की कक्षाओं को संस्थान में भी यथावत बनाये रखे जाने का निर्णय लिया गया है। ताकि जो विद्यार्थी बी0पी0ए0 व एम0पी0ए0 के लिए निर्धारित अर्हताएँ पूर्ण न करते हों, उन्हें भी संगीत शिक्षा प्राप्त करने मे कोई कठिनाई उत्पन्न न हो।

संस्थान द्वारा शास्त्रीय (गायन,ताल-वाद्य,स्वर-वाद्य,नृत्य) संगीत की चारों विद्याओं में बी0पी0ए0, एम0पी0ए0 एवं पी0 एच0 डी0 की डिग्री/उपाधि तथा प्रवेशिका, परिचय, प्रबुद्ध, पारंगत एवं उपशास्त्रीय गायन (ध्रुपद-धमार, होरी, ठुमरी, दादरा, संवादिनी, की-बोर्ड, सुगम संगीत) में सार्टिफिकेट डिप्लोमा तथा लोकनृत्य में तीन वर्षीय पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहा है। संगीत के शिक्षण कार्य के साथ-साथ पूर्व में संचालित वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम संगीत अभिरूचि की विशिष्ट कार्यशाला एवं संगीत सध्या का आयोजन कर रहा है।

संस्थान द्वारा सत्र 2001-02 से विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों के साथ-साथ महाविद्यालय के सार्टिफिकेट/डिप्लोमा की वार्षिक परीक्षाओं का स्वतन्त्र रूप से संचालन किया गया जा रहा है।

शिक्षण सत्र 2014-15 में संस्थान में प्रवेशिका से पारंगत कक्षा तक सार्टिफिकेट/डिप्लोमा पाठ्यक्रम में कुल 1350 तथा विश्वविद्यालय अनुभाग में कुल 241 अर्थात् शास्त्रीय संगीत की चारों विद्याओं (गायन, ताल-वाद्य, स्वर-वाद्य, नृत्य एवं संगीत शास्त्र) में कुल 1591 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं।

भातखण्डे संगीत संस्थान समविश्वविद्यालय, लखनऊ
2015-16 के सांस्कृतिक कार्यक्रम

कार्यक्रम का नाम	प्रस्तुति का माह	प्रस्तुति स्थल
1. स्थापना दिवस	18 अप्रैल, 2015	राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह
2. कार्याशाला(गायन,वादन व नृत्य)	16 मई, 2015 से 15 जून, 2015 तक	आचार्य रातनजनक सभागार
3. जन्माष्टमी	5 सितम्बर, 2015	आचार्य रातनजनकर सभागार
4. भातखण्डे जयन्ती समारोह,2015	10,11 व 12 सितम्बर, 2015	श्री संत गाडगे, प्रेक्षागृह
5. विश्व संगीत दिवस	01 अक्टूबर, 2014	राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह
6. कार्यशाला	01.12.2015 से 20.12.2015 तक	आचार्य रातनजनक सभागार
8. चतुर्थ दीक्षांत समारोह-2015	अक्टूबर, 2015	रवीन्द्रालय प्रेक्षागृह
9. सरस्वती पूजा	फरवरी,2016	आचार्य रातनजनक सभागार
10. संगीत प्रतियोगिता	फरवरी,2016	आचार्य रातनजनक सभागार
11. होलिकोत्सव	मार्च, 2016	रवीन्द्रालय प्रेक्षागृह

उक्त कार्यक्रमों का आयोजन वित्तीय वर्ष 2015-16 के लिये प्रस्तावित है।

राज्य ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश

राज्य ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश की स्थापना 08 फरवरी, 1962 को उत्तर प्रदेश शासन के संस्कृति विभाग की पूर्णतः वित्त पोषित स्वायत्तशासी इकाई के रूप में हुई थी । अकादमी कला एवं कलाकारों की प्रोन्नति एवं प्रोत्साहन के ध्येय की ओर निरन्तर अग्रसर होती हुई कला जगत में उल्लेखनीय कार्य कर रही है।

अकादमी छतरमंजिल और हाईकोर्ट (लखनऊ बेंच) के मध्य ललित कला अकादमी मार्ग पर लाल बारादरी भवन में स्थित है। यह भवन उ0प्र0 पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित एक पुरातात्विक इमारत है। इसका निर्माण 1778-1814 के बीच हुआ ।

स्वतंत्रता के पश्चात् सर्वप्रथम इस भवन में राज्य संग्रहालय स्थापित हुआ। राज्य संग्रहालय का अपने भवन में स्थानान्तरण होने के पश्चात् वर्ष 1962 में इस भवन में राज्य ललित कला अकादमी की स्थापना हुई ।

अकादमी द्वारा अब तक 31 वार्षिक कला प्रदर्शनियाँ, 13 अखिल भारतीय कला प्रदर्शनियाँ, 12 अखिल भारतीय छायाचित्र कला प्रदर्शनियाँ, 40 विनिमय कला प्रदर्शनियाँ, 60 आमंत्रित कला प्रदर्शनियाँ, 34 कला शिविरों तथा डा0 राधा कमल मुखर्जी व्याख्यानमाला के अन्तर्गत देश के प्रमुख कला विद्वानों को आमंत्रित कर व्याख्यान का आयोजन एवं अन्य दृश्य कला से सम्बन्धित गतिविधियाँ यथा सामान्य कला प्रदर्शनियाँ, व्याख्यान प्रदर्शन, विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनियाँ, कला फिल्मों एवं क्षेत्रीय कला प्रदर्शनियों तथा कार्यशालाओं, कला प्रतियोगिताओं का आयोजन अपने सीमित संसाधनों से किया जा चुका है।

अप्रैल, 2014

1. मासिक श्रृंखला के अन्तर्गत स्थाई कला संग्रह से चयनित समकालीन कलाकृतियों की प्रदर्शनी, ललित कला वीथिका, लाल बारादरी भवन में 23 से 29 अप्रैल, 2014 तक कार्य दिवसों में 11.00 से सायं 5.00 बजे तक।

2. वीथिका आरक्षण के अन्तर्गत श्री दीपक नागजी मेर, मुम्बई द्वारा सामूहिक कला प्रदर्शनी ललित कला वीथिका, लाल बारादरी भवन में 01से 04 अप्रैल, 2014 तक 11.00 से सायं 6.00 बजे तक।

3. वीथिका आरक्षण के अन्तर्गत लखनऊ कैमरा क्लब द्वारा फोटो प्रदर्शनी ललित कला वीथिका, लाल बारादरी भवन में 05से 07 अप्रैल, 2014 तक 11.00 से सायं 6.00 बजे तक ।
4. वीथिका आरक्षण के अन्तर्गत साजिद प्रेमी, भोपाल द्वारा देश के कलाकारों की सामूहिक कला प्रदर्शनी ललित कला वीथिका, लाल बारादरी भवन में 22 से 25 अप्रैल, 2014 तक नित्य 12.00 से सायं 7.00 बजे तक।

मई, 2014

1. मासिक श्रृंखला के अन्तर्गत स्थाई कला संग्रह से चयनित समकालीन कलाकृतियों की प्रदर्शनी, ललित कला वीथिका, लाल बारादरी भवन में 01 से 31 मई, 2014 तक कार्य दिवसो में 11.00 से सायं 5.00 बजे तक।
2. अकादमी द्वारा संचालित रचनात्मक कला केन्द्र के प्रशिक्षणार्थियों की कृतियों की प्रदर्शनी, ललित कला वीथिका, लाल बारादरी भवन में 24 से 30 मई, 2014 तक 12.00 से सायं 7.00 बजे तक।

वीथिका आरक्षण

1. श्री शरद पाण्डे के ''सिनेमा-2'' पार्ट से कृतियों की प्रदर्शनी अकादमी वीथिका, लाल बारादरी भवन में 03 से 06 मई, 2014 तक अपराह्न 03.00 से सायं 7.00 बजे तक।
2. यू0पी0 वर्किंग आर्टिस्ट एसोशियेशन द्वारा सामूहिक कला प्रदर्शनी अकादमी वीथिका, लाल बारादरी भवन में 05 से 8 मई, 2014 तक नित्य 11.00 से सायं 7.00 बजे तक

3. आकांक्षा आर्ट्स द्वारा अपने प्रशिक्षणार्थियों की कृतियों की प्रदर्शनी, अकादमी वीथिका, लाल बारादरी भवन में 07 से 10 मई, 2014 तक नित्य 11.00 से सायं 7.00 बजे तक
4. फोरम फार लॉ एण्ड जस्टिस के तत्वावधान में अकादमी श्रोतागार में स्वागत समारोह 09 मई, 2014 को सायं 4.00 बजे।
5. लखनऊ कैमरा क्लब द्वारा श्रोतागार आरक्षण के अन्तर्गत फोटो वर्कशाप 18 मई, 2014 की अपराह्न 2.00 बजे से।

जून, 2014

1. स्ववित्तपोषित योजना के अन्तर्गत प्रदेश के 25 जिलों में ग्रीष्मकालीन कार्यशाला का आयोजन स्थानीय संयोजकों के संयोजन में 15 जून से 14 जुलाई, 2014 तक ।
2. वीथिका आरक्षण के अन्तर्गत लखनऊ कैमरा क्लब द्वारा लखनऊ अन्तर्राष्ट्रीय फोटो प्रदर्शनी-2014 दिनांक 13 से 15 जून, 2014 तक नित्य 2.00 से सायं 6.00 बजे तक।

जुलाई, 2014

1. अकादमी द्वारा संचालित षटमासिक कार्यशाला (01 जनवरी से 30 जून, 2014) एवं ग्रीष्मकालीन कार्यशाला (01 से 30 जून, 2014) में सृजित कलाकृतियों की प्रदर्शनी ललित कला वीथिका, लाल बारादरी भवन में 07 से 10 जुलाई, 2014 तक नित्य 11.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक ।

अगस्त, 2014

1. विश्व फोटोग्राफी दिवस 19 अगस्त, 2014 को ट्रैवल फोटोग्राफी पर श्री जे0पी0 शर्मा का व्याख्यान, अकादमी संग्रह में उपलब्ध छायाचित्रों की कला प्रदर्शनी एवं 19 से 22 अगस्त, 2014 तक नित्य
11.00 से सायं 6.00 बजे तक ।

2. मासिक श्रृंखला के अन्तर्गत 32 समकालीन कलाकृतियों की प्रदर्शनी ललित कला वीथिका, लाल बारादरी भवन में 08 से 30 अगस्त, 2014 तक कार्य दिवसों में 11.00 से सायं 5.00 बजे तक।

सितम्बर, 2014

1. शिक्षक दिवस 05 सितम्बर, 2014 को कला गुरुओं की कृतियों की प्रदर्शनी, ललित कला वीथिका, लाल बारादरी भवन में 05 से 15 सितम्बर, 2014 तक नित्य 11.00 से सायं 6. 00 बजे तक।

अक्टूबर, 2014

मासिक श्रृंखला के अन्तर्गत अकादमी के स्थाई कला संग्रह से चयनित 22 कलाकृतियों की ''वसुधा'' शीर्षक से कला प्रदर्शनी, ललित कला वीथिका, लाल बारादरी भवन में 10 से 30 अक्टूबर, 2014 तक कार्य दिवसों में 11.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक ।

2. वीथिका आरक्षण के अन्तर्गत सुश्री अंजली त्रिपाठी की कृतियों की एकल कला प्रदर्शनी ललित कला वीथिका, लाल बारादरी भवन में 29 अक्टूबर से 01 नवम्बर, 2014 तक नित्य 11.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक।

नवम्बर, 2014

1. विक्रय केन्द्र योजना के अन्तर्गत प्राप्त कृतियों की प्रदर्शनी भूतल वीथिका में 27 नवम्बर, 2014 से 26 फरवरी, 2015 तक नित्य 11.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक कार्य दिवसों में ।
2. वीथिका आरक्षण के अन्तर्गत गुजरात के कलाकार श्री नाथूभाई मकवाना के नेतृत्व में भारत के विभिन्न क्षेत्रों के 30 कलाकारों की कृतियों की सामूहिक कला प्रदर्शनी 26 से 30 नवम्बर, 2014 तक नित्य 11.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक ।

दिसम्बर, 2014

1. 31वीं वार्षिक कला प्रदर्शनी तथा 12वीं अखिल भारतीय छायाचित्र कला प्रदर्शनी का उद्घाटन एवं पुरस्कार वितरण समारोह 08 दिसम्बर, 2014 को सायं 5.00 बजे। प्रदर्शनी 09 से 20 दिसम्बर, 2014 तक नित्य 11.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक ललित कला वीथिका, लाल वारादरी भवन में ।
2. सम्मान, कला प्रदर्शन एवं व्याख्यान योजना के अन्तर्गत श्री आलोक कुमार भावसार, भोपाल द्वारा पोट्रेट सृजन का सजीव प्रदर्शन एवं श्री राजेश कुमार व्यास- जयपुर द्वारा **"समकालीन कला के सरोकार"** विषय पर व्याख्यान दिनांक 04 दिसम्बर, 2014 को डा0 शकुन्तला मिश्र राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में ।
3. अकादमी संग्रह से चयनित प्रख्यात कलाकारों की 40 कृतियों की प्रदर्शनी डा0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ में 04 से 06 दिसम्बर, 2014 तक नित्य 11.00 से अपराह्न 2.00 बजे तक ।
4. विक्रय केन्द्र योजना के अन्तर्गत भूतल की वीथिका में कलाकृतियों की बिक्री एवं प्रदर्शनी कार्य दिवसों में 01 से 31 दिसम्बर, 2014 तक 11.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक ।

जनवरी, 2015

1. धातु मूर्तिकार शिविर एवं षट्मासिक कार्यशाला में सृजित कलाकृतियों की प्रदर्शनी, ललित कला वीथिका, लाल बारादरी भवन में 06 से 09 जनवरी, 2015 तक नित्य 11.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक।

2. अन्तर्राज्य विनिमय कला प्रदर्शनी योजना के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश के कलाकारों की कृतियों की प्रदर्शनी राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर के सहयोग से 05 से 09 जनवरी, 2015 तक नित्य 11.00 बजे से सायं 7.00 बजे तक ।

3. क्षेत्रीय कला प्रदर्शनी का आयोजन आगरा कालेज, आगरा में 29 से 31 जनवरी, 2015 तक प्रातः 9.00 से अपराह्न 3.00 बजे तक ।

4. वीथिका आरक्षण के अन्तर्गत श्री शैलेश हरित की कृतियों की एकल कला प्रदर्शनी, ललित कला वीथिका, लाल बारादरी भवन में 24 से 27 जनवरी, 2015 तक नित्य 11.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक।

5. श्री अजय रघुवंशी, बरेली द्वारा सामूहिक कला प्रदर्शनी, ललित कला वीथिका, लाल बारादरी भवन में 28 से 31 जनवरी, 2015 तक नित्य 11.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक ।

6. विक्रय केन्द्र योजना के अन्तर्गत भूतल वीथिका में विक्रय कला प्रदर्शनी 01 से 31 जनवरी, 2015 तक कार्य दिवसों में प्रातः 11.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक ।

फरवरी एवं मार्च, 2015 में प्रस्तावित गतिविधियों की सूचना -

फरवरी, 2015

1. मासिक श्रृंखला के अन्तर्गत अकादमी के स्थाई कला संग्रह से 44 कलाकृतियों की प्रदर्शनी, ललित कला वीथिका, लाल बारादरी भवन में दिनांक 16 से 28 फरवरी, 2015 तक कार्य दिवसों में 11.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक ।

2. विक्रय केन्द्र योजना के अन्तर्गत भूतल वीथिका में विक्रय कला प्रदर्शनी 01 से 26 फरवरी, 2015 तक नित्य कार्य दिवसों में 11.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक ।

3. वीथिका आरक्षण के अन्तर्गत सुश्री शिवली खान, बरेली द्वारा सामूहिक कला प्रदर्शनी, ललित कला वीथिका, लाल बारादरी भवन में 03 से 16 फरवरी, 2015 तक नित्य 11.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक।

4. श्री सुनील सिन्हाल, फैजाबाद द्वारा सामूहिक कला प्रदर्शनी, ललित कला वीथिका, लाल बारादरी भवन में 10 से 13 फरवरी, 2015 तक नित्य 11.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक

5. सुश्री मंजू प्रसाद द्वारा एकल चित्रों की प्रदर्शनी ललित कला वीथिका, लाल बारादरी भवन में 24 से 27 फरवरी, 2015 तक नित्य 11.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक।

6. 32वीं वार्षिक कला प्रदर्शनी हेतु कलाकारों से प्रथम चरण में कृतियों के छायाचित्रों को आमंत्रित करना ।

7. 13वीं अखिल भारतीय कला छायाचित्र प्रदर्शनी हेतु छायाकारों से पोर्टफोलियो को आमंत्रित करना ।

8. प्रदेश के किसी महाविद्यालय में वरिष्ठ कलाकार को कला प्रदर्शन एवं सम्मान ।

मार्च, 2015

1. कलाकार शिविर का आयोजन ।

2. आमंत्रित कला प्रदर्शनी

3. प्रदेश के किसी महाविद्यालय में कलाकार का कला प्रदर्शन एवं सम्मान ।

4. 32वीं वार्षिक कला प्रदर्शनी का पुरस्कार वितरण समारोह एवं उद्घाटन ।

5. 13वीं अखिल भारतीय कला छायाचित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन एवं पुरस्कार वितरण समारोह ।

6. डा0 राधाकमल मुखर्जी स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत किसी कला इतिहासकार का व्याख्यान एवं डा0 राधाकमल मुखर्जी द्वारा अकादमी को प्रदत्त कृतियों में से चयनित कृतियों की प्रदर्शनी ।

वित्तीय वर्ष 2015-16 में आयोजित होने वाली गतिविधियाँ

1. प्रदेश के बृहद क्षेत्र के अधिकतम कलाकारों को लाभान्वित करने के ध्येय से प्रदेश के युवा कलाकारों को उच्चशिक्षा हेतु छात्रवृत्ति 5 के स्थान पर 10 कलाकारों को रु0 1000/- प्रति के स्थान पर रु0 3000/- प्रति कलाकार प्रति माह दिये जाने का प्रस्ताव है।

2. प्रदेश के बृहद क्षेत्र के अधिकतम कलाकारों को लाभान्वित करने के ध्येय से प्रदेश के युवा प्रतिभाशाली कलाकारों को उनके कृतित्व प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करने के क्रम में प्रदेश के 10 कलाकारों तथा 10 छात्रवृत्ति प्राप्त कलाकारों द्वारा एक वर्ष की अवधि में किये गये कार्यों को प्रदर्शित करने के लिये प्रत्येक कलाकार को रु0 5000/- प्रति के हिसाब से प्रदर्शनी आयोजन हेतु आर्थिक सहायता दिया जाना प्रस्तावित है।

3. 14वीं अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी का आयोजन ।

4. 13वीं अखिल भारतीय छायाचित्र कला प्रदर्शनी का आयोजन ।

5. अकादमी के कला संग्रह के नियमित प्रदर्शन एवं जन सामान्य को कलाकारों की कला को अवलोकनार्थ प्रस्तुत करने के क्रम में अकादमी परिसर के साथ प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शनी का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है।

6. प्रदेश के ख्यातिलब्ध कलाकार जिन्होंने प्रदेश की कला को उन्नति करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं उनके व्यक्तित्व कृतित्व से जनसामान्य को परिचित कराने के उद्देश्य से सिंहावलोकन (रिट्रासपेक्टिव) कला प्रदर्शनी को आयोजित किया जाना ।

7. अकादमी द्वारा अपने प्रतिष्ठित सम्मान समारोह के अन्तर्गत अकादमी अधिसदस्यता सम्मान प्रदान किया जाता है, जो लगभग 12 वर्षो से धनराशि की उपलब्धता न होने के कारण नहीं दिया जा सका है। अतः अकादमी वर्तमान वित्तीय वर्ष में इस सम्मान समारोह को आयोजित करने के लिये योजनाबद्ध है।

8. अकादमी की नियमित गतिविधियों के अन्तर्गत सम्मान एवं कला प्रदर्शन का आयोजन प्रदेश के पांच स्थानों पर प्रस्तावित है।

9. अन्तर्राज्य विनिमय कला प्रदर्शनी योजना के अन्तर्गत दो प्रदेशों में प्रदेश के कलाकारों की कृतियों की प्रदर्शनी आयोजित की जानी है।

10. अकादमी अपनी बचनबद्ध गतिविधियों के अन्तर्गत प्रदेश के किसी स्थान पर एक चित्रकार शिविर का आयोजन प्रस्तावित है।

11. अकादमी द्वारा अपनी बचनबद्ध गतिविधियों के अन्तर्गत अकादमी के संस्थापक कला एवं शिक्षाविद् डा0 राधा कमल मुखर्जी की स्मृति में देश के ख्यातिलब्ध कला इतिहासकारों को आमंत्रित करके उनकी कला यात्रा पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है।

12. क्षेत्रीय कला प्रदर्शनी योजना के अन्तर्गत प्रदेश को जनमानस एवं दूरस्थ अंचलों के कलाकारों को अकादमी से जोड़ने के लिये प्रदेश को 5 क्षेत्रों में वर्गीकृत कर क्षेत्रीय प्रदर्शनियों का आयोजन एवं क्षेत्रीय स्तर पर 3-3 कलाकारों को पुरस्कृत किया जाना ।

13. समकालीन कला विषयक सेमिनार एवं राष्ट्रीय कला संस्थाओं एवं भारत सरकार के संस्कृति विभाग, दूतावासों के सहयोग से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों का आयोजन ।

14. प्रदेश के ऐसे कलाकार जिन्होंने अपने कृतित्व से प्रदेश ही नही देश तथा विदेशों में भी प्रदेश की कला को स्थापित किया है/करने का प्रयास कर रहे हैं उनकी प्रेरक कला को जन सामान्य से परिचित कराने एवं कलाकार को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आमंत्रित कला प्रदर्शनियों का आयोजन का प्रस्ताव है।

15. अकादमी की बचनबद्ध गतिविधियों के अन्तर्गत अकादमी की कला पत्रिका का प्रकाशन, वरिष्ठ कलाकारों की कला यात्रा, कलाकारों, कला इतिहासकारों, कला समीक्षकों, से परिचय तथा जनमानस में कला के प्रति जागरूकता जागृत करने के ध्येय से अनुकृतियाँ, मोनोग्राफ, पोर्टफोलियो, शोध कार्य के प्रकाशनों को करवाया जाना प्रस्तावित है।

16. अकादमी द्वारा विभिन्न संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान, समसामयिक विषयक प्रतियोगिताओं तथा प्रदेश की कला एवं कलाकारों के उन्नयन एवं प्रोत्साहन के लिए समय समय पर अस्थायी कला प्रदर्शनियों, कला व्याख्यानमालाओं, संगोष्ठियों, परिचर्चाओं का आयोजन किया जाना भी प्रस्तावित है।

उ0 प्र0 संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ
विपिन खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ

अकादमी का परिचयः-

अकादमी की स्थापना 13 नवम्बर, 1963 को हुई थी। पिछले 50 वर्षों से अकादमी संगीत, नृत्य, नाटक, लोकसंगीत, लोकनाट्य की परम्पराओं के प्रचार-प्रसार, संवर्द्धन एवं परिरक्षण का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। उत्तर प्रदेश एक विशाल सांस्कृतिक क्षेत्र है, जिसकी विविध समृद्धसांस्कृतिक परम्पराओं के परिरक्षण एवं संवर्द्धन की दिशा में अभी बहुत कुछ किया जाना है। अकादमी के अत्यधिक सीमित संसाधन हैं, जबकि इतने वृहत् प्रदेश के लिये अधिक आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता है, जिससे प्रदेश की सांस्कृतिक गतिविधियों को और अधिक गतिशील व क्रियाशील बनाया जा सके।

प्रदेश में संगीत, नृत्य, नाटक, लोक विधाओं सम्बन्धी परम्पराओं के विषय में अधिक जागरूकता एवं जानकारी, नवोदित प्रतिभाशाली युवा कलाकारों को प्रोत्साहन, नवीन प्रतिभाओं का विकास एवं उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण, सांस्कृतिक कार्यकलापों का विकेन्द्रीकरण, प्रदेश के विभिन्न अंचलों में कार्यरत् स्वैच्छिक संस्थानों से सम्पर्क एवं उनके कार्यकलापों में सहायता, लुप्त हो रही विधाओं के परिरक्षण एवं प्रदर्शन की योजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर सम्पन्न कराना, साथ ही सर्वेक्षण एवं सर्वेक्षण के आधार पर कार्यक्रमों को तैयार कर उन्हें जनता के समक्ष लाना, अकादमी की गतिविधियों में शामिल है।

अकादमी कार्यक्रमों की थीम/विषय वस्तु निम्नवत् है:--

1. अकादमी सम्मान- प्रदेश में संगीत, नृत्य एवं नाटक के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु विद्वान् एवं समर्पित कलाकारों को उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा वर्ष 1970 से सम्मानित करने की योजना प्रारम्भ की गयी थी जिसके अन्तर्गत अकादमी द्वारा चयनित विद्वानों को अकादमी सम्मान (1970 से),सफदर हाशमी पुरस्कार (1991 से), बी एम.शाह पुरस्कार (1998 से) तथा अकादमी के सर्वोच्च सम्मान 'रत्न सदस्यता' (1970 से) अलंकृत किया जाता है।

2. संगीत प्रतियोगिता (प्रदेश के नवोदित, बाल, किशोर एवं युवा कलाकारों को प्रोत्साहन)- अकादमी द्वारा विगत 37 वर्षों से प्रतिवर्ष संगीत प्रतियोगिता का आयोजन दो चरणों में आयोजित किया जाता रहा है। प्रथम चरण में सम्भागीय स्तर पर प्रदेश के 30 केन्दों पर, तथा दूसरे चरण में इन केन्द्रों से प्रथम स्थान प्राप्त कलाकारों को प्रादेशिक प्रतियोगिता में आमंत्रित किया जाता है। इस प्रतियोगिता को आयोजित करने का उद्‌देश्य प्रदेश में शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में उभरती नवोदित प्रतिभाओं को खोजकर उन्हें व्यावसायिक कला के क्षेत्र में पदार्पण करने हेतु प्रोत्साहित करना है। विगत वर्षों में इस प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता कलाकारों ने प्रदेश, देश तथा विदेश में अपनी कला का प्रदर्शन कर ख्याति अर्जित की है और निरंतर अपनी कला के माध्यम से प्रदेश को गौरवान्वित कर रहे हैं।

3. नाट्य समारोह- अपने नियमित कार्यक्रमों के अन्तर्गत अकादमी द्वारा प्रत्येक वर्ष सम्भागीय नाट्य समारोह एवं राज्य नाट्य समारोह का आयोजन प्रदेश के विभिन्न जनपदों मे सम्पन्न किया जाता है।

4. लोक नाट्य समारोह– अपने नियमित कार्यक्रमों के अन्तर्गत अकादमी द्वारा प्रत्येक वर्ष प्रदेश के लोक नाट्य यथा नौटंकी, रामलीला, रासलीला, आदि को प्रोत्साहन देने हेतु लोक नाट्य समारोह का आयोजन किया जाता है।

5. अंशदान योजना– सांस्कृतिक एवं नाट्य संस्थाओं को प्रोत्साहन एवं सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से बनी इस योजना के अन्तर्गत संस्थाओं को प्रदर्शन हेतु अंशदान के रूप में प्रेक्षागृह आरक्षण एवं दैनिक समाचार पत्र में विज्ञापन द्वारा सहयोग प्रदान किया जाता है।

6. अवध संध्या–अकादमी द्वारा प्रत्येक माह के चौथे शुक्रवार को अवध संध्या शीर्षक से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इसके अन्तर्गत शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, सुगम संगीत एवं नृत्य तथा नाटक के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

7. यादें– अकादमी द्वारा विश्वविख्यात गायिका पद्मभूषण बेगम अख्तर की स्मृति में ठुमरी एवं ग़ज़ल का कार्यक्रम प्रत्येक वर्ष दिनांक 31 अक्टूबर को आयोजित किया जाता है।

8. ध्रुवपद समारोह – विलुप्त होती शास्त्रीय ध्रुवपद गायन एवं वादन परम्परा को जनमानस से परिचित कराने एवं कलाकारों को प्रोत्साहित एवं मंच प्रदान करने के उद्देश्य से अकादमी द्वारा प्रत्येक वर्ष मृदंगाचार्य स्वामी भगवान दास की स्मृति में ध्रुवपद समारोह का आयोजन प्रदेश के विभिन्न जनपदों में किया जाता है।

9. नवांकुर संगीत समारोह – अकादमी की संगीत प्रतियोगिता के विजेता कलाकारों कों मंच प्रदान करने तथा उनकी कला प्रदर्शन के साथ-साथ उनको प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से नवांकुर संगीत समारोह को प्रदेश के विभिन्न शहरों में आयोजित किया जाता रहा है।

10. (क) अभिलेखागार– अकादमी अभिलेखागार के अन्तर्गत इस वर्ष अकादमी द्वारा आयोजित समस्त संगीत, नृत्य एवं नाट्य-कार्यक्रमों की आडियो-वीडियो रिकार्डिंग एवं फोटोग्राफ संग्रहित किये गये हैं, अब तक अकादमी द्वारा आडियो कैसेट 1973, वीडियो कैसेट 1177, डी0वी0डी0 50, सी0डी0 125 एवं स्पूल टेप्स 1008 तथा लगभग कुल 5040 घंटे की रिकॉर्डिंग संग्रहित हैं।

(ख) सर्वेक्षण– अकादमी की एक महत्वपूर्ण योजना सर्वेक्षण जिसके अन्तर्गत उत्तर प्रदेश की लुप्तप्राय विधाओं यथा-शास्त्रीय, उपशास्त्रीय एवं लोक गीत, संगीत एवं वादन विधाओं का सर्वेक्षण किया जाता है।

(ग) स्टूडियो रिकार्डिंग– अकादमी की एक महत्वपूर्ण योजना स्टूडियो रिकार्डिंग भी है जिसके अन्तर्गत उत्तर प्रदेश की लुप्तप्राय विधाओं यथा शास्त्रीय, उपशास्त्रीय एव लोक गीत, संगीत एवं वादन विधाओं के कलाकारों की स्टूडियो रिकार्डिंग शोधार्थियों एवं भविष्य के सन्दर्भ हेतु की जाती है।

11. प्रकाशन– अकादमी द्वारा संगीत, नृत्य एवं नाट्य पर आधारित त्रैमासिक पत्रिका 'छायानट' का प्रकाशन किया जाता है। समय-समय पर संगीत, नृत्य एव नाट्य से संबंधित विशेषांकों का भी प्रकाशन कराया जाता रहा है।

12. पुस्तकालय- अकादमी पुस्तकालय संकलन की दृष्टि एवं सेवा की प्रवृत्ति के अनुसार विशिष्ट पुस्तकालय की श्रेणी में आता है। संकलन की लगभग 80 प्रतिशत पुस्तकें संगीत व नाटक विषय से संबंधित हैं। अकादमी पुस्तकालय मौलिक स्थापना मूल्यों के प्रति निरन्तरता का प्रयास करता है। देश-विदेश के वे सभी शोधार्थी जो संगीत तथा नाटक विषयों में शोध कार्य कर रहे हैं, यहां उपयोगी

सामग्री प्राप्त करते हैं। किसी भी प्रकार की सर्वेक्षण पूर्व योजना के लिये अकादमी ग्रंथागार में विविध संदर्भो से युक्त साहित्य का विशाल भण्डार है। अकादमी पुस्तकालय की सेवाओं का लाभ अकादमी तथा कथक केन्द्र परिवार के अतिरिक्त शोध छात्र-छात्राऐं, कलाकार एवं कलामित्र तथा पुस्तकालय-सदस्य निरन्तर प्राप्त कर रहे हैं। वर्तमान में अकादमी में लगभग 15,000 पुस्तकें एवं पत्रिकाऐं संग्रहित की गयी है। अकादमी पुस्तकालय की सेवाओं का लाभ अकादमी तथा कथक केन्द्र के अतिरिक्त शोधार्थी छात्र-छात्राऐं, कलाकार एवं पुस्तकालय-सदस्य आदि निरन्तर प्राप्त कर रहे हैं।

13. कथक केन्द्र- लखनऊ घराने की कथक परम्परा के व्यापक प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से वर्ष 1972 में उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के अन्तर्गत कथक केन्द्र की स्थापना शासन द्वारा की गयी। कथक केन्द्र के प्रथम निदेशक के रूप में लखनऊ घराने के सुविख्यात कथकाचार्य स्व0 पं0 लच्छू महाराज (पं0बैजनाथ मिश्र) की नियुक्ति की गयी।

कथक केन्द्र द्वारा नियमित नौ वर्षीय पाठयक्रम के अर्न्तगत छात्र-छात्राओं को कथक नृत्य का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। विशेष रूप से निर्मित इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्रारम्भिक पाठ्यक्रम, जूनियर डिप्लोमा, सीनियर डिप्लोमा तथा पोस्ट डिप्लोमा की कक्षाऐं संचालित की जाती हैं। कथक केन्द्र द्वारा कथक नृत्य प्रशिक्षण के साथ-साथ कथक केन्द्र के सीनियर छात्र-छात्राओं को सम्मिलित करते हुये नृत्य-नाटिकाओं का निर्माण भी किया जाता है, जिनका प्रस्तुतिकरण नगर में तथा नगर के बाहर समय-समय पर अनेक सरकारी एवं गैर सरकारी आयोजनों में किया जाता है। सुविख्यात कथकाचार्य पं0 लच्छू महाराज की जयन्ती के अवसर पर 31 अगस्त एवं 01 सितम्बर को **'नमन'** कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है।

वित्तीय वर्ष 2014-15 में हुये कार्यक्रमों का विवरण

दिनांक	कार्यक्रम	कलाकार का विवरण	स्थान
25.04.2014	अवध संध्या	नाटक- सैया भये कोतवाल	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, गोमतीनगर, लखनऊ
30.05.2014	अवध संध्या	भजन गायन पदमा गिडवानी, लखनऊ	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, गोमतीनगर, लखनऊ
22.06.2014	अवध संध्या	नाटक-उमराव	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, गोमतीनगर, लखनऊ
01 से 30.06.2014	ग्रीष्म कालीन कथक कार्यशाला	प्रतिभागी कलाकारों द्वारा प्रस्तुति	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, गोमती नगर,लखनऊ
03.07.2014	अवध संध्या	नाटक-गज फट ढाई इंच	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, गोमतीनगर,लखनऊ
01.09.2014	नमन	कथक-शिखा खरे, दिल्ली पं0 लच्छू महाराज जयन्ती	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह,कथक केन्द्र,गोमतीनगर, लखनऊ

12.09.2014 से 14.09.2014	लोक नाट्य.समारोह	एन.टी.पी.सी., टांडा	एन.टी.पी.सी.प्रेक्षागृह, टांडा,अकबरपुर
26.09.2014	अवध संध्या	नाटक-मृतक भोज	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह,गोमतीनगर, लखनऊ
30.10.2014	यादें	गज़ल कार्यशाला प्रस्तुति मुकुल सोनी, रीवा (म0प्र0)	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, गोमतीनगर, लखनऊ
13.11.2014	धरोहर अकादमी स्थापना दिवस	लोक संगीत कार्यशाला प्रस्तुति कव्वाली-टीना परवीन, लखनऊ	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, गोमतीनगर, लखनऊ
06.12.2014 से 07.12.2014 एवं	लोक नाट्य समारोह	वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन	वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन
27.12.2014	अवध संध्या	अवधी भोजपुरी गायन माधुरी वर्मा व साथी, लखनऊ	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, गोमतीनगर,लखनऊ
23.01.2015	अवध संध्या	नाटक- फौजी	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह, गोमतीनगर, लखनऊ

उ0 प्र0 संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ

वित्तीय वर्ष 2015-2016 में नगर तथा नगर से बाहर स्थानीय संस्थाओं/जिला प्रशासन के सहयोग से आयोजित किये जाने वाले प्रस्तावित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का विवरण

कार्यक्रम	स्थान
माह अप्रैल, 2015	
1. अवध संध्या	लखनऊ
माह मई, 2015	
1. अवध संध्या	लखनऊ
माह जून, 2015	
1. अवध संध्या	लखनऊ
2. ग्रीष्मकालीन प्रस्तुतिपरक कथक कार्यशाला	लखनऊ
माह जुलाई, 2015	
1. अवध संध्या	लखनऊ
माह अगस्त, 2015	
1. अवध संध्या	लखनऊ
2. सावन ऋतु पर आधारित कार्यशाला	लखनऊ

<u>माह सितम्बर, 2015</u>

1. 'नमन' स्व0 लच्छू महाराज स्मृति कथक कार्यक्रम	लखनऊ
2. अवध संध्या	लखनऊ
3. संगीत प्रतियोगिता	प्रदेश के विभिन्न शहरों में
4. सम्भागीय नाट्य समारोह	लखनऊ के बाहर

<u>माह अक्टूबर, 2015</u>

1. भजन संध्या	लखनऊ
2. संगीत प्रतियोगिता	प्रदेश के विभिन्न शहरों में
3. सम्भागीय नाट्य समारोह	लखनऊ के बाहर
4. यादें (बेगम अख्तर स्मृति कार्यक्रम)	लखनऊ

<u>माह नवम्बर, 2015</u>

1. 'धरोहर' अकादमी स्थापना दिवस	लखनऊ
2. 'उल्लास उत्सव' प्रादेशिक संगीत प्रतियोगिता तथा नवोदित कलाकार संध्या एवं पुरस्कार वितरण समारोह एवं स्टूडियो रिकार्डिंग	लखनऊ
3. अवध संध्या	लखनऊ

<u>माह दिसम्बर, 2015</u>

1. अवध संध्या	लखनऊ
2. लोक नाट्य समारोह	लखनऊ के बाहर

<u>माह जनवरी, 2016</u>

1. अवध संध्या	लखनऊ
2. ध्रुवपद समारोह	वाराणसी

<u>माह फरवरी, 2016</u>

1. राज्य नाट्य समारोह	लखनऊ के बाहर

माह मार्च, 2016

1. अवध संध्या — लखनऊ

2. स्टूडियो रिकार्डिंग — अकादमी स्टूडियो

नोटः उपरोक्त स्थान/कार्यक्रमों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन हो सकता है।

भारतेन्दु नाट्य अकादमी, लखनऊ

भारतेन्दु नाट्य अकादमी - स्थापना व परिचय

हिन्दी भाषी प्रान्तों में प्रतिभावान व आकांक्षी युवक युवतियों को नाट्यकला में प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से भारतेन्दु नाट्य अकादमी की स्थापना अगस्त 1975 में हुई थी। संस्थापक निदेशक पद्मश्री राज बिसारिया के कुशल निर्देशन में अकादमी का प्रशिक्षण कार्य, अंशकालिक प्रशिक्षण के रूप में प्रारम्भ होकर 1978 में एक वर्षीय पूर्णकालिक सर्टीफिकेट कोर्स तथा 1981 में द्विवर्षीय डिप्लोमा के रूप में स्थापित हुआ, जिसके अन्तर्गत नाट्यकला के विभिन्न पक्षों अभिनय, निर्देशन, रंग-तकनीक एवं नाट्य साहित्य विषयों में गहन प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। अकादमी से प्रशिक्षण प्राप्त छात्र-छात्राओं का पलायन रोकने के दृष्टिकोण से वर्ष 1988 में रंगमण्डल की स्थापना की गई।

भारतेन्दु नाट्य अकादमी उत्तर प्रदेश शासन के संस्कृति विभाग के अन्तर्गत स्वायत्तशासी संस्थान के रूप में कार्य कर रहा है।

उद्देश्य

अकादमी का उद्देश्य रंगमंच के विभिन्न पहलुओं में सैद्धान्तिक व व्यावहारिक गहन प्रशिक्षण प्रदान करना है ताकि इसे व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिये सशक्त पृष्ठभूमि तैयार हो सके। सैद्धान्तिक व व्यावहारिक प्रशिक्षण के द्वारा छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता का विकास करना उसकी कल्पना शक्ति लोक सौन्दर्यबोध के साथ रचनात्मक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करना है। इस प्रशिक्षण को प्रदान करने में अकादमी के नियमित प्रवक्ताओं के अतिरिक्त देश-विदेश के ख्याति प्राप्त कलाकारों व कलाविदों की सेवाएँ समय-समय पर प्राप्त की जाती हैं।

द्विवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण किये जाने के पश्चात् सफल छात्रों को अकादमी द्वारा नाट्य विधा में डिप्लोमा प्रदान किया जाता है। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र को अकादमी के भूतपूर्व छात्र की स्मृति में स्वर्गीय मृगांक शर्मा मेडल भी दिया जाता है।

दिनांक 01 अप्रैल, 2014 से दिसम्बर, 2015 तक के प्रशिक्षण हेतु आमंत्रित अतिथि विशेषज्ञों की सूची

क्र0सं0	नाम व स्थान	विषय
1	श्री शुभदीप राहा, पूना	अभिनय
2	डा0 सॉबरा हबीब, लखनऊ	रूसी नाटक

3	प्रो0 देवेन्द्र राज अंकुर, नई दिल्ली	भारतीय नाट्य शास्त्र
4	सुश्री पूर्णिमा वैश्य, लखनऊ	ड्राइंग
5	डा0 सचिन तिवारी, इलाहाबाद	पाश्चात्य नाट्य साहित्य
6	श्री हेम सिंह, दिल्ली	मेकअप
7	सुश्री मेहरू जाफर, लखनऊ	थियेटर मीडिया
8	श्री नरेश सक्सेना, लखनऊ	कविता की रंगमंचीय परिकल्पना
9	श्री रजनीकान्त वशिष्ठ, लखनऊ	रंगमंच में मीडिया की भूमिका
10	डा0 योगेश प्रवीन लखनऊ	अवध की सांस्कृतिक विरासत
11	सुश्री कुलसुम तल्हा, लखनऊ	रंगमंच में मीडिया की उपयोगिता
12	श्री आत्म प्रकाश मिश्रा, लखनऊ	हिन्दी भाषा का उच्चारण
13	श्री दिनेश सोनकर, लखनऊ	मूर्तिकला
14	सुश्री पूर्णिमा वैश्य, लखनऊ	स्क्रेचिंग एवं चित्रकला
15	श्री मनोज मिश्रा, सतना	अभिनय
16	श्री मनोज शर्मा, लखनऊ	वाइस एण्ड स्पीच
17	श्री विजय बनर्जी, लखनऊ	वाइस एण्ड स्पीच
18	श्री आत्मजीत सिंह, लखनऊ	लोक नाट्य विधा
19	श्री भूमिकेश्वर सिंह, दिल्ली	छाऊ
20	श्री अशरफ हुसैन, लखनऊ	टेलीविजन नाटक
21	श्री डी0पी0तिवारी, लखनऊ	कल्चरल हेरिटेज
22	सुश्री संध्या मुखर्जी, लखनऊ	संगीत
23	श्री गौतम सिद्धार्थ, मुम्बई	अभिनय
24	श्री मुनीष सप्पल, मुम्बई	डिज़ाईन
25	सुश्री रेखा भट्टनागर, भोपाल	चित्रकला
26	श्री मनोज मिश्रा, मुम्बई	बॉडी मूवमेन्ट
27	श्री विश्वजीत सिंह, मणिपुर	मार्शल आर्ट
28	डॉ0 अभिजीत मण्डल, रूद्रपुर	मॉडल मेकिंग एवं भारतीय नाट्य शास्त्र
29	श्री पुनीत अस्थाना, लखनऊ	निर्देशन
30	श्री पार्थो बन्द्योपाध्याय	प्रस्तुति निर्देशन
31	श्री प्रदीप वेर्णेकर	निर्देशन

अकादमी व रंगमण्डल की प्रस्तुति

तिथि	कार्यक्रम	निर्देशक	स्थान
भारतेन्दु नाट्य समारोह, नई दिल्ली (दिनांक 09 से 11 अप्रैल, 2014) में प्रस्तुतियों का मंचन			
09 अप्रैल, 2014	प्रथास मिलन	एन0राजेन मितई	श्रीराम

			सेन्टर, मण्डी हाउस, नई दिल्ली
10 अप्रैल, 2014	महानिर्वाण	अखिलेश खन्ना	श्रीराम सेन्टर, मण्डी हाउस, नई दिल्ली
11 अप्रैल, 2014	राजदरबार	अरूण त्रिवेदी	श्रीराम सेन्टर, मण्डी हाउस, नई दिल्ली
19 से 22 मई, 2014	रंगमण्डल प्रस्तुति **रिफ्लेक्शन अननोन**	चित्रा मोहन	बी0एम0शाह प्रेक्षागृह
30 से 31 मई, 2014	छात्र प्रस्तुति **कामरेड**	अश्वत्थ भट्ट	थ्रस्ट थियेटर
30 जून, 2014	दिनांक 01 जून, 2014 से 30 जून, 2014 तक बाल रंगमंच कार्यशाला की प्रस्तुति **'दादी नानी की कहानी' एवं 'क्लास रूम'**	राघवेन्द्र	बी0एम0शाह प्रेक्षागृह
01 जुलाई, 2014	दिनांक 01 जून, 2014 से 30 जून, 2014 तक अभिनय कार्यशाला की प्रस्तुति **'अनमोल खजाना'**	चैतन्य प्रकाश	थ्रस्ट थियेटर
01 जुलाई, 2014	दिनांक 01 जून, 2014 से 30 जून, 2014 तक चित्रकला कार्यशाला में निर्मित चित्रों की प्रदर्शनी	पूर्णिमा वैश्य	अकादमी परिसर
29,30 जुलाई, 2014 तथा 01 अगस्त, 2014	रंगमण्डल प्रस्तुति **ये दुनिया अगर मिल भी जाये..**	चित्रा मोहन	थ्रस्ट थियेटर
19 अगस्त, 2014	राजदरबार	अरूण त्रिवेदी	जोधपुर
09-10 सितम्बर, 2014	भारतेन्दु जयन्ती के उपलक्ष्य में रंगमण्डल प्रस्तुति **ये दुनिया अगर मिल भी जाये..**	चित्रा मोहन	थ्रस्ट थियेटर
11 व 12 अक्टूबर, 2014	डा0 राम मनोहर लोहिया पर आधारित प्रस्तुति **मेरी याद मरने के बाद**	अरूण त्रिवेदी	बी0एम0शाह प्रेक्षागृह

18,19,20 व 21 अक्टूबर, 2014	छात्र प्रस्तुति अश्वत्थामा हतो हतः	गौतम सिद्धार्थ	थ्रस्ट थियेटर
02 नवम्बर, 2014	ये दुनिया अगर मिल भी जाये..	चित्रा मोहन	थ्रस्ट थियेटर
12 नवम्बर, 2014	'अभिनय से सत्य तक' (सोलो परफार्मेन्स)	मनोज मिश्रा	थ्रस्ट थियेटर
15 नवम्बर, 2014	भारतेन्दु नाट्य अकादमी रंगमण्डल एवं जनजाति एवं लोक कला संस्कृति संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पूर्वांचल की लोक संस्कृति पर आधारित सोनभद्र की जनजाति का गायन, वादन एवं नृत्य पर अप्रतिम प्रस्तुति 'लोक-लय'	-	थ्रस्ट थियेटर
जयपुर महोत्सव-जवाहर कला केन्द्र, जयपुर राजस्थान के सहयोग से रंगमण्डल प्रस्तुतियों का नाट्य समारोह			
19 नवम्बर, 2014	राजदरबार	अरूण त्रिवेदी	जवाहर कला केन्द्र, जयपुर
20 नवम्बर, 2014	रिफ्लेक्शन अननोन	चित्रा मोहन	तदैव
21 नवम्बर, 2014	ये दुनिया अगर मिल भी जाये..	चित्रा मोहन	तदैव
25 नवम्बर, 2014	लखनऊ महोत्सव के अन्तर्गत नाट्य समारोह में अकादमी रंगमण्डल की प्रस्तुति **राजदरबार**	अरूण त्रिवेदी	राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह
21 दिसम्बर, 2014	24वाँ बाबू हरदयाल वास्तव हास्य नाट्य समारोह के अन्तर्गत अकादमी रंगमण्डल की प्रस्तुति **ये दुनिया अगर मिल भी जाये..**	चित्रा मोहन	संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह

विशेष- अकादमी द्वारा द्वितीय वर्ष के 14 छात्रों को दिनांक 04 अगस्त, 2014 से दिनांक 26 सितम्बर, 2014 तक फिल्म एवं टेलीविजन प्रशिक्षण हेतु सत्यजीत रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, कोलकाता भेजा गया।

शारतेन्दु नाट्य अकादमी, लखनऊ।

कैलेण्डर 2015-16

माह	कार्यक्रम	स्थान	अभ्युक्ति/ अनुमानित व्यय
जनवरी, 2015			
जनवरी, 2015	प्रथम/द्वितीय सप्ताह में स्थानीय महाविद्यालयों का नाट्य समारोह प्रस्तावित है।		अनुदान की उपलब्धता पर
फरवरी, 2015			
07 फरवरी, 2015	स्व0 कृष्ण नारायण कक्कड़ व्याख्यान सेमिनार	अकादमी परिसर	स्व0 कृष्ण नारायण कक्कड़ की बहन द्वारा उपलब्ध करायी गयी धनराशि से
26 फरवरी, 2015	छात्र प्रस्तुति पूर्वाभ्यास प्रारम्भ	अकादमी परिसर	अकादमी के वार्षिक बजट से
मार्च, 2015			
27 मार्च, 2015	विश्व रंगमंच दिवस पर सेमिनार अथवा छात्र प्रस्तुति	अकादमी परिसर	अकादमी के वार्षिक बजट से
अप्रैल, 2015			
अप्रैल, 2015	भारतेन्दु नाट्य समारोह, नई दिल्ली (अप्रैल, 2015) के द्वितीय सप्ताह में	श्रीराम सेन्टर, मण्डी हाउस, नई दिल्ली	अकादमी के वार्षिक बजट से
मई, 2015			
27 मई, 2015	प्रस्तुतिपरक बाल रंगमंच कार्यशाला का प्रारम्भ	अकादमी परिसर	स्ववित्तपोषित
जून, 2015			
20 जून, 2015	अकादमी रंगमण्डल द्वारा प्रस्तुतिपरक कार्यशाला का आयोजन	अकादमी परिसर	स्ववित्तपोषित
27 जून, 2015	बालरंगमंच कार्यशाला की प्रस्तुतियों का मंचन	अकादमी परिसर	स्ववित्तपोषित
जुलाई, 2015			
15 जुलाई, 2015	नवीन सत्र का आरम्भ	अकादमी परिसर	
अगस्त, 2015			
12 अगस्त, 2015	छात्र प्रस्तुति पूर्वाभ्यास प्रारम्भ	अकादमी परिसर	अकादमी के वार्षिक बजट से
20 अगस्त, 2015	रंगमण्डल कार्यशाला की प्रस्तुति	अकादमी परिसर	स्ववित्तपोषित

सितम्बर, 2015			
09 एवं 10 सितम्बर, 2015	भारतेन्दु जयन्ती के अवसर पर छात्र प्रस्तुति	अकादमी परिसर	अकादमी के वार्षिक बजट से
अक्टूबर, 2015			
15 अक्टूबर, 2015	अकादमी रंगमण्डल द्वारा प्रस्तुतिपरक कार्यशाला का आयोजन	अकादमी परिसर	स्ववित्तपोषित एवं अकादमी के वार्षिक बजट से
नवम्बर, 2015			
20 नवम्बर, 2015	छात्र प्रस्तुति पूर्वाभ्यास प्रारम्भ	अकादमी परिसर	अकादमी के वार्षिक बजट से
दिसम्बर, 2015			
20 से 30 दिसम्बर, 2015 के मध्य	राष्ट्रीय नाट्य समारोह	अकादमी परिसर	शासन से अनुदान की उपलब्धता पर
21 व 22 दिसम्बर, 2015	छात्र प्रस्तुति	अकादमी परिसर	अकादमी के वार्षिक बजट से
फरवरी, 2016			
07 फरवरी, 2015	स्व0 कृष्ण नारायण कक्कड़ व्याख्यान सेमिनार	अकादमी परिसर	स्व0 कृष्ण नारायण कक्कड़ की बहन द्वारा उपलब्ध करायी गयी धनराशि से
26 फरवरी, 2015	छात्र प्रस्तुति पूर्वाभ्यास प्रारम्भ	अकादमी परिसर	अकादमी के वार्षिक बजट से
मार्च, 2016			
27 मार्च, 2015	विश्व रंगमंच दिवस पर सेमिनार अथवा छात्र प्रस्तुति	अकादमी परिसर	अकादमी के वार्षिक बजट से

अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या-फैजाबाद

स्थापना का उद्देश्य एवं भूमिका

अयोध्या शोध संस्थान की स्थापना संस्कृति विभाग उ.प्र. शासन द्वारा अयोध्या के ऐतिहासिक तुलसी स्मारक भवन, में 18 अगस्त, 1986 को की गयी। यह संस्कृति विभाग की स्वायत्तशाषी संस्था है।

अयोध्या के प्रमुख संतों की विशेष माँग पर जहां गोस्वामी तुलसी दास जी ने मानस की रचना प्रारम्भ की थी, उस स्थान पर गोस्वामी तुलसीदास जी की स्मृति में तुलसी स्मारक भवन के निर्माण की माँग शासन से की गई। अयोध्या के संतों की माँग का सम्मान करते हुए उ0 प्र0 सरकार ने अयोध्या में तुलसी स्मारक भवन का निर्माण वर्ष 1969 में करवाया गया। इस भवन में गोस्वामी तुलसीदास की स्मृति को संजोये रखने हेतु उनकी रामायण लेखन मुद्रा में सांगो-पांग प्रतिमा स्थापित है। अयोध्या शोध संस्थान की स्थापना के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत् हैं।

प्रमुख उद्देश्य

1. सामान्य रूप से अवध और विशिष्ट रूप से अयोध्या की कला संस्कृति, साहित्य, लोकसाहित्य, इतिहास और परम्पराओं की पाण्डुलिपियों तथा वस्तुअें और शिल्प तथ्यों का संग्रह, संरक्षण और अध्ययन करना है।
2. अवध की सांस्कृतिक विरासत से सम्बंधित नष्ट और विलुप्त हो रही पुरालेखीय सामग्री को सुरक्षित रखना।
3. अवध की भारतीय विद्या, कला, संस्कृति और इतिहास में विशेष रूप से अयोध्या, रामायण और तुलसीदास के साहित्य और दर्शन से सम्बंधित शोध कार्य को प्रोत्साहन देना और पूरा करना।
4. सामाजिक, धार्मिक,साहित्यिक, कलात्मक और ऐतिहासिक महत्व पाण्डुलिपियों, पुरालेखीय सामग्री और अन्य वस्तुओं का उनके उन्नयन, संरक्षण और अध्ययन हेतु एक संग्रहालय स्थापित करना।
5. वैष्णव भक्ति, भक्ति आन्दोलन, कला, संस्कृति और सम्बद्ध भाषाई और भारतीय विद्या से सम्बंधित अन्य विषयों में विशेष रूप से अवध और राम की दन्त कथा के संदर्भ में शोध कार्य करना और स्नातकोत्तर अध्ययन संचालित कराना।
6. महत्वपूर्ण मूल पाठों की सूचियों, आलोचनात्मक संस्करणों और अनुवादों तथा शोध कार्यों के परिणामों को प्रकाशित कराना तथा अन्य उपयोगी प्रकाशनों को प्रकाशित कराना।
7. उपर्युक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने और आगे बढ़ाने के लिये भारत और विदेशों के विश्वविद्यालयों संग्रहालयों, पुस्तकालयों और अन्य शिक्षा संस्थाओं से सहयोग करके कार्य करना।
8. व्याख्यानों, संगोष्ठियों, उत्सवों, सम्मेलनों और अन्य शैक्षिक तथा सांस्कृतिक क्रिया-कलापों का आयोजन कराना तथा इस सोसाइटी के उददेश्यों से सम्बंधित क्रिया-कलापों में लगे हुये शोध छात्रों और लेखकों को छात्रवृत्तियाँ, वृत्तिकाएँ और पुरस्कार प्रदान करना।
9. धन, वस्तु या सम्प्रति के रूप में अनुदानों, चन्दों, उपहारों अंशदानों को स्वीकार करना। अयोध्या शोध संस्थान का अपना संविधान है। संस्थान के पदेन अध्यक्ष, प्रमुख सचिव, संस्कृति विभाग, उ0 प्र0 शासन हैं। संस्थान के संचालन हेतु सामान्य सभा, कार्यकारिणी परिषद्, शोध एवं विकास समिति तथा वित्त समिति गठित है।
10. रोजगार परक योजनाओं का संचालन, वस्त्र मंत्रालय भारत सरकार तथा राज्य सरकार के विभिन्न शिल्प और विकास योजनाओं का संचालन।

अयोध्या शोध संस्थान प्रमुख रूप से शोध छात्रों के लिये पुस्तकालय का संचालन महत्वपूर्ण शोध कार्य तथा शोध के परिणामों को प्रकाशित करने हेतु प्रकाशन सहायता शोध पत्रिका का प्रकाशन, महापुरूषों की जयन्ती का आयोजन, प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन व प्रस्तुति करवाना तथा हस्तशिल्प में देश के विभिन्न भागों से रामकथा विषयक सामग्रियों का

संकलन, टेराकोटा के माध्यम से विभिन्न शैलियों में रामकथा अंकन तथा विभिन्न चित्र शैलियों में रामकथा का चित्रांकन राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठीयों का आयोजन करवाया जाना है। इसी के क्रम में अनवरत रामलीला का मंचन तथा व्यास परम्परा का दस्तावेजीकरण हेतु कथावाचन का आयोजन व मैदानी रामलीला तथा सांस्कृतिक विरासत का दस्तावेजीकरण शोध कार्य हेतु करवाया जा रहा है।

संस्थान द्वारा वर्ष 2014-15 में किये गये प्रमुख कार्यों का विवरण

1. पुस्तकालय का संचालन-

संस्थान द्वारा पुस्तकालय एवं वाचनालय का संचालन किया गया, जिसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों में पंजीकृत शोध छात्र एवं अध्ययनकर्ताओं ने पुस्तकालय एवं वाचनालय में अध्ययन किया।

01.04.2013 से 31.01.2014 तक

1.	शोध छात्र	-	09
2.	सामान्य अध्ययनार्थी	-	525
3.	पत्रिका अध्ययनार्थी	-	400
4.	रोजगार समाचार अध्ययनार्थी	-	044
5.	समाचार पत्र अध्ययनार्थी	-	2728

2. शिल्प संग्रहालय-

शिल्प संग्रहालय में देश-विदेश की विभिन्न विधाओं में उपलब्ध हस्तशिल्प में निर्मित रामकथा सामग्रियों का संकलन प्रदर्शन की व्यवस्था तथा क्षेत्र की कला का विस्तृत परिचय हेतु प्रदर्शक की व्यवस्था।

3. शोध कार्य-

संस्थान की वित्तीय सहायता से संचालित शोध कार्यों का विवरण-

	शोध	शोधकर्ता
	चल रहे शोध कार्यः-	
1.	अवध की सांस्कृतिक विरासत का सर्वेक्षण जनपद-फैजाबाद	डॉ. नीतू सिंह, लखनऊ
2.	अवध की सांस्कृतिक विरासत का सर्वेक्षण जनपद-हरदोई	डॉ. अंजली चौहान, लखनऊ
3.	अयोध्या, फैजाबाद विशेषांक	श्री यतीन्द्र मिश्र, अयोध्या
4.	भारतीय भाषाओं में रामकथा अवधी, राजस्थानी, उड़िया, हरियाणवी, तमिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़ असमिया, पहाड़ी, उर्दू, फारसी, बुन्देली, भोजपुरी, ब्रज, गुजराती, मराठी आदिवासी, पंजाबी, बंग्ला में संकलन कार्य है	प्रधान संपादकः प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह, इलाहाबाद
5.	लखनऊ की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि	डॉ0 नदीम हसनैन, लखनऊ
6.	जौनपुर जनपद का सांस्कृतिक सर्वेक्षण	डॉ0 एम0एम0एस0रिज़वी
7.	अयोध्या के जातीय मंदिर	डॉ0 राजेश कुमार श्रीवास्तव

8. अयोध्या-फैजाबाद क्षेत्र के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी — श्री सूर्यकान्त पाण्डेय
9. अयोध्या में निर्मित राजघारानों के मंदिर — श्री रघुवर शरण
10. अयोध्या की सखी परम्परा — डॉ0 संतोष कुमार दुवे
11. वाल्मीकि राम में वर्णित पर्वत, नदी आश्रम — श्री महेन्द्र प्रताप सिंह
12. श्रीरामचरित मानस के वैज्ञानिक टीका — प्रो0 एस0पी0गौतम

4. **संस्थान की सहायता से प्रकाशित ग्रन्थ-**

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक/संपादक/संकलनकर्ता
1.	तुलसी के हनुमान	श्रीराम मल्होत्रा
2.	जसवन्त नगर, इटावा की रामलीला	श्री वेदव्रत गुप्ता
3.	समकालीन हिन्दी साहित्य की चुनौतियाँ	सम्पादक डॉ0प्रदीप कुमार सिंह
4.	भुशुण्डि रामायण का समाज दर्शन	डॉ0 लीना मिश्रा
5.	रामचरित मानस के वैज्ञानिक टीका	प्रो0 ए0पी0 गौतम
6.	भारतीय भाषाओं में रामकथा : अवधी साहित्य	डॉ0 सूर्य प्रसाद दीक्षित
7.	भारतीय भाषाओं में रामकथा : बंगला साहित्य	डॉ0 हरिशचन्द्र मिश्र
8.	भारतीय भाषाओं में रामकथा : पहाड़ी साहित्य	डॉ0 निधि सिन्हा

5. **साक्षी शोध पत्रिका का प्रकाशन-**

1. साक्षी अंक -13 श्रीराम चरितमानस की वैज्ञानिक टीका
2. साक्षी अंक -14 भारतीय भाषाओं में रामकथा : अवधी साहित्य
3. साक्षी अंक -15 भारतीय भाषाओं में रामकथा : बंगला साहित्य
4. साक्षी अंक -16 भारतीय भाषाओं में रामकथा : पहाड़ी साहित्य

6. **ब्रोसर का प्रकाशन**

रामायण/रामलीला महाकाव्य संरचनाःगीतशीलता, संरक्षण एवं सौन्दर्य बोध कार्याशाला/चिन्तन शिविर हेतु ब्रोसर का प्रकाशन करवाया गया।

7. **जयन्तीयों का आयोजन**

1. श्रावण शुक्ल सप्तमी पर तुलसी जयन्ती समारोह का आयोजन अयोध्या में सम्पन्न हुआ।
2. तुलसी जयन्ती के अवसर पर ऐसबाग, लखनऊ में अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन का आयोजन।
3. फादर कामिल बुल्के जयन्ती समारोह का आयोजन वाराणसी में सम्पन्न हुआ।

शरदपूर्णिमा के अवसर पर महर्षि वाल्मीकि जयन्ती के अवसर पर अयोध्या में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन सम्पन्न हुआ।

8. **प्रदर्शनी आयोजन-**

1. ऐशबाग लखनऊ, में आयोजित रामलीला महोत्सव में मैदानी रामलीलाओं की चित्र प्रदर्शनी लगवायी गयी।
2. राष्ट्रीय कला शिविर में निर्मित चित्रों की प्रदर्शनी, तुलसी स्मारक भवन, अयोध्या में मे लगवायी गयी।

9. राष्ट्रीय कला शिविर का आयोजन

दिनांक 20-24 दिसम्बर, 2014 तक भोपाल, छत्तीसगढ़, बिहार, महाराष्ट्र, गोवा, राजस्थान, गुजरात, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, के पन्द्रह चित्रकारों से राष्ट्रीय कला शिविर में कैनवास में चित्रांकन किया।

10. राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

	संगोष्ठी विषय
अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, धारवाड़, कर्नाटक	समकालीन हिन्दी साहित्य की चुनौतियाँ।
अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, काकीनारा, विशाखापट्टनम	समकालीन साहित्य के प्रश्न
अनतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, तिरूपति	रामकथा : जीवन, साहित्य एवं कला राष्ट्रीय संगोष्ठी, सुल्तानपुर

11. अन्तर्राष्ट्रीय रामायण संगोष्ठी 2015 हेतु कार्यशाला चिन्तन शिविर का आयोजन

दिनांक 07 व 08 नवम्बर, 2014 को वर्ष 2015 में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार नेशनल रामलीला कौन्सिल, ट्रिनीडाड एण्ड टुबेगो के संयुक्त तत्वावधान में 15 दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय रामायण संगोष्ठी के आयोजन हेतु जयशंकर प्रसाद सभागार, लखनऊ में कार्यशाला/चिन्तन शिविर का आयोजन किया गया।

12. रामचरित मानस पर आधारित डिप्लोमा पाठ्यक्रम का संकलन व प्रकाशन

संस्थान द्वारा रामचरित मानस विज्ञान से सामाजिक उत्थान हेतु तैयार करवाये गये कार्यों को पं0 सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़, विलासपुर में डिप्लोमा पाठ्क्रम के रूप में स्वीकार किया गया। अन्य निम्नवत् विषय पर रामचरित मानस में डिप्लोमा पाठ्क्रम हेतु शोध करवाया गया।

1. मानस में पर्यावरण विज्ञान एवं सामाजिकता	डॉ0 मुकुल तिवारी
2. मानस में रासायन विज्ञान एवं सामाजिकता	डॉ0 रागिनी गोठलवाल
3. मानस में भौतिक विज्ञान एवं सामाजिकता	डॉ0 लोकेन्द्र तिवारी
4. मानस में जीव विज्ञान एवं सामाजिकता	डॉ0 अनूप तिवारी

13. उत्सवों महोत्सव में आयोजित लोक रंग सांस्कृतिक कार्यक्रम

1. बदायूँ महोत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रम
2. बसन्त पंचमी के अवसर पर जमुआभवानीपुर जौनपुर, सांस्कृतिक कार्यक्रम
3. राष्ट्रीय कला शिविर के समापन अवसर पर तुलसी स्मारक भवन, अयोध्या में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन
4. ग्रामीण अंचल मुमताजनगर, फैजाबाद में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन
5. दशहरा के अवसर पर चौक, फैजाबाद में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन
6. दशहरा के अवसर पर जनपद प्रतापगढ़ के अशोगीपुर में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

14. मैदानी रामलीला का दस्तावेजीकरण/अभिलेखीकरण

1. मुमताज नगर, फैजाबाद मैदानी रामलीला।
2. चौक, फैजाबाद की मैदानी रामलीला।
3. सेवरा काजी देवरा, गोण्डा की मैदानी रामलीला।

15. रणवीर सिंह स्मृति सैफई महोत्सव-2014

- संस्थान द्वारा इटावा में आयोजित रणवीर सिंह स्मृति सैफई महोत्सव-2014 में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन संस्कृति विभाग, उ0प्र0 द्वारा प्रदत्त वित्तीय सहायता दिनांक 26.12.2014 से 31.12.2014 तक सांस्कृतिक कार्यकम का आयोजन
- लोकधारा का अयोजन प्रशिक्षण व प्रस्तुति संस्थान द्वारा विभिन्न विधाओं में जनपद कन्नौज, इटावा, मैनपुरी के विद्यालयों के बच्चों को प्रस्तुति परक कार्यशाला का आयोजन
- प्रशिक्षण अवधि दिनांक 14.12.2014 से 25.12.2014 तक
- प्रस्तुति दिनांक 26.12.2014 मास्टर चन्दगीराम अन्तर्राष्ट्रीय स्टेडियम, सैफई इटावा।
- प्रशिक्षण विधा :-

प्रशिक्षक		मुख्य प्रशिक्षक	सहायक
1.	फूलों की होली	श्रीमती वन्दना सिंह, अन्य	10
2.	चरकुला नृत्य	श्रीमती सुधा पाल, अन्य	10
3.	बरैदी नृत्य	श्री मनीष यादव, अन्य	10
4.	आठ भाषाओं में लोकगायन	श्री मनोज कुमार गुप्ता, अन्य	06
5.	संस्कारगीत	श्री विनोद कुमार मिश्र, अन्य	06

16. विकास आयुक्त, हस्तशिल्प वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम :

1. दिल्ली हाट, नई दिल्ली में दिनांक 02 दिसम्बर, 2014 से 08 दिसम्बर, 2014 तक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन।
2. दिल्ली हाट, नई दिल्ली में दिनांक 02 फरवरी, 2015 से 06 फरवरी, 2015 तक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करवाया।

17. अनवरत रामलीला की प्रस्तुति-

वर्ष 2014-15 में अनवरत रामलीला की प्रस्तुति विवरण-

क्र. सं	तिथि	प्रस्तुति दिवस	दल का नाम-पता
1.	01.04.14 से 30.04.14 तक	30 दिन	श्री महावीर शरण आदर्श बाल श्री रामलीला समिति अयोध्या।
2.	01.05.14 से 31.05.14 तक	31 दिन	महान्त जैराम दास व्यास अवध आदर्श रामलीला मण्डल अयोध्या।
3.	01.06.14 से 30.06.14 तक	30 दिन	श्री कामेश्वर नाथ शर्मा श्री बजरंग विजय आदर्श रामलीला, मण्डल समिति, अयोध्या

4.	01.07.14 से 31.07.14 तक	31 दिन	श्री अभिमन्यु प्रसाद श्री दुर्गा अवध आदर्श रामलीला मण्डल समिति, अयोध्या
5.	01.08.2014 से 31.08.2014 तक	31 दिन	श्री सुरेश चन्द्र शर्मा आदर्श सेवा संस्थान, बाराबंकी
6.	01.09.2014 से 05.10.2014 तक (दशहरा अवधि)	35 दिन	श्री महावीर प्रसाद शर्मा सांस्कृतिक रामकृष्ण मानस प्रचार समिति, बैरसिया, भोपाल, मध्य प्रदेश
7.	06.10.2014 से 31.10.2014 तक	26 दिन	श्री राधिका दास सनेही श्री शारदा रामलीला मण्डल, सिन्धी, कालोनी, महैर,जिला-सतना मध्य प्रदेश
8.	01.11.2014 से 30.11.2014 तक	30 दिन	महान्त श्री शशिकान्त दास आन्जनेय सेवा संस्थान विकास समिति वासुदेवघाट, अयोध्या
9.	01.12.2014 से 31.12.2014 तक	31 दिन	श्री ओम नारायण मिश्र श्री विश्वेश्वर रामलीला मण्डली, मगराज (कठहा) सतना, मध्य प्रदेश
10.	01.01.2015 से 31.01.2015 तक	31 दिन	श्री सत्य नारायण मिश्र श्री साकेत आदर्श रामलीला मण्डल एवं प्रशिक्षण संस्थान, स्वर्गद्वार, अयोध्या।
11.	01.02.2015 से 28.02.2015 तक	28 दिवस	श्री विनोद कुमार श्री बाला जी सांस्कृतिक विकास सेवा संस्थान, परिक्रमा मार्ग, अयोध्या

वर्तमान में नित्य रामलीला का मंचन चल रहा है।

18. व्यास परम्परा का आयोजन-

अयोध्या की व्यास परम्परा के संरक्षण, संवर्धन, अभिलेखीकरण, प्रकाशन एवं नई पीढ़ी में संप्रेषण हेतु तुलसी स्मारक भवन, अयोध्या में नित्य रामकथा का आयोजन करवाया जा रहा है, कथा व्यास निम्नवत् हैं-

व्यास परम्परानुसार नित्य कथा वाचको का विवरण-

क्र0	तिथि	प्रस्तुति दिवस	कथाव्यास का नाम व पता
1	01.04.2014 से 10.04.2014 तक	10 दिवस	श्री नरेन्द्र शुक्ल, निकट मानस भवन रामघाट, अयोध्या
2	11.04.2014 से 20.01.2014 तक	10 दिवस	श्री विजय किशोर शाही, आनन्दबाग कालोनी, कनीगंज, अयोध्या
3	21.04.2014 से 30.04.2014 तक	10 दिवस	श्री रामअवतार दास'मानस अगस्त' अगस्त आश्रम, रामसेवकपुरम अयोध्या
4	01.05.2014 से 10.05.2014 तक	10 दिवस	श्री रामकृष्ण दास, श्रीराम सेवक पुरम रामघाट, अयोध्या
5	11.05.2014 से 20.05.2014 तक	10 दिवस	श्री राघवेन्द्रदास व्यास, वसुदेवघाट, अयोध्या
6	21.05.2014 से 31.05.2014 तक	11 दिवस	श्री राम जी शास्त्री, लवकुशनगर, अयोध्या
7	01.06.2014 से	10 दिवस	श्री राममनोहर मिश्र

	10.06.2014 तक		रामघाट चौराहा, अयोध्या
8	11.06.2014 से 20.06.2014 तक	10 दिवस	आचार्य मनमोहन मिश्र, रामघाट चौराहा, अयोध्या
9	21.06.2014 से 30.06.2014 तक	10 दिवस	आचार्य रवीन्द्र कुमार मिश्र, रामघाट, सोनादेवी मार्ग, अयोध्या
10	01.07.2014 से 10.07.2014 तक	10 दिवस	श्री रामलषन दास, हनुमानगढ़ी मंदिर, अयोध्या
11	11.07.2014 से 20.07.2014 तक	10 दिवस	श्री राघव शरण, वैदेही भवन, जानकी घाट, अयोध्या
12	21.07.2014 से 31.07.2014 तक	11 दिवस	श्री विष्णु देव पाण्डेय, दशरथमहल, रामकोट, अयोध्या
13	01.08.2014 से 10.08.2014 तक	10 दिवस	श्री मणिराम दास, रामहर्षण कुन्ज, नयाघाट, अयोध्या
14	11.08.2014 से 20.08.2014 तक	10 दिवस	श्री भगवान शरण 'भागवताचार्य' भागवतकृपालु आश्रम, सोनादेवी मार्ग वासुदेवघाट, अयोध्या
15	21.08.2014 से 31.08.2014 तक	11 दिवस	श्री रामकिशोर दास, रामघाट चौराहा, अयोध्या
16	01.09.2014 से 10.09.2014 तक	10 दिवस	श्री अवधकिशोर शरण, पंचमुखी हनुमान मन्दिर, रामघाट, अयोध्या
17	11.09.2014 से 20.09.2014 तक	10 दिवस	श्री परशुराम शर्मा, सीताराम निवास, रामघाट, अयोध्या
18	21.09.2014 से 30.09.2014 तक	10 दिवस	आचार्य नरेन्द्र शुक्ल, निकट मानस भवन, रामघाट, अयोध्या
19	01.10.2014 से 10.10.2014 तक	10 दिवस	श्री आनन्द बिहारी दास, श्रीरामचरित मानस विद्यापीठ, रामघाट, अयोध्या
20	11.10.2014 से 20.10.2014 तक	10 दिवस	श्री लवकुश दास शास्त्री उर्फ लवकुश पाण्डेय, हनुमानगढ़, अयोध्या।
21	21.10.2014 से 31.10.2014 तक	11 दिवस	श्री रामेश्वर शरण, युगलविनोद कुन्ज, नयाघाट, अयोध्या
22	01.11.2014 से 10.11.2014 तक	10 दिवस	श्री प्रमोद शास्त्री, वासुदेवघाट, मौनीमाझा, अयोध्या
23	11.11.2014 से 20.11.2014 तक	10 दिवस	शैल देवी, सीताराम निवासी, रामघाट, अयोध्या
24	21.11.2014 से 30.11.2014 तक	10 दिवस	श्री अयोध्या दास, मणिराम छावनी, अयोध्या
25	01.12.2014 से 10.12.2014 तक	10 दिवस	श्री रामजीवन दास, हनुमत सेवक सदन, अड़गड़ा चौराहा, अयोध्या
26	11.12.2014 से 20.12.2014 तक	10 दिवस	श्री देवेशाचार्य, जनकीघाट, अयोध्या
27	21.12.2014 से 31.12.2014 तक	11 दिवस	श्री रामनयन शास्त्री, हनुमानकुण्ड, अयोध्या

28	01.01.2015 से 10.01.2015 तक	10 दिवस	श्री [illegible] शाही, किशोर किशोरी कुन्ज, कनीगंज, अयोध्या
29	11.01.2015 से 20.01.2015 तक	10 दिवस	श्री विष्णुप्रपन्नाचार्य, कटरा, अयोध्या
30	21.01.2015 से 31.01.2015 तक	11 दिवस	श्री स्मृति शरण, राघवकुन्ज मन्दिर, अयोध्या
31	01.02.2015 से 10.02.2015 तक	10 दिवस	श्री अजय कुमार पाण्डेय, लवकुशनगर, अयोध्या

भावी योजनाऐं

1. **फेलोशिप योजना-**
   देश और विदेशों में अध्ययनरत शोध छात्र जो पी-एच0डी0 हेतु अनुमन्य हों उनमें इस योजना संचालन किया जायेगा, जिसके माध्यम से रामकथा, रामायण, रामलीला, तुलसी, अयोध्या, अवध आदि से सम्बंधित विभिन्न विषयों पर शोध छात्रों को फेलोशिप प्रदान की जायेगी।
   विश्वविद्यालय में आर0डी0सी0 के माध्यम से संस्थान के उद्देश्यों के आधार पर फेलोशिप स्वीकृत होगी। नियम एवं शर्तें सम्बंधित विश्वविद्यालय की होंगी। संस्थान मात्र आर्थिक सहयोग प्रदान करेगा। नियम एवं शर्तों हेतु कार्यकारिणी की अभिमति से देश और विदेश के विभिन्न विशेषज्ञों की एक समिति का गठन किया गया है जिनके माध्यम से फेलोशिप का चयन किया जायेगा।
2. **व्यास परम्परानुसार**
   रामचरितमानस के आधार पर विद्यालय/महाविद्यालयों में नैतिक शिक्षा पर आधारित व्याख्यान का आयोजन।
3. **रामचरित मानस में विज्ञान पर आधारित माडल निर्माण-**
   रामचरित मानस विश्व का वह अद्भुत ग्रन्थ है, जिसे जितनी बार पढ़ा जाये उतने अर्थ प्राप्त होते हैं। इसी में एक अर्थ है 'रामचरित मानस में विज्ञान'। विभिन्न चौपाईयों में बाबा तुलसी ने विज्ञान की जिन गूढ़ खोजों को सरल शब्दों में व्यक्त किया है उन्हें एक माडल के रूप में प्रस्तुत किया जाना प्रस्तावित है।
   रामचरित मानस की चौपाइयों पर आधारित माडल प्रदर्शनी के लिए स्कूली बच्चों को उपलब्ध कराया जायेगा जो 16वीं शताब्दी में रची गयी चौपाईयों में गूढ़ विज्ञान को आसानी से तथा साहित्यिक रूप से समझ सकेंगे। 3-4 वर्षों में जब कई माडल तैयार हो जायेंगे तब तुलसी संग्रहालय के रूप में इसे एक व्यापक स्वरूप भी प्रदान किया जाना प्रस्तावित है।
4. अयोध्या रिसर्च इंस्टीट्यूट, अयोध्या एण्ड नेशनल काउन्सिल आफ इण्डियन कल्चर त्रिनिडॉड (डब्लू.आई.) के मध्य हुये एम.ओ.यू. के अन्तर्गत सांस्कृतिक आदान-प्रदान एवं रामलीला प्रस्तुति एवं प्रशिक्षण तथा व्यासों के रामकथा विषयक लेक्चर, प्रदर्शनी एवं शोध कार्य, प्रकाशन, हस्तशिल्प संग्रहालय व पुस्तकालय में आपसी समन्वय स्थापित कर कार्यों को संपादित करवाया जाना।
5. स्कूली बच्चों में सॉस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से प्रशिक्षण कार्यशालाओं एवं प्रस्तुतियां करवाया जाना।
6. सांस्कृतिक विरासत का सर्वेक्षण संकलन एवं प्रकाशन कार्य कर विलुप्तप्राय विधाओं का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रकाशन कार्य।
7. यूनेस्कों द्वारा वर्ल्ड हेरिटेज घोषित रामलीला के प्रचार-प्रसार, प्रदर्शनी हेतु विद्यालयों में विभिन्न क्षेत्रों की रामलीला प्रस्तुति के प्रदर्शन, प्रशिक्षण एवं प्रस्तुति।
8. रामलीला विरासत के संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के लिए रामलीला प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन।
9. भारतीय संस्कृति को विदेशों में उपयोग किये जाने के लिए मूल संदर्भों एवं शोध आख्यों का अंग्रेजी भाषा में प्रकाशन।

10. विदेशों में अयोध्या की पारम्परिक रामलीला की प्रस्तुति एवं प्रशिक्षण।
11. संस्थान में संग्रहीत सांस्कृतिक विरासतों के दस्तावेजीकरण को विद्यालय एवं महाविद्यालयों में प्रदर्शन।
12. अयोध्या के प्रमुख तीर्थ एवं ऐतिहासिक स्थलों का पावर-प्वाइंट प्रजेन्टेशन हेतु डी.वी.डी. निर्माण व प्रदर्शन, गाइड बुक का निर्माण।
13. देश के विभिन्न विश्वविद्यालय में संस्थान के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किये गये शोध कार्यो का सर्वेक्षण, संकलन व प्रकाशन।
14. पुस्तकालय का विकास कम्प्यूटरीकृत किये जाने का कार्य तथा विभिन्न पुस्तकालयों से संग्रहीत पुस्तकों की जानकारी हेतु परस्पर समन्वय। पुस्तकालय में दुलर्भ संग्रहित पुस्तकों का रासायनिक उपचार व डिजिटिलाइजेशन।
15. राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन।
16. पुस्तक मेले का आयोजन।
17. रामचरित मानस में डिप्लोमा हेतु पर आधारित पर पाठ्यक्रय अनुमोदित करवाकर डिप्लोमा का क्रियान्वयन।
18. अनवरत रामलीला का उच्च स्तरीय प्रदर्शन।
19. अयोध्या-फैजाबाद की सांस्कृतिक विरास पर पुस्तकमाला का संकलन व प्रकाश काफी टेबुल बुक संकलन व प्रकाशन

उत्तर प्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान, लखनऊ

1. **संस्थान की स्थापना :-**

उत्तर प्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान की स्थापना वर्ष 1990 में संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश के अधीन स्वायत्तशासी संस्था के रूप में की गई है।

2. **संस्थान के उद्देश्य :-**

संस्थान का उद्देश्य भारत के विभिन्न भागों में प्रचलित जैन विधाओं का राष्ट्रीय सन्दर्भ में अध्ययन ततुसंबंधी शोध तथा जैन तीर्थंकरों की सांस्कृतिक महत्व की परम्परा एवं आधारभूत मान्यताओं, मानवीय मूल्यों, कला अवशेषों का संरक्षण एवं विश्लेषण संबंधित निम्नलिखित कार्य करना है।

1. भारत में उपलब्ध जैन विद्या संबंधित सामग्री 1. संकलन 2. शोध कार्य 3. संबंधित ग्रन्थों का क्रियात्मक अध्ययन 4. उपलब्ध सामग्री का भारतीय भाषाओं तथा अंग्रेजी में प्रमाणिक भाषान्तर कार्य आदि।
2. जैन विद्या सामग्री के सुसम्बद्ध अध्ययन हेतु विभिन्न संस्कृति महत्व की परम्परागत मान्यताओं की जानकारी के लिए रचनात्मक कार्य एवं शोध कार्य करना।
3. जैन विद्या संबंधी आधारभूत और मानवीय मूल्यों को जिसे सदियों से भारत में संजोये रखा गया है, इस प्रकार से सुरक्षित रखना ताकि वह नष्ट न हो।
4. जैन विद्या के भारतीय एवं विदेशी विद्वानों के अध्ययन-अध्यापन की सुविधा उपलब्ध कराना जो भारत और विदेशों में प्राप्त जैन विद्या के तुलनात्मक अध्ययन में सहयोगी हो सके।

5. ऐसे अध्येता एवं शोध कार्य विद्वानों को पुरस्कार एवं उपाधि आदि प्रदान करने के लिए शासन एवं विश्वविद्यालयों की सहमति से नियम बनाना और अनुमति प्राप्त करना।
6. जैन विद्या के अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ में ग्रन्थ सूची, समीक्षात्मक अध्ययन, अनुवाद शोध पत्रिका, शब्दकोश आदि ग्रन्थों का प्रकाशन।
7. छात्रवृत्ति, शोध वृत्ति, अध्ययन वृत्ति, यात्रा वृत्ति आदि उपलब्ध कराना।
8. उद्देश्यों के अनुरूप परिचर्चा, चरित्रवाद, परिगोष्ठी, व्याख्यान, सम्मेलन आदि आयोजित करना।
9. संबंधित और संदर्भित ग्रन्थों, पाण्डुलिपियों, माइक्रोफिल्मों आदि का पुस्तकालय स्थापित करना।
10. जैन तीर्थ क्षेत्रों के विभिन्न केन्द्रों में भवनों, घाटों, सरोवरों, कुण्डों और सांस्कृतिक वास्तुकला के महत्व के अन्य स्मारकों/स्थानों का पुर्नस्थापना, सुधार और अनुरक्षण करना।
11. जैन तीर्थ क्षेत्रों पर प्रदूषण की रोकथाम के लिए जिसमें नदी, जल, स्थान, तालाब, सरोवर एवं कुण्ड सम्मिलित है, कार्य करना।
12. जैन तीर्थ क्षेत्रों की मर्यादा पवित्रता और सामान्य स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कार्य करना।
13. जैन तीर्थ केन्द्रों में पर्यटकों की सुविधा के लिए आवास, सड़क और जल परिवहन संबंधित सुविधाओं की व्यवस्था करना।
14. जैन तीर्थ केन्द्रों, प्रतीक दृश्यों का निर्माण उनकी सजावट और प्रकाश पुंज की व्यवस्था करना।
15. संस्थान की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए केन्द्रीय व राज्य सरकारों व्यक्तियों संस्थाओं से दान, अनुदान व अंशदान, भूमि तथा भवन प्राप्त करना जो संस्थान की भावना और उद्देश्यों के प्रतिकूल न हो।
16. संस्थान के आय तथा व्यय का लेखा-जोखा सुनियोजित एवं सही ढंग से रखने की प्रक्रिया निर्धारित करने के लिए नियम बनाना।
17. संस्थान के उद्देश्यों की उपलब्धि के लिये कार्यों को सुविधाजनक ढंग से रखने की प्रक्रिया के उद्देश्य से समितियों एवं उपसमितियों को गठित करना एवं उनके संचालन के लिए आवश्यक और प्रासंगिक नियम बनाना।
18. संस्थान के उद्देश्यों की उपलब्धि के लिए उन सभी कार्यों को सम्पादित करना जो आवश्यक एवं प्रमाणिक हों।

3. संस्थान के क्रिया-कलाप :-

संस्थान के क्रिया-कलापों के अर्न्तगत कवि सम्मेलन, जैन संस्कृति पर आधारित व्याख्यान माला, जैन धर्म पर लघु संगोष्ठी, **"जैन विद्या के विविध आयाम"** नामक विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, अहिंसा एवं पर्यावरण पर संगोष्ठी, विश्व मैत्री दिवस तथा विश्व मैत्री सेवा सम्मान समारोह, पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, आज की समस्याएँ एवं तीर्थंकर महावीर जैन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा पुरस्कार वितरण, भगवान महावीर जयन्ती के उपलक्ष्य में संगोष्ठी,

भजन [illegible] ऑफ बुद्धीज्म एण्ड जैनीज्म इन अवध रीजन एवं हीस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ अवध" नामक विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार आदि का आयोजन कराया जा चुका है।

संस्थान द्वारा शोध योजनाओं के अर्न्तगत जैन दर्शन के ज्ञानमीमांसा सिद्धान्त का समीक्षात्मक अध्ययन नामक शोध योजना का कार्य सम्पन्न हो चुका है। जैन धर्म एवं दर्शन में प्रकाशित ग्रन्थों की सूची नामक शोध योजना का कार्य सम्पन्न हो चुका है।

4. सन्दर्भ पुस्तकालय :-

संस्थान का अपना एक सन्दर्भ पुस्तकालय है जिसमें लगभग 2500 दुर्लभ ग्रन्थ, पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ है। पुस्तकालय में जैन विद्या से संबंधित जैन धर्म दर्शन, कला संस्कृति मूर्ति कला, इतिहास एवं शब्दकोश आदि के सन्दर्भ ग्रन्थ उपलब्ध हैं। संस्थान का यह पुस्तकालय कार्यालय कार्य दिनों में शोधार्थियों एवं जैन विद्वानों के अध्ययनार्थ खुला रहता है।

5. जैन धर्म के प्रमुख तीर्थंकर :-

जैन परम्परा में तीर्थंकरों का वि-ोष महत्व है। तीर्थंकर शब्द तीर्थ से बना है। जिसका तात्पर्य "संसार सागर से पार उतारने वाला" है। जैन धर्म में 24 तीर्थंकर हुए हैं :-

1. ऋषभ देव (आदिनाथ), 2 अजितनाथ, 3. सम्भवनाथ, 4. अभिनंदन, 5. सुमतिनाथ, 6. पद्मप्रभु, 7. सुपार्श्वनाथ, 8. चन्द्रप्रभु, 9. सुविधिनाथ, 10. शीतलनाथ, 11. श्रेयांसनाथ, 12.वासुपूज्य, 13.विमलनाथ, 14.अनन्तनाथ, 15. धर्मनाथ, 16. शान्तिनाथ, 17'-कुंथुनाथ, 18. अरनाथ, 19.मल्लिनाथ, 20. मुनिसुव्रत 21.नेमिनाथ 22. अरिष्टनेमि, 23. पार्श्वनाथ, 24. महावीर।

इन तीर्थंकरों का जैन धर्म के प्रवर्तन, संस्थापना और वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान था।

1. **ऋषभ देवः-** जैन अनुश्रुति के अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे। ऋषभदेव ने ही सर्वप्रथम सभ्यता का पाठ पढ़ाया तथा असि, मसि, शिल्प, वाणिज्य और विद्या नामक छः जीविकाओं की व्यवस्था की थी। वैदिक परम्परा में वेदों से लेकर पुराणों तक इनके नाम का उल्लेख पाया जाता है। सिन्धु सभ्यता से भी ऋषभदेव के प्रतीकों से मिलती-जुलती मुहरें मिलती है।
2. **अजितनाथः-** अजित जैन परम्परा के दूसरे तीर्थंकर माने जाते हैं। इनका जन्म स्थान अयोध्या माना गया है। इन्होंने अपने जीवन के अन्तिम चरण में संन्यास ग्रहण कर 12 वर्ष तक कठिन तपस्या की, तत्प-चात सर्वज्ञ (कैवल्य) बने। अजित को सम्मेद शिखर पर निर्वाण प्राप्त हुआ था।
3. **सम्भवनाथः-** सम्भवनाथ तीसरे तीर्थंकर माने जाते हैं। इनका जन्म स्थान श्रावस्ती नगर माना जाता है। 14 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद श्रावस्ती में शालवृक्ष के नीचे इनको सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त हुआ तथा निर्वाण सम्मेद शिखर पर प्राप्त किया।

4. **अभिनन्दनः-** अभिनन्दन जैन परम्परा के चौथे तीर्थंकर माने जाते हैं। अभिनन्दन के गर्भ में आने के बाद सर्वत्र प्रसन्नता छा गई इसलिए इनका नाम अभिनन्दन रखा गया। अयोध्या में शाल वृक्ष के नीचे आपको कैवल्य प्राप्त हुआ तथा निर्वाण सम्मेद शिखर पर प्राप्त किया।

5. **सुमतिनाथः-** सुमतिनाथ पॉचवें तीर्थंकर माने जाते हैं। 20 वर्षों की कठिन तपस्या के बाद अयोध्या में प्रियंगु वृक्ष के नीचे इनको केवल-ज्ञान प्राप्त हुआ। इनकी निर्वाण स्थली सम्मेद शिखर है।

6. **पद्मप्रभः-** पद्मप्रभ छठें तीर्थंकर हैं। इनका जन्म कौशाम्बी में हुआ था। कौशाम्बी के प्रियंगु (वट) के नीचे केवल-ज्ञान प्राप्त किया। इनकी भी निर्वाण स्थली सम्मेद शिखर है।

7. **सुपार्श्वनाथः-** सुपार्श्वनाथ सातवें तीर्थंकर माने जाते है। सुपार्श्व का लांक्षन स्वस्तिक है। मूर्तियों में सुपा-र्व की पहचान मुख्यतः एक, पॉच, नौ सर्प फणों के त्रिरस्त्राण के आधार पर की गई है। जैन ग्रन्थों में उल्लेख है कि गर्भकाल में सुपार्श्व की माता ने स्वप्न में अपने को एक, पॉच और नौ फणों वाले सर्पों की शय्या पर सोते देखा था।

8. **चन्द्रप्रभः-** आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभ माने जाते हैं। जैन परम्परा के अनुसार गर्भकाल में माता की चन्द्रपान की इच्छा पूर्ण हुई थी और बालक की प्रभा चन्द्रमा की तरह थी, इसी कारण बालक का नाम चन्द्रप्रभ रखा गया। चन्द्रपुरी में नाग वृक्ष के नीचे कैवल्य प्राप्त किया। इनकी निर्वाण स्थली सम्मेद शिखर है। चन्द्रप्रभ का लांक्षन शशि है।

9. **सुविधिनाथ या पुष्पदन्तः-** सुविधिनाथ जैन परम्परा के नवें तीर्थंकर माने जाते हैं। श्वेताम्बर परम्परा में इनके सुविधि और पुष्पदन्त दोनों नामों का उल्लेख मिलता है, परन्तु दिगम्बर परम्परा में केवल पुष्पदन्त नाम का ही उल्लेख मिलता है। सुविधि का लांक्षन मकर है।

10. **शीतलनाथः-** शीतलनाथ दसवें तीर्थंकर हैं। जैन परम्परा में उल्लेख है कि गर्भकाल में नन्दा देवी के स्पर्श से दृढ़स्थ की पीड़ा शान्त हुई थी, इसी कारण बालक का नाम शीतलनाथ रखा गया। इन्हें पीपल वृक्ष के नीचे बोधि-ज्ञान प्राप्त हुआ तथा सम्मेद शिखर पर निर्वाण प्राप्त किया। शीतल का लांक्षन श्रीवत्स है।

11. **श्रेयांसनाथः-** श्रेयांस को ग्यारहवें तीर्थंकर के रूप में माना गया है। इन्होंने दो माह कठोर तपस्या के बाद तिन्दुक (पला-ा) वृक्ष के नीचे कैवल्य प्राप्त किया। श्रेयांस का लांक्षन गेंडा (खड्डी) था।

12. **वासुपूज्यः-** वासुपूज्य बारहवें तीर्थंकर माने जाते हैं। वसुपूज्य का पुत्र होने के कारण इनका नाम वासुपूज्य रखा गया। जैन परम्परा में इनके अविवाहित रूप में दीक्षा ग्रहण करने का उल्लेख है। एक माह की तपस्या के उपरान्त इन्हें चम्पा के उद्यान में पाटल वृक्ष के नीचे कैवल्य प्राप्त हुआ। वासुपूज्य का लांछन महि-ा है।

13. विमलनाथ:- विमल को तेरहवाँ तीर्थंकर माना गया है। जैन परम्परा के अनुसार गर्भकाल में माता तन-मन से निर्मल रहीं, इसी कारण बालक का नाम विमलनाथ रखा गया। इन्होंने जम्बू वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त किया तथा सम्मेद शिखर पर निर्वाण प्राप्त किया।

14. **अनन्तनाथ:-** अनन्तनाथ जैन परम्परा में चौदहवें तीर्थंकर माने गये हैं। अनन्त के गर्भकाल में पिता ने भयंकर शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी, इसी कारण बालक का नाम अनन्त रखा गया। अयोध्या के सहस्राम्र वन में अशोक वृक्ष के नीचे इन्हें कैवल्य प्राप्त हुआ था। इन्होंने सम्मेद शिखर पर निर्वाण प्राप्त किया। श्वेताम्बर परम्परा में अनन्त का लांक्षन श्येन पक्षी और दिगम्बर परम्परा में रीक्ष बताया गया है।

15. **धर्मनाथ:-**धर्मनाथ जैन परम्परा में पन्द्रहवें तीर्थंकर माने गये हैं। गर्भकाल में माता को धर्मसाधन का दोहद उत्पन्न हुआ, इसी कारण बालक का नाम धर्मनाथ रखा गया। इन्होंने जीवन के अन्तिम समय में कठिन तपस्या कर दधिपर्ण वृक्ष के नीचे कैवल्य प्राप्त किया। सम्मेद शिखर इनकी निर्वाण-स्थली है। धर्मनाथ का लांक्षन वज्र है।

16. **शान्तिनाथ:-** शान्तिनाथ जैन परम्परा में सोलहवें तीर्थंकर हैं। जैन परम्परा में उल्लेख है कि शान्तिनाथ के गर्भ में आने के पूर्व हस्तिनापुर नगर में महामारी का रोग फैला था, पर इनके गर्भ में आते ही महामारी का प्रकोप शान्त हो गया। इसी कारण इनका नाम शान्तिनाथ रखा गया। इन्हें नन्दी वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ। सम्मेद शिखर इनकी निर्वाण-स्थली है। शान्तिनाथ का लांक्षन मृग है।

17. **कुन्थुनाथ:-** कुन्थुनाथ को सत्रहवाँ तीर्थंकर माना गया है। जैन परम्परा के अनुसार गर्भकाल में माता ने कुन्थु नाम के रत्नों की राशि देखी थी, इसी कारण बालक का नाम कुंथुनाथ रखा गया। 16 वर्षों की कठिन तपस्या के बाद तिलक वृक्ष के नीचे इन्होंने केवल-ज्ञान प्राप्त किया। सम्मेद शिखर इनकी निर्वाण-स्थली है। कुंथुनाथ का लांक्षन छाग (बकरा) है।

18. **अरनाथ:-** अरनाथ अट्ठारहवें तीर्थंकर माने जाते हैं। गर्भकाल में माता ने रत्नमय चक्र के अर को देखा था, इसी कारण बालक का नाम अरनाथ रखा गया। तीन वर्षों की कठिन तपस्या के बाद गजपुरम् में आम्र वृक्ष के नीचे इनको-ज्ञान प्राप्त हुआ। सम्मेद शिखर इनकी निर्वाण-स्थली है। श्वेताम्बर परम्परा में अर का लांक्षन नन्द्यावर्त है और दिगम्बर परम्परा में इनका लांक्षन मत्स्य है।

19. **मल्लिनाथ:-** मल्लिनाथ उन्नीसवें तीर्थंकर माने जाते हैं। इनकी माता को गर्भकाल में पुष्प शय्या पर सोने का दोहद उत्पन्न हुआ था, इसी कारण बालिका का नाम मल्लि रखा गया। दिगम्बर परम्परा मल्लिनाथ को पुरूष मानती है, क्योंकि पुरूष ही तीर्थंकर हो सकता है, किन्तु श्वेताम्बर आगम साहित्य में यह भी उल्लेख है कि इस काल चक्र में जो विशेष आश्चर्यजनक दस घटनाएँ हुई उनमें मल्लि का स्त्री रूप में तीर्थंकर होना विशेष महत्वपूर्ण है। श्वेताम्बर परम्परा के

अनुसार मल्लि अविवाहित स्त्री थी और दीक्षा के दिन ही उन्हें अशोक वृक्ष के नीचे कैवल्य प्राप्त हुआ। इनकी निर्वाण स्थली सम्मेद पर्वत थी। मल्लि का लांछन कलश है।

20. **मुनिसुव्रतः-** मुनिसुव्रत को बीसवाँ तीर्थंकर माना गया है। गर्भकाल में माता ने सम्यक् रीति से व्रतों का पालन किया इसी कारण बालक का नाम मुनिसुव्रत रखा गया। इन्होंने जीवन की संध्या बेला में राजगृह में चम्पक वृक्ष के नीचे कठोर तपस्या करके कैवल्य प्राप्त किया। सम्मेद शिखर इनकी निर्वाण स्थली है। जैन परम्परा के अनुसार राम (पद्म) एवं लक्ष्मण (वासुदेव) मुनि सुव्रत के समकालीन थे। मुनिसुव्रत का लांछन कूर्म है।

21. **नेमिनाथः-** नेमिनाथ इक्कीसवें तीर्थंकर माने जाते है। जब नेमि गर्भ में थे उसी समय शत्रुओं ने मिथिला नगरी को घेर लिया। वप्रा ने जब राजप्रासाद से शत्रुओं को देखा तो शत्रु शासक का विचार बदल गया और वह विजय के समक्ष नतमस्तक हो गया। इन्होंने मिथिला में कठिन तपस्या किया और कैवल्य प्राप्त किया। नेमि का लांछन नीलोत्पल है। नेमि को सम्मेद शिखर पर निर्वाण प्राप्त हुआ था।

22. **अरिष्टनेमिः-** जैन परम्परा में अरिष्टनेमि को बाइसवाँ तीर्थंकर माना गया है। शिवा के गर्भ धारण के बाद समुद्रविजय सभी प्रकार के अनिष्टों से बचे थे तथा गर्भावस्था में शिवा ने अरिष्टनेमि का दर्शन किया था, इसी कारण बालक का नाम अरिष्टनेमि रखा गया। अरिष्टनेमि का निर्वाण स्थल उज्जयंतगिरि है। इनका लांछन शंख है।

23. **पार्श्वनाथः-** तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के समय में जैन धर्म का सुव्यवस्थित रूप सामने आता है। 30 वर्ष की आयु में पार्श्वनाथ गृहस्थ जीवन को त्यागकर तपस्या में लीन हो गये। 83 दिनों तक कठिन तपस्या के उपरान्त 84 वें दिन उन्हें सम्मेद पर्वत पर कैवल्य प्राप्त हुआ और वह तीर्थंकर हो गए, इसके पश्चात् लगभग 50 वर्षों तक श्रावस्ती, साकेत, कौशाम्बी, राजगृह, हस्तिनापुर आदि नगरों में भ्रमण करते हुए धर्मोपदेश करते रहे। 100 वर्ष की पूर्ण आयु में महावीर के देहावसान से लगभग 250 वर्ष पहले इनकी मृत्यु हो गयी।

24. **महावीरः-** महावीर का जन्म लगभग 599 ई0पू0 में वैशाली के निकट स्थित कुण्डग्राम (मुजफ्फरपुर, बिहार) में हुआ था। इनका प्रारम्भिक नाम वर्द्धमान था और उनका अधिक प्रचलित नाम महावीर देवताओं द्वारा रखा गया था। माता-पिता के मृत्यु के बाद बड़े भाई नन्दिवर्धन की अनुमति प्राप्त कर 30 वर्ष की आयु में महावीर ने गृह त्याग दिया। 13 महीने तक सन्यासी जीवन व्यतीत करने के पश्चात् उनके वस्त्र जीर्ण होकर शरीर से गिर गये और नग्न घूमने लगे। वस्तुतः उन्होंने वस्त्रों का पूर्ण रूप से परित्याग कर दिया और दिगम्बर वेश अपना लिया। 12 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद 13वें वर्ष ऋजुपालिका नदी के तट पर शालवृक्ष के नीचे उन्हें कैवल्य (ज्ञान) प्राप्त हुआ, और वे जिन (अपनी इन्द्रियों और विषय वासनाओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करने वाले), निर्ग्रन्थ (बन्धनों से रहित), केवलिन (सर्वज्ञ) तथा अर्हत (योग्य) हो गये। महावीर ने अपना 30 वर्षों का शेष सम्पूर्ण जीवन धर्म-प्रचारक के रूप

में व्यतीत किया। 72 वर्ष की आयु में 527 ई0पू0 में पावा (पटना, बिहार) नामक स्थान पर उनकी मृत्यु हो गयी।

6. <u>प्रमुख जैन तीर्थ स्थल :-</u>

1. **अयोध्या:-** जैन परम्परा के अनुसार यहाँ सात कुलकरों तथा ऋषभदेव आदि पाँच तीर्थंकरों का जन्म हुआ इसलिए इस नगरी को जैन तीर्थ के रूप में जाना जाता है। बुद्ध और महावीर के समय अयोध्या को साकेत के रूप में जाना जाता था।

2. **अहिच्छत्रा:-** अहिच्छत्रा की पहचान उ0प्र0 के बरेली जिले की ऑवला तहसील में स्थित रामनगर नामक स्थान से की जाती है। जिन प्रभसूरि ने यहाँ पार्श्वनाथ के प्राचीन चैत्य का वर्णन किया है।

3. **काम्पिल्य:-** काम्पिल्य की पहचान उ0प्र0 के फर्रूखाबाद जिले के अर्न्तगत कायमगंज रेलवे स्टेशन के समीप स्थित काम्पिल नामक स्थान से की जाती है। तेरहवें तीर्थंकर विमलनाथ का जन्म यहीं पर हुआ था।

4. **कौशाम्बी:-** कौशाम्बी वत्स जनपद की राजधानी थी। इसकी पहचान उ0प्र0 के इलाहाबाद से दक्षिण-पश्चिम स्थित कोसम नामक स्थान से की जाती है। छठें तीर्थंकर पद्मप्रभु का जन्म, दीक्षा एवं केवल ज्ञान यहीं पर हुआ।

5. **प्रयाग:-** प्रयाग उ0प्र0 के गंगा-यमुना के संगम पर स्थित है। यहाँ पर ऋषभदेव एवं शीतलनाथ के चैत्यालय है।

6. **मथुरा:-** उ0प्र0 में स्थित मथुरा शूरसेन जनपद की राजधानी थी। यहाँ एक स्तूप एवं दो मंदिरों के खण्डहर प्राप्त हुए है।

7. **वाराणसी:-** यह उ0प्र0 में स्थित काशी जनपद की राजधानी थी। सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ एवं तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म यहीं पर हुआ था।

8. **श्रावस्ती :-** यह उ0प्र0 के बलरामपुर बहराइच रोड पर स्थित है। यहाँ तीसरे तीर्थंकर सम्भवनाथ का जन्म हुआ था। महावीर स्वामी ने भी यहाँ पर कई यात्राएँ की थी।

9. **हस्तिनापुर :-** यह कुरू जनपद की राजधानी थी। यह उ0प्र0 के मेरठ जिले में स्थित है। यहाँ सोलहवें तीर्थंकर शान्तिनाथ, सत्तरहवें कुन्थुनाथ एवं अट्ठारहवें तीर्थंकर अरनाथ का जन्म हुआ था।

10. **कुण्डग्राम :-** यह प्राचीन कालीन वैशाली का उपनगर था। इसकी पहचान बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बसाढ़ नामक स्थान से की जाती है। भगवान महावीर का जन्म यहीं पर हुआ था।

11. **चम्पा :-**बिहार के भागलपुर जिले में स्थित है। आज भी यह चम्पा के नाम से जानी जाती है। बारहवें तीर्थंकर वासुपूज्य का जन्म यहाँ हुआ था।

12. **पाटलिपुत्र :-**बिहार राज्य की राजधानी पटना प्राचीन कालीन पाटलिपुत्र ही है। यहाँ श्वेताम्बर तथा पाँच दिगम्बर जिनालय विद्यमान है। यहाँ स्थूलभद्र के स्मारक भी है।

13. **पावापुरी :-** यह जैनों का अत्यन्त प्रसिद्ध तीर्थ है। चौबीसवें तीर्थंकर महावीर का निर्वाण पावापुरी में ही हुआ था। यह बिहार राज्य के नालन्दा जिले में स्थित है।

14. मिथिला :- उन्नीसवें तीर्थंकर मल्लि एवं इक्कीसवें तीर्थंकर नेमिनाथ का जन्म यहीं पर हुआ था। मिथिला की पहचान बिहार के दरभंगा जिले के उत्तर में, नेपाल की सीमा पर स्थित आधुनिक जनकपुर नामक कस्बे से की जाती है।

15. सम्मेत शिखर :- यह बिहार के हजारीबाग जिले में स्थित है। यहाँ पर जैनियों के 24 तीर्थंकरों में से 20 को निर्वाण प्राप्त हुआ है।

16. चन्देरी :- यह मध्य प्रदेश के गुना जिले में बेतवा नदी पर स्थित है। यहाँ पर तीन जैन मंदिर है।

17. करहेटक :- यह राजस्थान के उदयपुर चित्तौड़ रेलवे मार्ग पर करेड़ा के समीप स्थित है। यहाँ पार्श्वनाथ का प्राचीन जिनालय हैं।

18. नन्दिवर्धन :- यह राजस्थान के सिरोही जिले में स्थित है। यहीं भगवान महावीर का एक जिनालय विद्यमान है।

19. सत्यपुर :- यह आजकल सांचोर नाम से जाना जाता है। यह राजस्थान प्रान्त के जोधपुर के दक्षिण पश्चिम में स्थित है। यहाँ पाँच जिनालय है।

20. उर्जयन्तगिरि :- वर्तमान में गिरनार नाम से जाना जाता है। यह गुजरात में स्थित है। इक्कीसवें तीर्थंकर नेमिनाथ के अन्तिम तीन कल्याणक दीक्षा, केवल ज्ञान एवं निर्वाण यहीं पर हुआ था।

21. काशहृद :- इसकी पहचान गुजरात राज्य के अहमदाबाद के दक्षिण-पश्चिम में स्थित 'कासींदरा' नामक स्थान से की जाती है। यहाँ कादिनाथ का प्रसिद्ध जिनालय था।

22. तारण :- यह गुजरात के मेहसाणा जिले में स्थित है। यहाँ श्वेताम्बर एवं दिगम्बर दोनों सम्प्रदायों के जिनालय है।

23. प्रभासपाटन :- इसकी पहचान गुजरात में स्थित सोमनाथ से की जाती है। यहाँ पर भगवान चन्द्रप्रभ के जिनालय स्थित है।

24. मोढेरक :- मोढेरक की पहचान गुजरात राज्य के मेहसाणा जिले में स्थित मोढेरा नामक स्थान से की जाती है। यहाँ पर महावीर स्वामी का जिनालय है।

25. वलभी :- वलभी की पहचान गुजरात राज्य के भावनगर जिले में स्थित वला नामक स्थान से की जाती है। यहाँ पार्श्वनाथ का जिनालय विद्यमान है।

26. सिंहपुर :- यहाँ अजितनाथ, कुन्थुनाथ एवं पार्श्वनाथ के जिनालय विद्यमान है। इसकी पहचान गुजरात राज्य के भावनगर जिले में स्थित सिंहोर नामक स्थान से की जाती है।

27. कोल्हापुर :- यह महाराष्ट्र का प्रमुख नगर है। यहाँ पर तीन जिनालय विद्यमान है। यहाँ के आचार्य जिनसेन भारकप्राचार्य अपने शिष्यों के साथ श्रवणबेलगोला चले गये जिसके, परिणामस्वरूप इस तीर्थ का महत्व कम हो गया।

28. प्रतिष्ठान :- इसकी पहचान महाराष्ट्र प्रान्त के औरंगाबाद जिले में स्थित पैठन नामक स्थान से की जाती है। यहाँ 52 वीरों का स्थान है। जिससे यह वीर क्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध है।

29. श्रीपुर :- महाराष्ट्र राज्य के अकोला जिले में सिरपुर नामक स्थान पर स्थित है। यहाँ पार्श्वनाथ स्वामी का जिनालय है।

30. गोम्मटेश्वर :- कर्नाटक के श्रवणवेलगोला में स्थित गोम्मट प्रतिमा को गंग नरेश के सेनापति चामुण्ड राय द्वारा निर्मित कराया गया था। यह दिगम्बर जैनों का भी एक प्रमुख तीर्थ है।

7. योजनाएँ एवं परियोजनाएँ :-

1. **जैन दर्शन के ज्ञानमीमांसा सिद्धान्त का समीक्षात्मक अध्ययन नामक परियोजना के विभिन्न अंश निम्नलिखित है :-**

   1. जैन दर्शन की उत्पत्ति एवं विकास।
   2. जैन दर्शन का ज्ञानमीमांसा सिद्धान्त।
   3. प्रमाण का विश्लेषण।
   4. केवल ज्ञान।
   5. प्रत्यक्ष प्रमाण।
   6. परोक्ष प्रमाण।
   7. प्रमाण, नय और निक्षेप।
   8. अनुमान।
   9. उपसंहार।

2. **जैन धर्म, दर्शन कला आदि विषयों की पुस्तकों एवं पत्रिकाओं की संक्षेपिका निम्नलिखित खण्ड में विभक्त कर तैयार की गयी है:-**

   1. प्रथम खण्ड में जैन एवं दर्शन से संबंधित मूल ग्रन्थों की संक्षेपिका उनके प्रकाशक का नाम व पता, प्रकाशन का स्थान, प्रकाशन का वर्ष, आदि के विवरण के साथ है।
   2. द्वितीय खण्ड में जैन धर्म एवं दर्शन से संबंधित आधुनिक ग्रन्थों की संक्षेपिका, उनके लेखक का नाम, प्रकाशक का नाम व पता, प्रकाशन का स्थान, प्रकाशन का वर्ष आदि के साथ है।
   3. तृतीय खण्ड में विभिन्न शोध पत्र-पत्रिकाओं में जैन धर्म के विषयों से संबंधित लेखों की संक्षेपिका प्रस्तुत है।
   4. चतुर्थ खण्ड में विभिन्न रिपोर्ट की सूची प्रस्तुत है।

8. प्रकाशन :-

1. संस्थान के जैन विद्या नामक जर्नल में निम्नलिखित शोध पत्र प्रकाशित किये गये:-

1.	जैन विद्या की अध्ययन की तकनीक	सागरमल जैन
2.	सर्वोदय भाव-भूमि पर अनेकान्तवाद	फूलचन्द जैन प्रेमी
3.	भारत तथा विदेशों में जैन विद्या का अध्ययन : एक दृष्टि	गोकुल चन्द्र जैन

4.	शरीर में अतीन्द्रिय ज्ञान के स्थान	समणी नियोजिका मंगल प्रज्ञा
5.	वाङ्मय में प्रतिहार्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	धर्मचन्द्र जैन
6.	उत्तराध्ययन में रंग चिकित्सा पद्धति	समणी सन्मतिप्रज्ञा
7.	जैन संस्कृति एवं प्रोंत व्याकरण	राम सागर मिश्र
8.	जैन दर्शन का वैशिष्ट्य	विजय कुमार जैन
9.	प्रोंत के मुक्तक एवं खण्डकाव्य	सुदर्शन लाल जैन
10.	भगवान महावीर के नामों का विवेचन	हरिशंकर पाण्डेय
11.	अकलंकदेवते आप्तमीमांसाभाष्य एवं लघीयस्त्रय के उद्धरणों का अध्ययन	कमलेश कुमार जैन
12.	बीसवीं शताब्दी की जैन सस्कृति रचनाऐं उनका वैशिष्ट्य और प्रदेय	भागचन्द्र जैन "भागेन्दु"
13.	जैन योग और प्रदेय	शिवबहादुर सिंह
14.	काशी की जैन मूर्तियाँ	कमल गिरि
15.	द जैन स्तूप ऑफ वड्डामनु ए केस स्टडी	एम0 एल0 निगम
16.	जैन आइकोनोग्राफी इन कुषाण एज	मारूति नन्दन पी0 डी0 तिवारी
17.	जैन स्कल्पचर्स फ्राम हरियाणा	एस0 पी0 शुक्ला
18.	जैन आर्किटेक्चर एण्ड स्कल्पचरल आर्ट अण्डर द प्रतिहाराज	बृजेश शुक्ला
19.	द कलेक्टिव रिप्रेजेन्टेशन ऑफ आस्था मांगलिक मोटिफस इन इण्डियन आर्ट	ए0 एल0 श्रीवास्तव
20.	नेमिनाथ, इन सेन्ट्रल इण्डियन आर्ट	अमर सिंह
21.	ए कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ जैन एण्ड नान-जैन इलस्टेसन्स ऑफ फिफ्टीन सेन्चुरी इन द वेस्टर्न इण्डियन स्टाइल	रश्मि कला अग्रवाल
22.	आस्पेक्ट ऑफ ट्रेड एज ग्लीनेड फ्राम जैन वर्क्स आफ टेन्थ सेन्चुरी	श्याम मनोहर मिश्र

2. जैन, बौद्ध योग दर्शन तथा योग चिकित्सा विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार कराया गया। जैन विद्वानों द्वारा प्रस्तुत निम्नलिखित शोध पत्रों का प्रकाशन किया गया :-

1.	भारतीय दर्शन का साधना पक्ष योग	डा0 अशोक कुमार सिंह दर्शनशास्त्र, विभाग, रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।
2.	बुद्धिस्ट योग में साधना और उसका पर्यावरण संरक्षण में महत्व	डा0 संजय कुमार पाण्डेय पर्यटन विभाग, (भूगोलविभाग) दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय,गोरखपुर।
3.	हृदय की धमनियों के सुधार में योग क्रिया का महत्व	डा0 अमरजीत यादव प्रवक्ता, योग एवं प्रोंतिक विभाग,लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
4.	बौद्ध नीति एवं उसका नैतिक प्रभाव	डा0 कंचन सक्सेना दर्शनशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
5.	विज्ञप्ति मात्रता-एक मात्र सत्	डा0 रजनी श्रीवास्तव प्रवक्ता, दर्शनशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
6.	जैन धर्म में योगतत्व	डा0 ईश्वर भारद्वाज प्रो0 एवं अध्यक्ष, मानव चेतना एवं योग विज्ञानविभाग, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तरॉचल
7.	पांतजल योग सूत्र के अनुसार समाधि	प्रो0 सुरेश वर्णवाल, योग विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्री कुंज शान्तिकुंज, हरिद्वार (उत्तरांचल)
8.	चाइनीज बुद्विस्ट योग का मानसिक एवं अध्यात्मिक प्रभाव	डॉ0 राहुल राज काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
9.	बौद्ध धर्म एवं चिकित्सा विज्ञान	डॉ0 रेणु शुक्ला वरिष्ठ प्रवक्ता, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग कन्या गुरूकुल महाविद्यालय, देहरादून
10.	बौद्ध धर्म का मानव विकार में योगदान	डॉ0 मोहित टण्डन दर्शनशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

11.	विपश्यनाः बौद्ध साधना की प्रक्रिया	डॉ0 सुभाष चन्द्र प्रवक्ता, दर्शन शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
12.	जैन योग में ध्यान विषयक अवधारणा	डॉ0 जय प्रकाश शाक्य विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग,शासकीय महाराजा महाविद्यालय,छतरपुर(म0प्र0)
13.	जैन दर्शन एवं अहिंसा का सम्प्रत्यय	डॉ0 राजेश्वर प्रसाद यादव प्रवक्ता, दर्शनशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
14.	योग-साधना का ऐतिहासिक परिदृश्य	डॉ0 अमर सिंह रीडर, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
15.	जैन योग में ध्यान साधना	डॉ0 राकेश सिंह, आचार्य नरेन्द्र देव अ0 बौद्ध विद्या शोध संस्थान, गोमतीनगर, लखनऊ
16.	योग और चिकित्सा	डॉ0 धीरेन्द्र सिंह,आचार्य नरेन्द्र देव अ0 बौद्ध विद्या शोध संस्थान, गोमतीनगर, लखनऊ
17.	बौद्ध एवं जैन धर्म में योग साधना	भिक्षु (डॉ0) जूलम्पिटिये पुन्नासार थेरो आचार्य नरेन्द्र देव अ0 बौद्ध विद्या शोध संस्थान, गोमतीनगर, लखनऊ

9. वित्तीय वर्ष 2014-15 में संस्थान के सम्पन्न एवं प्रस्तावित कार्यक्रमों का विवरणः-

1. 20 जुलाई, 2014 को वीर शासन जयन्ती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न।
2. 10 सितम्बर, 2014 को ''विश्वमैत्री दिव'' एवं ''विश्व मैत्री सेवा सम्मान समारोह'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न।
3. 12 अक्टूबर, 2014 को श्रमण संस्कृति एवं पर्यावरण विषय पर संगोष्ठी सम्पन्न।
4. 31 जनवरी 2015 को संस्थान के स्थापना दिवस के अवसर पर बच्चों की निबन्ध एवं भाषण प्रतियोगिता प्रस्तावित।
5. मार्च 2015 को ऋषभदेव जयन्ती के अवसर पर राष्ट्रीय सेमिनार प्रस्तावित।

10. वित्तीय वर्ष 2015-16 में संस्थान के प्रस्तावित कार्यक्रमों का विवरणः-

1. 02 अप्रैल, 2015 को महावीर जयन्ती के अवसर पर राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रस्तावित।

2. 01 अगस्त, 2015 को वीर शासन जयन्ती के उपलक्ष्य में संगोष्ठी प्रस्तावित।
3. 29 सितम्बर, 2015 विश्व मैत्री दिवस एवं विश्वमैत्री सेवा सम्मान समारोह पर राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रस्तावित।
4. 31 जनवरी, 2016 को संस्थान के स्थापना दिवस के अवसर पर बच्चों की निबन्ध एवं भाषण प्रतियोगिता प्रस्तावित।
5. मार्च, 2016 को ऋषभदेव जयन्ती के अवसर पर संगोष्ठी प्रस्तावित।

जनजाति एवं लोक कला संस्कृति संस्थान, लखनऊ

उत्तर प्रदेश के जनजातीय एवं लोक संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रदर्शन हेतु जनजाति एवं लोक कला संस्कृति संस्थान की स्थापना सन् 1996 में की गयी थी, जिसके द्वारा लोक संस्कृति की लुप्त होती विधाओं को मंच प्रदान करना, इनसे सम्बंधित सर्वेक्षण/दस्तावेजीकरण आदि का महत्वपूर्ण कार्य किया जाता है। संस्थान द्वारा नियमित मासिक श्रृंखला का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष संस्थान द्वारा लुप्तप्राय कलारूपों तथा लोक संस्कृति के विविध पक्षों का सर्वेक्षण एवं दस्तावेजीकरण प्राथमिकताओं पर रहा है:-

उद्देश्यः

1. उ0प्र0 की लोक और जनजाति कलाओं एवं शिल्पों का संयोजन एवं विकास।
2. लोक कलाओं, संस्कृति एवं शिल्प के क्षेत्र में शोध का विकास एवं बढ़ावा देना, इसके लिए पुस्तकालय, अभिलेखागार, संग्रहालय, पुस्तकों, टेपरिकार्ड्स आदि स्थापित करना।
3. लोक कलाओं, संस्कृति एवं शिल्प विकास हेतु भारत की अन्य संस्थाओं एवं विदेश से सहयोग।
4. विभिन्न क्षेत्रों की लोक एवं जनजाति कला, संस्कृति, शिल्प की तकनीक एवं आदर्शों का आदान-प्रदान।
5. ऐसी संस्थाओं की स्थापना को बढ़ावा जो लोक एवं जनजाति कला, शिल्प एवं संस्कृति के संरक्षण तथा विकास हेतु प्रशिक्षण देना।
6. लोक एवं जनजाति कला, शिल्प एवं संस्कृति के क्षेत्र में सर्वेक्षण, अभिलेखीकरण एवं प्रचार को बढ़ावा देना।
7. लोक एवं जनजाति कला, शिल्प एवं संस्कृति के क्षेत्र में सेमिनार कार्यशाला का आयोजन तथा शोध एवं सर्वेक्षण हेतु अनुदान देना।
8. जनजाति एवं लोक कला का कार्य संगीत, नृत्य एवं नाटक, त्योहारों तथा शिल्प मेलों को राज्य तथा राज्य के बाहर प्रायोजित करना।

वर्ष 2014-15 में संस्थान के सम्पन्न कार्यक्रमों का विवरणः

क0	विवरण
1.	महारानी दुर्गावती के 450वाँ बलिदान दिवस के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन
2.	विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन
3.	बुन्देलखण्ड में लुप्त होती सांस्कृतिक विधाओं को पुनर्जीवन करने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम, विजना, झाँसी
4.	भारतरत्न श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की 110 वीं जयन्ती समारोह
5.	क्षेत्रीय संस्कृति पर आधारित कार्यक्रम 'लोक-लय', लखनऊ 15 नवम्बर, 2014
6.	बिरहा उत्सव, वाराणसी दिनांक 22 एवं 23 नवम्बर, 2014
7.	लोक नाट्य प्रस्तुतिपरक कार्यशाला (लोरिकायन), सोनभद्र
8.	थारू जनजाति पर सास्कृतिक कार्यक्रम, गोण्डा
9.	क्षेत्रीय संस्कृति पर आधारित कार्यक्रम 'लोक-लय', लखनऊ दिनांक 20 जनवरी, 2015

वर्ष 2015-16 के प्रस्तावित कार्यक्रम

क्र0	विवरण
1.	लोक सांस्कृतिक चौपाल
2.	प्रस्तुतिपरक लोक नृत्य/गायन की कार्यशाला
3.	क्षेत्रीय अंचलों के लोक कलाओं के कार्यक्रम
4.	पारम्परिक विधाओं के संरक्षण हेतु गोष्ठी/पाक्षिक एवं मासिक कार्यक्रम
5.	पत्रिका आदि का प्रकाशन
6.	लोक कला का सर्वेक्षण एवं संवर्धन

राष्ट्रीय कथक संस्थान, लखनऊ

वित्तीय वर्ष 2014-2015 में अब तक किये गये कार्यकलापों का विवरण

राष्ट्रीय कथक संस्थान की स्थापना संस्कृति विभाग के अन्तर्गत स्वायत्तशासी संस्थान के रुप में वर्ष 1988-89 में हुई थी। संस्थान का उद्देश्य राष्ट्रीय स्तर पर कथक के विविध घरानों की परम्पराओं का अभिलेखीकरण, युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहन, वरिष्ठ कलाकारों का संरक्षण, कथक नृत्य का संवर्द्धन एवं लुप्त हो गये व नवीन पक्षों पर शोध और कथक संग्रहालय की स्थापना है।

1. कथक एवं कथक की पूरक विधाओं का शिक्षण

राष्ट्रीय कथक संस्थान द्वारा कथक की शिक्षा प्रदान करने के लिए वर्ष 2001 से कथक अभिरूचि पाठ्यक्रम में शैक्षिक एवं आयु अर्हताओं को पूर्ण करने वाले वित्तीय वर्ष 2014-2015 में 6 से 28 वर्ष तक की लगभग 428 छात्र/छात्राओं को प्रवेश देकर संस्थान द्वारा कथक एवं कथक की पूरक विधाओं (गायन, तबला, हारमोनियम एवं सिन्थेसाइज़र) की अभिरूचि पाठ्यक्रम से लेकर स्नातक तक का शिक्षण एवं परीक्षा आयोजित की गयी। इसके अतिरिक्त संस्थान द्वारा उपरोक्त विधाओं में प्रथमा, मध्यमा, विशारद एवं निपुण का शिक्षण एवं परीक्षाएँ आयोजित की गयी।

2. मासिक कथक संध्या

राष्ट्रीय कथक संस्थान द्वारा वर्ष 2001 से प्रत्येक माह के तृतीय शुक्रवार को अनवरत कथक संध्या का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें प्रतिभावान उद्दीयमान नवोदित एवं वरिष्ठ कलाकारों को अपनी प्रतिभा दर्शाने का सुनहरा अवसर प्रदान किया जाता है। चालू वित्तीय वर्ष 2014-2015 में की गई कथक संध्याओं का विवरण इस प्रकार है-

क्र0	दिनांक	कलाकारों का नाम
1.	18.04.2014	राष्ट्रीय कथक संस्थान, लखनऊ।
2.	16.05.2014	सुश्री समीक्षा शर्मा, दिल्ली।
3.	20.06.2014	सुश्री दिप्ती गुप्ता एवं श्री करन गंगानी, दिल्ली।
4.	18.07.2014	सुश्री मोनालिसा कुन्डु, कोलकाता।
5.	15.08.2014	सुश्री आरूषी पोखरियाल एवं श्री वरूण बनर्जी, देहरादून।
6.	19.09.2014	राष्ट्रीय कथक संस्थान, लखनऊ।
7.	18.10.2014	सुश्री ऋचा श्रीवास्तव, मुम्बई।
8.	15.11.2014	सुश्री मीनू गारू एवं श्री बिल्टू सरकार, नई दिल्ली।

9.	20.12.2014	श्री सुरेन्द्र सैकिया एवं सुश्री रेनू श्रीवास्तव, लखनऊ।
10.	16.01.2014	सुश्री दीपमाला सचान एवं समूह, लखनऊ।

4. कथक शिक्षण प्राप्त कर रही छात्राओं की वार्षिक प्रस्तुति 'रुनझुन'

कथक प्रशिक्षण प्राप्त कर रही छात्राओं का मंच के प्रति आत्मविश्वास जागृत करने तथा उन्हें प्रस्तुतिकरण के प्रति जागरुक बनाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 'रुनझुन' कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। चालू वित्तीय वर्ष 2014-2015 में दिनांक 30 मई, 2014 को रुनझुन कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय रवीन्द्रालय प्रेक्षागृह, लखनऊ में किया गया, जिसके अन्तर्गत लगभग 150 बच्चों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

5. संगीत संगम (कथक की पूरक विधाओं का शिक्षण प्राप्त कर रहे शिक्षार्थियों की वार्षिक प्रस्तुति)राष्ट्रीय कथक संस्थान द्वारा कथक की पूरक विधाओं की वार्षिक कार्यशाला के समापन पर 'संगीत संगम' नामक कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, जिसका उद्देश्य प्रशिक्षार्थियों की प्रतिभा को निखारना एवं उन्हें मंच के प्रति जागरुक बनाना हैं। चालू वित्तीय वर्ष 2014-2015 में दिनांक 23 मई, 2014 को संगीत संगम कार्यक्रम का आयोजन राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग, लखनऊ में किया गया, जिसके अन्तर्गत लगभग 75 बच्चों ने अपनी प्रतिभा का सफल प्रदर्शन किया।

6. प्रादेशिक कथक आयोजन

राष्ट्रीय कथक संस्थान द्वारा प्रदेश के विभिन्न मण्डलों में कथक के प्रति अभिरुचि जागृत करने का प्रयास किया जाता है। जिसके अन्तर्गत अब तक निम्न स्थानों पर प्रादेशिक कथक आयोजन कराये गये।

दिनांक 18 जून, 2014 को आई0टी0आई0, ऑफीसर्स क्लब, रायबरेली।
दिनांक 17 जुलाई, 2014 को हिन्दुस्तान पेट्रोलियम प्रेक्षागृह, आगरा।
दिनांक 30 सितम्बर, 2014 को सिविल लाईन, इलाहाबाद।
दिनांक 04 अक्टूबर, 2014 को दारा नगर, कौशाम्बी।
दिनांक 20 अक्टूबर, 2014 को देवां महोत्सव, देवां, बाराबंकी।
दिनांक 21 नवम्बर, 2014 को मो0अ0जौ0 विश्वविद्यालय परिसर, रामपुर।

7. अन्तर्राज्यीय कथक संवर्धन 'परस्पर'

उत्तर प्रदेश की एकमात्र शास्त्रीय नृत्य विधा 'कथक' का अन्य राज्यों से परस्पर समन्वय कराते हुए उत्तर भारत के एकमात्र शास्त्रीय नृत्य का राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार एवं संवर्धन संस्थान की गतिविधियों में शामिल है। गत वर्षों में दिल्ली, बिहार, पश्चिमी बंगाल, मध्य प्रदेश के कलाकारों से प्रदेश के कलाकारों का 'परस्पर' कथक नृत्य आयोजन के तहत सामन्जस्य कराया गया। इसके द्वारा प्रदेश के कथक कलाकार अन्य प्रदेशों के कलाकारों की नृत्य परम्पराओं की व्यापकता, शास्त्रीयता एवं मौलिक प्रयोगों का आदान-प्रदान कर सके और साथ ही उन्होंने अन्य प्रदेशों के कलाकारों की विशिष्ट कला तकनीकों को समझा, उन्हें अपनी कला सूक्ष्मता से परिचित कराया और अन्य स्थानों की कलाओं को ग्राह्य करने का प्रयास करते हुए आपसी तालमेल स्थापित कराया गया। उस प्रकार दिनांक 23 जुलाई, 2014 को कथक नृत्य, दिल्ली में अन्तर्राज्यीय कथक संवर्धन 'परस्पर' सम्पन्न कराया गया।

8. सांस्कृतिक संध्या 'क्षितिज'

वर्ष 2014-2015 में आई0सी0सी0आर0 एवं राष्ट्रीय कथक संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में क्षितिज श्रृंखला का आयोजन प्रत्येक माह की द्वितीय शुक्रवार को किया जाता है, उक्त क्रम में माह जनवरी, 2015 तक कार्यक्रम सम्पन्न करा दिये जा चुके हैं।

9. कथक प्रवाह

''कथक प्रवाह'' के अन्तर्गत कथक की विशेषताओं को संरक्षित रखने हेतु प्रदेश स्तरीय कथक संवर्धन किया जाता है। इससे कथक की छात्राऐं एवं युवा कलाकार कथक के तकनीकी पक्ष एवं बारीकियों को समझ पाते हैं। जिससे उत्तर भारत के एकमात्र शास्त्रीय नृत्य ''कथक'' की लोकप्रियता बनी रहे। इसी उद्देश्य से निम्नवत् प्रस्तुतिऐं सम्पन्न करायी गयीः-

क्र0	दिनांक	कार्यक्रम	स्थान
1.	01.05.14	कथक नृत्य 'ओम्' एवं 'सरगम'	राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह लखनऊ।
2.	12.08.14	कथक पाकीज़ा	राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह लखनऊ।
3.	24.08.14	कथक नृत्यनाटिका 'ईदगाह'	सी0एम0एस0, कानपुर रोड़ लखनऊ।
4.	12.11.14	सरस्वती वन्दना एवं कथक नृत्यनाटिका 'आवाह्न'	मछली विभाग,लखनऊ।
5.	18.11.14	कथक नृत्यनाटिका 'रानी झांसी की अमर कहानी'	विश्वेश्वरैया प्रेक्षागृह, लखनऊ।
6.	14.12.14	कथक नृत्य	सी0एम0एस0, गोमती नगर विस्तार, लखनऊ।

10. राष्ट्रीय कथक समारोह 'विरासत' (किसी विशिष्ट विषय को आधार बनाते हुए प्रतिवर्ष एक नवीन अवधारणा पर आधारित मौलिक प्रयास)

कथक मानवता का सुन्दर सन्देश पहुँचाने वाली नृत्य विधा है। नृत्य के माध्यम से समाज में जागरुकता लाने की दृष्टि से कथक संस्थान ने एक मौलिक प्रयास किया, जिसके अन्तर्गत एक नई विचारधारा, अवधारणा एवं नए सोच के साथ राष्ट्रीय कथक समारोह-'विरासत' की परिकल्पना की गई जिसे प्रतिवर्ष प्रदेशवासियों के समक्ष आयोजित किया जाता है। वित्तीय वर्ष 2014-15 में इस कार्यक्रम की अवधारणा **''गंगा जमुनी तहज़ीब''** रही। जिसके अन्तर्गत निम्नवत प्रस्तुतियों का प्रदर्शन किया गया-

क्र0	दिनांक	प्रदर्शित की गई प्रस्तुति का नाम	प्रस्तुति प्रदर्शित करने वाले कलाकार
1.	10.12.2014	1. 'नटवरी कथक नृत्य' 2. इज़्म	श्री विशाल कृष्ण, वाराणसी सुश्री समीक्षा शर्मा अरूण, नई दिल्ली
2.	11.12.2014	1. अन्दाजे रक्स 2. कथा नृत्य कथक	सुश्री विधा लाल एवं अभिगन्यु लाल, दिल्ली श्री माता प्रसाद मिश्र एवं रविशंकर मिश्र, वाराणसी

<u>वर्ष 2014-15 में प्रस्तावित कार्यक्रम का विवरण</u>

11. सांस्कृतिक संध्या 'क्षितिज'

दिनांक 13 फरवरी, 2015 को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह
दिनांक 13 मार्च, 2015 को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह

12. मासिक कथक संध्या

दिनांक 20 फरवरी, 2015 को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह
दिनांक 20 मार्च, 2015 को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह

13. यंग प्रोफेशनल ग्रूमिंग कोर्स (कार्यशाला) :-

इसका उद्देश्य देश के सुप्रसिद्ध कथक आचार्यों द्वारा युवा कलाकारों को नृत्य का उच्च तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करना तथा उन्हें कथक के बहुआयामों से परिचित कराना है। कथक संस्थान द्वारा समय-समय पर देश के सुप्रसिद्ध एवं वरिष्ठ कथक आचार्यों को आमंत्रित करके प्रदेश के कथक क्षेत्र के युवा कलाकारों को नृत्य का उच्च तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इस प्रकार उनकी प्रतिभा को निखारने का अनूठा प्रयास निरन्तर संस्थान द्वारा किया जा रहा है। प्रशिक्षित युवा कलाकारों को प्रस्तुतियाँ तैयार करने का अवसर भी प्रदान किया जाता है ताकि युवा कलाकारों की प्रतिभा में परिपक्वता आ सके। इस अनूठे एवं सार्थक प्रयास से अनेकों युवा कलाकार लाभान्वित हो रहे हैं और अनुभवी कलाकारों के सानिध्य से लाभ प्राप्त कर स्वयं शिक्षण संस्थानों में अपने अनुभवों का प्रसार कर रहे हैं। संस्थान के इस योगदान से कथक का सच्चे अर्थो में प्रचार प्रसार जन जन तक पहुँच रहा है। उसी क्रम में कार्यशाला कराया जाना प्रस्तावित है।

14. कथक संगोष्ठी – व्याख्यान एवं डिमॉन्सट्रेशन

यह राष्ट्रीय कथक संस्थान द्वारा वार्षिक आयोजन है, जिसके अन्तर्गत देश के ख्यातिलब्ध कलाकारों में से गुरूओं को आंमत्रित कर कथक के गूढ़ परम्परा पर विभिन्न व्याख्यानों का निर्वाह किया जाता है एवं इसके अतिरिक्त कथक के सूक्ष्म नृत्य पक्ष को शिक्षार्थियों को प्रेरणा एवं नये आयाम देनें की सफल प्रयास किया जाता है। इसी क्रम में माह फरवरी, 2015 में कथक संगोष्ठी किया जाना प्रस्तावित है।

15. पं0 बिन्दादीन महाराज राष्ट्रीय कथक उत्सव 'रसरंग'

यह राष्ट्रीय कथक संस्थान का वार्षिक आयोजन है जिसमें प्रतिवर्ष प्रतिष्ठित कलाकारों द्वारा कथक में हो रहे नवीन प्रयोग एवं परम्परा का प्रस्तुतिकरण होता है। इस क्रम में माह मार्च, 2015 में पं0 बिन्दादीन महाराज राष्ट्रीय कथक उत्सव 'रसरंग' कराया जाना प्रस्तावित है।

<u>वर्ष 2015-16 में प्रस्तावित योजनाओं का विवरण</u>

क्र0	कार्यक्रम का नाम
1.	कथक अभिरूचि/पाठ्यक्रम
2.	कथक की पूरक विधाओं की कार्यशाला/पाठ्यक्रम
3.	मासिक कथक संध्या
4.	यंग प्रोफेशनल ग्रूमिंग कोर्स
5.	ग्रीष्मकालीन कार्यशाला का आयोजन
6.	सांस्कृतिक संध्या क्षितिज
7.	संगीत संगग
8.	प्रशिक्षण प्राप्त कर रही छात्राओं की वार्षिक प्रस्तुति 'रूनझुन'
9.	प्रादेशिक कथक आयोजन
10.	कथक संगोष्ठी
11.	राष्ट्रीय कथक समारोह 'विरासत' (किसी विशिष्ट विषय को आधार बनाते हुये प्रतिवर्ष एक नवीन अवधारणा पर आधारित मौलिक प्रयास) एवं कथक आचार्यों का व्याख्यान
12.	अन्तर्राज्यीय एवं राज्यीय कथक संवर्धन 'परस्पर'
13.	कथक बाल उत्सव
14.	पं0 बिन्दादीन महाराज राष्ट्रीय कथक उत्सव 'रसरंग'
15.	संवर्धन
16.	कथक यात्रा
17.	कथक प्रवाह
18.	प्रस्तुति निर्माण
19.	संरक्षण
20.	पुस्तकालय विस्तार

21. अभिलेखीकरण
22. कथक एवं संगीत सर्वेक्षण

कला एवं कलाकारों का सर्वेक्षण, अभिलेखीकरण एवं वृद्ध कलाकारों को सहायता योजना

प्रदेश की लोक परम्पराओं को संरक्षित रखने के उद्देश्य से उनका वीडियो अभिलेखीकरण, योग्य छात्रों को कला एवं संस्कृति की व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने के लिये आर्थिक सहायता दिये जाने की तथा वृद्ध एवं विपन्न कलाकारों को आर्थिक सहायता योजना प्रस्तावित है।

तहसील स्तर के कस्बों में प्रेक्षागृहों/खुले मंचों का निर्माण

महानगरों एवं नगरों में किसी न किसी प्रकार सांस्कृतिक गतिविधियाँ संचालित रहती हैं तथा मनोरंजन के कुछ न कुछ साधन उपलब्ध रहते हैं। प्रदेश के तहसील स्तर के कस्बों में प्रेक्षागृह/खुले मंचों का निर्माण कराया जाना है।

भाग - 2
पुरातत्व निदेशालय

भूमिका

उत्तर दिशा में नगाधिराज हिमालय, दक्षिण में विन्ध्य पर्वत श्रेणियों से घिरा, पश्चिम में यमुना और अरावली से लगा और पूरब में सदानीरा-गंगा-सोन संगम और बिहार के भोजपुर जिले तक विस्तृत उत्तर प्रदेश में प्रस्तर युग से ही अनवरत रूप से पुष्पित-पल्लवित मानवीय सभ्यता ने लाखों वर्ष में यहां की संस्कृति को एक विशेष स्वरूप प्रदान किया है।

प्राचीन देवभूमि, आर्यावर्त और मध्य देश, मोरिय, कोलिय, मल्ल और शाक्य आदि गणतंत्र, कोशल, काशी,कुरू, पंचाल, सूरसेन और वत्स महाजनपद इसी पावन भूमि पर स्थित रहे हैं। गंगा-यमुना के स्रोत बद्री-केदार ज्योतिर्मठ, अयोध्या, मथुरा और तीन लोक में न्यारा भोले बाबा का धाम काशी, गंगा-यमुना के बीच बसे प्रयागराज, कौशाम्बी, कालिंजर और देवगढ़, जौनपुर, आगरा और सीकरी, लखनऊ और फैजाबाद न केवल इस प्रदेश के वरन् सारे देश की अस्मिता के ऐसे अंग हैं जिनके बिना देश की पहचान नहीं बनती। वह प्रदेश है, जहां की माटी में पल कर राम, कृष्ण जैसे अवतारी पुरूषों ने ऐसी लीलाऐं दिखलायीं और शाक्य सिंह, गौतम बुद्ध ने शान्ति का ऐसा उद्‌घोष किया कि समस्त भारतीय उप महाद्वीप ही नहीं हिन्दूकुश के उस पार वक्ष (आक्सस) नदी के आस-पास, ब्रह्म देश (बर्मा) के पूरब वियतनाम और जावा-सुमात्रा-बाली, उत्तर में चीन, कोरिया, जापान और तिब्बत और दक्षिण समुद्र में लंका तक पूजे जाने लगे। कबीर, सूर, तुलसी, रसखान और नरोत्तम दास की यह पावन भूमि सांस्कृतिक एवं पुरातात्त्विक महत्व के अवशेषों की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध है।

प्रदेश की पुरातात्त्विक सामग्री और स्थलों/स्मारकों के संरक्षण, यथावश्यक पुरास्थलों के उत्खनन, पुरातत्व विषयक प्रकाशन तथा पुरातत्त्व और पुरास्थलों में लोकरूचि जगाने के उद्‌देश्य से 1951 में लखनऊ में पुरातत्व विभाग की स्थापना की गयी। सन् 1979-80 में लखनऊ के बाहर कुमाऊं और गढ़वाल क्षेत्रों के लिए पहली क्षेत्रीय इकाई गठित हुई। नवें दशक में पौड़ी गढ़वाल और झांसी तथा तत्पश्चात् आगरा, गोरखपुर, वाराणसी और इलाहाबाद में भी क्षेत्रीय पुरात्त्व इकाइयाँ स्थापित की गयीं। राज्य में पुरातत्व सम्बन्धी गतिविधियों को और अधिक गति प्रदान करने हेतु 27 अगस्त, 1996 को निर्गत संस्कृति अनुभाग की अधिसूचना संख्या 2558/चार-96-6(2)/96, द्वारा उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्त्व संगठन का नाम 'उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्त्व विभाग' तथा निदेशक, उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्त्व संगठन को स्वतंत्र विभागाध्यक्ष घोषित करते हुए सचिव, संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश शासन के अधीन रखा गया है।

विभाग द्वारा अपने उद्‌देश्यों की पूर्ति के लिए इस सत्र में प्रदेश के जालौन, चित्रकूट, उन्नाव एवं जौनपुर जिले में पुरातात्विक सर्वेक्षण कराया जा रहा है। प्रदेश के इतिहास के

अल्पज्ञात पक्षों की जानकारी के लिए विभाग द्वारा मनवाडीह (सीतपुर), जाजमऊ (कानपुर), हुलासखेड़ा एवं दादूपुर (लखनऊ) , शनिचरा (सुल्तानपुर), मूसानगर (कानपुर), राजा नल का टीला, नई डीह एवं भगवास (सोनभद्र), मलहर (चन्दौली),लहुरादेवा (संत कबीर नगर), पुरवा उदयी (औरैया) एवं सोनिक (उन्नाव) में पुरातात्विक उत्खनन कराये गये हैं। प्रदेश के राज्य संरक्षित स्मारकों के परिरक्षण /अनुरक्षण के कार्य कराने के अतिरिक्त शोध कार्य को बढावा देने के लिए एक वार्षिक शोध पत्रिका प्रकाशित कराने तथा जनचेतना जागृत करने हेतु शैक्षिक कार्यक्रमों के आयोजन भी कराये जा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्त्व निदेशालय, लखनऊ

सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में पुरातात्त्विक गतिविधियों का संचालन उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्व निदेशालय द्वारा किया जाता है। पुरातत्व निदेशालय के अन्तर्गत गठित क्षेत्रीय इकाइयों के कार्यों पर नियंत्रण, प्रदेश के विभिन्न भागों में बिखरी पुरासम्पदा की खोज हेतु सर्वेक्षण, महत्वपूर्ण पुरास्थलों का उत्खनन, राज्य संरक्षित स्मारकों/स्थलों का अनुरक्षण व रख-रखाव, एवं पुरावशेषों के प्रति जन चेतना जागृत करना पुरातत्व निदेशालय के प्रमुख उद्देश्य हैं।

क्र0 सं0	पद का नाम	पदों की संख्या	सादृश्य वेतन बैण्ड /वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन
1	निदेशक	01	वेतन बैण्ड-3 15600-39100	7600
2	उपनिदेशक	01	वेतन बैण्ड-3 15600-39100	6600
3	उत्खनन एवं अन्वेषण अधिकारी	02	वेतन बैण्ड-3 15600-39100	5400
4	पुरातत्त्व अभियन्ता	01	वेतन बैण्ड-3 15600-39100	5400
5	सहायक लेखाधिकारी	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4600
6	सहायक पुरातत्त्व अधिकारी	06	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4600
7	फोटो अधिकारी	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4600
8	प्रशासनिक अधिकारी	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4600
9	प्रकाशन सहायक	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200
10	संरक्षण सहायक	03	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200
11	लेखाकार	02	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200
12	प्रधान सहायक	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200
13	वैयक्तिक सहायक ग्रेड-2	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200
14	अवर अभियंता	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800
15	नक्शानवीस	02	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800
16	सर्वेयर	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800
17	रसायनविद	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800
18	पुस्तकालय सहायक	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800
19	सहायक लेखाकार	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800
20	आशुलिपिक	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800
21	वरिष्ठ सहायक	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800
22	कनिष्ठ सर्वेयर	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2400
23	कनिष्ठ सहायक	04	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2000
24	ड्राइवर	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1900
25	मार्क्समैन कम पाट्री मेण्डर	01	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800
26	फोटोलैब सहायक	01	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800

27	साइक्लोस्टाईल मशीन आपरेटर कम दफ्तरी	01	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800
28	रसायन शाला सहायक	01	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800
29	नलकूप चालक	02	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800
30	वर्क्स फोरमैन	01	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800
31	अर्दली	01	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800
32	चपरासी	01	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800
33	स्वीपर	01	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800
34	कार्यालय चौकीदार	01	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800
35	माली चौकीदार	22	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800
36	स्मारक परिचर	40	वेतन वैण्ड-1 5200-2020	1800
37	उद्यान परिचर	07	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800
38	डाक रनर कम फर्राश	01	वेतन बैण्ड-1 5200-2020	1800
	योग	118		

सर्वेक्षण/निरीक्षण :-

1. जनपद-लखीमपुर खीरी के ग्राम कोढैया से प्राप्त ताम्रायुधों का निरीक्षण किया गया।
2. लखनऊ नगर में स्थित कालाकाकर हाउस का निरीक्षण कराया गया।
3. जनपद-लखनऊ स्थित राज्य संरक्षित स्मारक छतरमंजिल का निरीक्षण।
4. लखनऊ स्थित राज्य संरक्षित स्थल नटवाडीह का निरीक्षण किया गया।
5. लखनऊ स्थित आलमबाग भवन एवं गेट तथा लालबारादरी का निरीक्षण किया गया।
6. लखनऊ जनपद स्थित संरक्षित स्मारक गुलिस्ताने इरम, दर्शन विलास कोठी तथा हुलासखेड़ा का निरीक्षण।
7. संरक्षित स्मारक कुसुमवन सरोवर में 13वें वित्त आयोग की सहायता से कराये जा रहे कार्य का निरीक्षण कराया गया।

अनुरक्षण/रसायनिक उपचार :-

8. लखनऊ नगर स्थित छतर मंजिल का संरक्षण कार्य कराया जा रहा है।
9. तेरहवें वित्त आयोग के अन्तर्गत हुलासखेडा, लाल बारादरी एवं आलमबाग भवन में कराये जा रहे संरक्षण कार्यों का निरीक्षण कराया गया।
10. जनपद-कानपुर देहात अन्तर्गत-शुक्ला तालाब का अनुरक्षण के उपरान्त निरीक्षण कराया गया।
11. सोनभद्र जनपद के अन्तर्गत नईडीह में कराये गये उत्खनन से प्राप्त लौह उपकरणों का रसायनिक उपचार कराया गया।

फोटोग्राफी :-

1. राज्य संरक्षित स्मारकों छतर मंजिल फरहत बख्श, लाल बारादरी, कालाकाकर भवन, कोटैया से प्राप्त ताम्रायुधों, लहुरादेवा उत्खनन से प्राप्त हड्डी के उपकरणों तथा अन्य स्मारकों/स्थलों के छायांकन का कार्य कराया गया।
2. 250 अदद छायाचित्रों की एडिटिंग का कार्य किया गया।
3. शुक्ला तालाब, गुलिस्ताने इरम, दर्शन विलास तथा छतर मंजिल आदि से सम्बन्धित 200 अदद छायाचित्र तैयार कराये गए।
4. लहुरादेवा उत्खनन स्थल से सम्बन्धित पुरावशेषों का छायांकन किया गया।

प्रकाशन

1. शोध पत्रिका प्राग्धारा अंक 23 का प्रकाशन।
2. राज्य संरक्षित स्थल लहुरादेवा के उत्खनन की रिपोर्ट लेखन का कार्य किया जा रहा है।
3. जनपद-राबर्ट्सगंज स्थित नईडीह के टीले की उत्खनन सम्बन्धी रिपोर्ट का लेखन का कार्य किया जा रहा है।
4. जनपद-महराजगंज स्थित राजधानी टीला के उत्खनन सम्बन्धी रिपोर्ट लेखन का कार्य प्रगति पर है।

शैक्षिक गतिविधियाँ :-

1. विश्व धरोहर सप्ताह के अवसर पर रोशनुदौला कोठी में छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

अन्य कार्य :-

1. विभागीय वादों की पैरवी की गयी।
2. भारत निर्वाचन आयोग द्वारा कराये जा रहे मतदाता-पुनरीक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत विभागीय अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा डियूटी का कार्य किया जा रहा है।

क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई ,झाँसी

क्षेत्रीय पुरात्त्व इकाई ,झाँसी के अन्तर्गत झाँसी, ललितपुर , महोबा ,हमीरपुर ,जालौन ,बाँदा, चित्रकूट आदि जिले रखे गये हैं । प्रस्तर उपकरणों , मन्दिरों , मूर्तियों, अभिलेखों, बावली , कूप ,तड़ागों और पात्रावशेषों आदि के रूप में प्राचीन पुरासामग्री इस क्षेत्र में जगह-जगह बिखरी हुई है। यहाँ शैव, वैष्णव शाक्य और जैन धर्मों का विशेष प्रभाव दिखायी देता है । इन सबका व्यापक अन्वेषण कराकर इन्हें प्रकाशित करने, संरक्षित करने तथा विभाग के उद्देश्यों के अनुरूप पुरातत्त्व सम्बन्धी अन्य कार्यों के सम्पादन के लिये झाँसी में क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई की स्थापना की गई है।

क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई ,झाँसी के लिये निम्नलिखित पद सृजित हैं :-

क्र0 सं0	पद का नाम	पदों की संख्या	सादृश्य वेतन बैण्ड /वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन
1	क्षेत्रीय पुरातत्व अधिकारी	01	वेतन बैण्ड-3 15600-39100	5400
2	सहायक पुरातत्व अधिकारी	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4600
3	संरक्षण सहायक	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200
4	फोटोग्राफर	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200
5	नक्शा नवीस	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800
6	लेखाकार	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200
7	कनिष्ठ सहायक	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2000
8	चपरासी	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800
9	चौकीदार	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800
10	सफाई कर्मचारी	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800
	योग	10		

<u>सर्वेक्षण/निरीक्षण :-</u>

1. झाँसी जनपद में स्थित खैलार की पहाडी पर विद्यमान स्मारक का निरीक्षण कराया गया।
2. हमीरपुर जनपद के ग्राम-करियारी में विद्यमान पुराने मन्दिर का निरीक्षण कराया गया।
3. जनपद महोबा के ग्राम-भण्डारा से प्रकाश में आयी दो जैन प्रतिमाओं का निरीक्षण कराया गया।
4. झाँसी नगर में स्थित राजकीय इण्टर कालेज के पुराने भवन का जिलाधिकारी के साथ निरीक्षण कराया गया।
5. जालौन जनपद के कालपी में स्थित रानी लक्ष्मीबाई के मंत्रणा कक्ष का निरीक्षण कराया गया।
6. झाँसी नगर में स्थित ऐतिहासिक गणेश मंदिर का निरीक्षण कराया गया।

<u>अनुरक्षण :-</u>

1. राज्य संरक्षित स्मारकों लक्ष्मी मंदिर, बालाबेहट किला, सोरई किला, ललितपुर एवं गोंडवानी मंदिर का निरीक्षण कराया गया।
2. राज्य संरक्षित स्मारक बरूआसागर किले का अनुरक्षण कार्य कराया गया।

3. तेरहवें वित्त आयोग के अन्तर्गत राज्य संरक्षित स्मारकों गोंडवानी मंदिर, बालाबेहट किला, लक्ष्मी मंदिर एवं सोरई किला पर कराये गये कार्यों का निरीक्षण कराया गया।

फोटोग्राफी :-

1. क्षेत्रीय इकाई, झांसी द्वारा कुल 462 अदद छायाचित्र तैयार किये गये।
2. तेरहवें वित्त आयोग के अन्तर्गत स्मारकों के संरक्षण से संबंधित 428 अदद छायाचित्र तैयार कराये गये।

शैक्षिक गतिविधियॉं :-

1. पर्यटन दिवस के अवसर पर झॉसी में छायाचित्र प्रदर्शनी लगवायी गयी।
2. विश्व धरोहर सप्ताह के अन्तर्गत छायाचित्र प्रदर्शनी, व्याख्यान तथा छात्रों को धरोहरों के संरक्षण हेतु जागरूक किया गया।

क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई ,आगरा

उत्तर प्रदेश में बृज मंडल का सांस्कृतिक महत्व सर्वज्ञात है। वृन्दावन, गोकुल, मथुरा के बंशी बजइया कृष्ण कन्हैया की लीला भूमि लाखों श्रद्धालुओं को हर वर्ष यहां खींच लाती है । आगरा स्थित फतेहपुर सीकरी, ताजमहल, बुलन्द दरवाजा जैसी मुगल इमारतों की एक झलक पाने को सारी दुनिया के सैलानी बेताब रहते हैं। कुसुम सरोवर, गोवर्धन आदि स्थलों पर जाट राजाओं द्वारा निर्मित छतरियों की छटा देखते ही बनती है। इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में जगह-जगह प्राचीन पात्रावशेषों, मृण्मूर्तियॉं, सिक्के, पाषाण मूर्तियॉं और अभिलेख आदि मिलते रहते हैं । इनके व्यापक सर्वेक्षण, अभिलेखीकरण, प्रकाशन और संरक्षण/परिरक्षण के लिये आगरा में क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई की स्थापना की गई है। इसके अन्तर्गत आगरा, अलीगढ़, एटा, इटावा, फिरोजाबाद और मैनपुरी जिलों के कार्य सौंपे गये हैं ।

क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई ,आगरा के लिये निम्नलिखित पद सृजित हैं :-

क्र0 सं0	पद का नाम	पदों की संख्या	सादृश्य वेतन बैण्ड /वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन
1	क्षेत्रीय पुरातत्व अधिकारी	01	वेतन बैण्ड-3 15600-39100	5400
2	कनिष्ठ फोटोग्राफर	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2400
3	नक्शा नवीस	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800
4	लेखाकार	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200
5	चपरासी	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800
6	चौकीदार	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800
7	सफाई कर्मचारी	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800
	योग	07		

निरीक्षण :-

1. संरक्षित स्मारक कुसुमवन सरोवर, मथुरा का निरीक्षण कराया गया।
2. संरक्षित स्मारक रसखान की समाधि, मथुरा का निरीक्षण कराया गया।

अनुरक्षण :-

1. जनपद मथुरा में गोवर्धन स्थित कुसुमवन सरोवर एवं रसखान की समाधि पर 13वें वित्त आयोग के अन्तर्गत कार्य कराये गये कार्यों का निरीक्षण किया गया।

शैक्षिक गतिविधियाँ :-

1. विश्व धरोहर सप्ताह के अन्तर्गत छायाचित्र प्रदर्शनी एवं निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया।

क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई ,वाराणसी

पूर्वी उत्तर प्रदेश में वाराणसी मंडल का अपना विशेष महत्व है । उत्तर भारत की सांस्कृतिक, धार्मिक राजधानी के रूप में विख्यात वाराणसी नगर का ही पुरातात्त्विक एवं ऐतिहासिक महत्व लगभग 3000 वर्ष प्राचीन है। इस नगर और जनपद में जगह-जगह प्राचीन मन्दिर, मूर्तियाँ और अन्य बहुत से मन्दिर विद्यमान हैं । वाराणसी मंडल के सोनभद्र, मिर्जापुर, जौनपुर, गाजीपुर और बलिया जनपद भी समृद्ध एवं प्राचीन सांस्कृतिक विरासत की दृष्टि से अपनी गौरवशाली परम्परा रखते हैं। मिर्जापुर और सोनभद्र जिलों में चित्रित शैलाश्रय व चुनार, विजयगढ, शक्तेशगढ में सुख्यात दुर्ग, अनेक मंदिर, अभिलेख आदि ज्ञात हैं। शैव, वैष्णव, जैन और बौद्ध धर्म के केन्द्र के रूप में काशी की महिमा सर्वज्ञात है। महाराज गाधि, महर्षि विश्वामित्र और जमदग्नि मुनि की भूमि जनपद गाजीपुर से सम्बद्ध की जाती है। शर्की राजाओं की राजधानी जौनपुर/मछलीशहर की प्राचीन वास्तुकला की एक नई बानगी देती है। सरयू और गंगा के बीच के भाग में सैदपुर, भीतरी, खैराडीह जैसे बड़े-बड़े टीले पाये गये हैं। जिनमें प्राचीन सांस्कृतिक सामग्री के विपुल भण्डार छिपे हुये हैं । विन्ध्य की श्रृंखलाओं में पाषाण युगीन मानव के निवास के प्रमाण प्रस्तर उपकरणों के रूप में जगह-जगह मिलते हैं। अतएव इस क्षेत्र में पुरातत्त्व सम्बन्धी गतिविधियों में तेजी लाने के लिए वाराणसी में एक क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई की स्थापना की गयी है।

क्षेत्रीय पुरातत्व इकाई, वाराणसी के लिये निम्नलिखित पद सृजित हैं :-

क्र0 सं0	पद का नाम	पदों की संख्या	सादृश्य वेतन बैण्ड /वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन
1	क्षेत्रीय पुरातत्व अधिकारी	01	वेतन बैण्ड-3 15600-39100	5400
2	संरक्षण सहायक	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200
3	कनिष्ठ फोटोग्राफर	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2400
4	नक्शा नवीस	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800
5	सहायक लेखाकार	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800
6	कनिष्ठ सहायक	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2000
7	चपरासी	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800
8	चौकीदार	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800
	योग	08		

सर्वेक्षण/निरीक्षण :-

1. ज्ञान प्रवाह वाराणसी द्वारा राजघाट, वाराणसी में उत्खनन कार्य का निरीक्षण किया गया।
2. श्री काशी विश्वनाथ मंदिर, वाराणसी का जिलाधिकारी के माध्यम से सी0बी0आर0आई0, रूड़की, आई0आई0टी0, का0हि0वि0वि0, वाराणसी के विशेषज्ञों के साथ स्मारक का विधिवत् निरीक्षण कराया गया।
3. संरक्षित स्मारक बत्तीस खम्भा, बकरिया कुण्ड, वाराणसी के भवनों आदि का निरीक्षण किया गया।
4. 13वें वित्त आयोग के अन्तर्गत राज्य संरक्षित स्मारक गुरूधाम मंदिर, कर्दमेश्वर महादेव मंदिर,कन्दवा, वाराणसी, शेर जमन खां का मकबरा, जौनपुर तथा चुनार किला, मीरजापुर का निरीक्षण किया गया।
5. डा0 ओ0पी0 केजरीवाल, पूर्व सूचना आयुक्त, भारत सरकार के अनुरोध पर जेम्स प्रिन्सेप के द्वारा निर्मित विशेश्वरगंज, गल्ला मंडी, वाराणसी का निरीक्षण किया गया।
6. जनपद सोनभद्र में स्थित स्थलीय संग्रहालय शिवद्वार एवं मउकला का निरीक्षण किया गया।
7. जनपद चन्दौली स्थित जेम्स प्रिन्सेप द्वारा उत्तर प्रदेश/बिहार की सीमा पर निर्मित पुल तथा वाराणसी अन्तर्गत ड्योढीयाबीर बाबा मंदिर तथा जनपद जौनपुर थाने में अभिरक्षित धातु मूर्ति का निरीक्षण किया गया।

अनुरक्षण :-

1. राज्य संरक्षित स्मारक गुरूधाम मंदिर वाराणसी के नौबतखाना के ग्रिल, गेट आदि की पेन्टिंग, वनस्पति उन्मूलन का कार्य तथा मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार तक सी0सी0 सडक व दोनों तरफ के वनस्पति उन्मूलन का कार्य करवाया गया।

फोटोग्राफी :-

1. तेरहवें वित्त आयोग की धनराशि से कराये जा रहे कार्यों यथा चुनार दुर्ग, मीरजापुर, कर्दमेश्वर महादेव मंदिर, कन्दवा, वाराणसी, गुरूधाम मंदिर, वाराणसी, शेर जमन खां का मकबरा, जौनपुर का छायांकन कार्य कराया गया।
2. डा0 ओ0पी0 केजरीवाल, पूर्व सूचना आयुक्त, भारत सरकार के अनुरोध पर जेम्स प्रिन्सेप के द्वारा निर्मित विशेश्वरगंज, गल्ला मंडी, वाराणसी का छायांकन कराया गया।
3. जनपद चन्दौली स्थित जेम्स प्रिन्सेप द्वारा उत्तर प्रदेश/बिहार की सीमा पर निर्मित पुल तथा वाराणसी अन्तर्गत ड्योढीयावीर बाबा मंदिर तथा जनपद जौनपुर थाने में अभिरक्षित धातु मूर्ति का छायांकन कराया गया।

शैक्षिक गतिविधियाँ :-

1. विश्व धरोहर सप्ताह के अन्तर्गत संगोष्ठी तथा चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
2. हमारी धरोहर विषयक दो दिवसीय चित्रकला कार्यशाला का आयोजन किया गया।

ड्राइंग :-

1. जनपद जौनपुर के ग्राम स्तरीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के दौरान प्रकाश में आये काजीहद डीह, मनउरा गॉव का डीह तथा मनौराडीह तथा गोपालापुर गॉव से प्राप्त मृदभाण्डों की ड्राइंग तैयार कराया गया।

क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई ,गोरखपुर

गोरखपुर मंडल पुरातात्त्विक दृष्टिकोण से विशेष महत्त्व रखता है। बौद्ध एवं जैन धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध एवं महावीर की विभिन्न गतिविधियों का केन्द्र होने के कारण इस क्षेत्र का अन्तर्राष्ट्रीय महत्व है। इसके अतिरिक्त महाजनपदों एवं तत्कालीन प्रमुख गणराज्यों की भूमि होने के कारण इस क्षेत्र का महत्व और बढ़ जाता है। स्वाभाविक रूप से दुर्लभ इतिहास से संबधित दुर्लभ विरासत, स्तूपों, पुरावशषों, मंदिरों और टीलों आदि के रूप में जगह-जगह बडी संख्या में प्राप्त होते हैं। इस क्षेत्र के प्रचीनतम स्तर लगभग 15वीं शती ई0पू0 के जाने जाते हैं ।

क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई ,गोरखपुर के लिये निम्नलिखित पद सृजित हैं :-

क्र0 सं0	पद का नाम	पदों की संख्या	सादृश्य वेतन बैण्ड /वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन
1	क्षेत्रीय पुरातत्त्व अधिकारी	01	वेतन बैण्ड-3 15600-39100	5400
2	सहायक लेखाकार	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800
3	कनिष्ठ सहायक	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2000
4	चपरासी	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800
5	चौकीदार	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800
6	सफाई कर्मचारी	01	रु0 1000/- नियत वेतन	
	योग	06		

सर्वेक्षण/निरीक्षण :-

1. जनपद गोरखपुर स्थित संरक्षित स्मारक विष्णु की विशाल प्रतिमा का अनुरक्षण/परिरक्षण हेतु स्थलीय निरीक्षण कराया गया।
2. संत कबीर नगर स्थित संतकबीर दास की समाधि एवं मजार का निरीक्षण कराया गया।

अनुरक्षण :-

1. संत कबीर नगर स्थित संरक्षित स्मारक स्थल संत कबीर दास की समाधि एवं मजार का वार्षिक रख-रखाव हेतु रंगाई-पुताई का कार्य कराया गया।
2. जनपद गोरखपुर में संरक्षित विष्णु प्रतिमा का संरक्षण कार्य कराया गया।

ड्राइंग :-

1. जनपद संत कबीरनगर अन्तर्गत संत कबीरदास की समाधि एवं मजार का प्लान एवं सेक्शन तैयार कराया गया।

क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई ,इलाहाबाद

इलाहाबाद मंडल में गंगा यमुना दोआब का ऐसा क्षेत्र सम्मिलित है, जिसमें प्राचीन वत्स राज्य तथा अवध का बड़ा भू-भाग आता है। वत्स राज उदयन की राजधानी कौशाम्बी, जहाँ भगवान बुद्ध प्रवास काल में रहे, भीटा, झूँसी, भारद्वाज आश्रम, श्रृंगवेरपुर आदि बहुसंख्यक पुरातात्त्विक महत्व के स्थल इस क्षेत्र में विद्यमान हैं । प्रतापगढ़ में सरायनाहर राय आदि से मानव के आज से लगभग 10,000 वर्ष प्राचीन आवासीय स्थलों से नर कंकाल और प्रस्तर उपकरण प्रकाश में आये हैं । ऐसे अत्यन्त महत्वपूर्ण पुरास्थलों और अवशेषों की खोज, रख-रखाव अध्ययन, प्रकाशन आदि के उद्देश्य से इलाहाबाद में क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई की स्थापना की गयी है ।

क्षेत्रीय पुरातत्व इकाई ,इलाहाबाद के लिये निम्नलिखित पद सृजित है :-

क्र0 सं0	पद का नाम	पदों की संख्या	सादृश्य वेतन बैण्ड /वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन
1	क्षेत्रीय पुरातत्व अधिकारी	01	वेतन बैण्ड-3 15600-39100	5400
2	अन्वेषण सहायक कम फोटोग्राफर	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2800
3	नक्शानवीस	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	2400
4	लेखाकार	01	वेतन बैण्ड-2 9300-34800	4200
5	चपरासी	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800
6	सफाई कर्मचारी कम चौकीदार	01	वेतन बैण्ड-1 5200-20200	1800
	योग	06		

सर्वेक्षण/निरीक्षण :-

1. जनपद मिर्जापुर की लालगंज तहसील स्थित स्थलीय संग्रहालय हलिया का निरीक्षण।

अनुरक्षण :-

1. इलाहाबाद स्थित राज्य संरिक्षत स्थल महदहा एवं सरायनाहर राय के अनुरक्षण हेतु आगणन तैयार कराया गया।
2. महदहा एवं सरायनाहर राय स्थल की साफ-सफाई, सूचना पट्ट की स्थापना एवं फेंसिंग का कार्य कराया गया।

शैक्षिक गतिविधियाँ :-

1. विश्व धरोहर सप्ताह के अन्तर्गत देवघाट में स्थित गेस्ट हाउस में छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन कराया गया।

भाग - 3
संग्रहालय निदेशालय

भूमिका

संग्रहालय सांस्कृतिक सम्पदा, ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक धरोहरों को सुरक्षित एवं संरक्षित रखने का वह केन्द्र है, जहाँ प्राचीन कलाकृतियों को संग्रहीत कर राष्ट्र के अतीत की गौरवशाली संस्कृति का दर्शन शोधार्थियों बुद्धिजीवियों तथा सामान्य जनमानस को कराया जाता है। संग्रहालय का कार्य कलाकृतियों एवं पुरावशेषों का संग्रह करना, संरक्षित करना, शोध करना तथा उन्हें प्रदर्शित करना है। संग्रहालय वर्तमान में अनौपचारिक शिक्षा का केन्द्र भी है जो समय-समय पर प्रदर्शनियाँ व्याख्यान तथा संगोष्ठी आयोजित कर सामान्य जनमानस में कला के प्रति अभिरूचि जागृत कर शिक्षा प्रदान करने का कार्य भी करते हैं।

31 अगस्त, 2002 के पूर्व, उ0 प्र0 के समस्त राजकीय संग्रहालय संस्कृति निदेशालय, उ0 प्र0 द्वारा संचालित होते थे। प्रदेश के समस्त संग्रहालयों के विकास एवं संवर्द्धन, स्वतंत्र नियंत्रण एवं प्रभावी पर्यवेक्षण, नये संग्रहालयों की स्थापना, उनके भवनों का निर्माण, आधुनिकीकरण एवं सुदृढ़ीकरण, कलाकृतियों एवं पुरावशेषों के क्रय, उनके प्रदर्शन तथा कला अभिरूचि के विकास, व्याखान, प्रशिक्षण आदि योजनाओं के उन्नयन हेतु 31 अगस्त, 2002 से उ0 प्र0 संग्रहालय निदेशालय के रूप में स्वतंत्र निदेशालय की स्थापना की गई। राज्य संग्रहालय, बनारसी बाग, लखनऊ के परिसर की ओल्ड कोठी में ही इस निदेशालय को स्थापित किया गया। वर्तमान में यह निदेशालय राज्य संग्रहालय, लखनऊ के चतुर्थ पार्श्व में स्थापित है। निदेशक, उ0 प्र0 संग्रहालय निदेशालय विभागाध्यक्ष के कार्यों एवं दायित्वों के साथ-साथ राज्य संग्रहालय, लखनऊ के निदेशक के कार्यों एवं दायित्वों का निवर्हन करते हैं। वर्तमान में उत्तर प्रदेश में कुल **तेरह** राजकीय संग्रहालय उ0 प्र0 संग्रहालय निदेशालय के अधीन संचालित हैं, जिनमें नौ पूर्ण स्थापित संग्रहालय क्रमशः इस प्रकार हैं :-

क्र.स.	संग्रहालय के नाम तथा वर्ष	बहुउद्देश्य
1	राज्य संग्रहालय लखनऊ (1863)	उ0 प्र0 राज्य का बहुउद्देशीय संग्रहालय है।
2	राजकीय संग्रहालय, मथुरा (1874)	मथुरा कला के लिए अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त संग्रहालय है।
3	राजकीय संग्रहालय, झाँसी (1978)	बुन्देलखण्ड की मध्यकालीन कला एवं इतिहास को संरक्षित किए जाने के उद्देश्य से स्थापित है।
4	अन्तर्राष्ट्रीय रामकथा संग्रहालय एवं आर्ट गैलरी, अयोध्या फैजाबाद (1988)	विश्व प्रचलित रामकथाओं की कलाकृतियों का प्रदर्शन, संरक्षण एवं रख-रखाव के लिए स्थापित।
5	राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर (1987),	बौद्ध धर्म से सम्बन्धित विविध पक्षों का प्रदर्शन, संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से स्थापित।
6	लोक कला संग्रहालय लखनऊ (1989),	प्रदेश में प्रचलित समस्त लोक कलाओं का प्रदर्शन, संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से स्थापित।
7	जनपदीय संग्रहालय, सुल्तानपुर (1989),	जनपद से प्राप्त पुरासम्पदाओं का संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु स्थापित।
8	राजकीय बौद्ध संग्रहालय, कुशीनगर (1994),	अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की बौद्ध धर्म से सम्बन्धित विविध पक्षों का प्रदर्शन, संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से स्थापित।
9	राजकीय पुरातत्व संग्रहालय, कन्नौज (1975)	मौखरी, वर्धन एवं प्रतिहार कलाओं को सुरक्षित एवं संरक्षित रखने के उद्देश्य से स्थापित।

इसके अतिरिक्त पाँच नवस्थापित संग्रहालय यथा-

क्र. स.	संग्रहालय के नाम तथा वर्ष	बहुउद्देश्य
10	राजकीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय, मेरठ, (1996),	भारत के प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन 1857 से सम्बन्धित प्राप्त तत्कालीन प्रचलित अस्त्र--शस्त्रों को संग्रहीत करना व विविध पहलुओं को संरक्षित करने के उद्देश्य से स्थापित।
12	अम्बेडकर संग्रहालय एवं पुस्तकालय, रामपुर, (2004)	भारत के संविधान निर्माता बोधिसत्व बाबा साहेब डा0 भीमराव अम्बेडकर से सम्बन्धित सभी प्रकार की सामग्रियों का संकलन हेतु स्थापित।
13	राजकीय बौद्ध संग्रहालय, पिपरहवां (सिद्धार्थनगर) (1997)	बौद्ध धर्म का प्राचीनतम केन्द्र होने के कारण बौद्ध धर्म से सम्बन्धित कलाकृतियों के प्रदर्शन हेतु स्थापित।
14	राजकीय पुरातत्व संग्रहालय, फर्रूखाबाद निर्माणाधीन	प्राचीन बौद्ध पुरास्थल कांपिल्य, संकिशा से प्राप्त प्राचीन कलाकृतियों एवं पुरावशेषों के संकलन एवं सवंर्द्धन हेतु स्थापित।

संस्कृति विभाग, उ0 प्र0 के सांस्कृतिक कलैण्डर के कार्यक्रमानुसार प्रदेश के समस्त राजकीय संग्रहालयों में समय-समय पर प्रदर्शनी, व्याख्यान, संगोष्ठी, कला अभिरूचि पाठ्यक्रम, सामान्य ज्ञान एवं कला प्रतियोगिता, बाल मूक बधिर क्ले मॉडलिंग प्रतियोगिता एवं फिल्म, तथा संग्रहालय तकनीकी कार्यशाला आदि का आयोजन किया जाता है।

उ0 प्र0 संग्रहालय निदेशालय (राज्य संग्रहालय परिसर) लखनऊ

प्रदेश के समस्त संग्रहालयों के विकास एवं संवर्द्धन, स्वतंत्र नियंत्रण एवं प्रभावी पर्यवेक्षण, नये संग्रहालयों की स्थापना, उनके भवनों का निर्माण, आधुनिकीकरण एवं सुदृढ़ीकरण, कलाकृतियों एवं पुरावशेषों के क्रय, उनके प्रदर्शन तथा कला अभिरुचि के विकास, व्याख्यान, प्रशिक्षण आदि योजनाओं के उन्नयन हेतु 31 अगस्त, 2002 से उ0 प्र0 संग्रहालय निदेशालय की स्थापना की गई, जो राज्य संग्रहालय, बनारसी बाग, लखनऊ के परिसर के चतुर्थ पार्श्व में स्थापित है। निदेशक, उ0 प्र0 संग्रहालय निदेशालय विभागाध्यक्ष के कार्यों व दायित्वों के साथ-साथ राज्य संग्रहालय, लखनऊ के निदेशक के कार्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करते हैं।

निदेशालय में निम्नलिखित पद सृजित है:-

क्र. सं.	पदनाम	सादृश्य वेतन बैण्ड/वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पदों की संख्या
1	2	3	4	5
1	निदेशक	15600-39100	7600	1
2	सहायक लेखाधिकारी	9300-34800	4800	1

3	प्रशासनाधिकारी	9300-34800	4800	1
4	वैयक्तिक सहायक ग्रेड-।	9300-34800	4600	1
5	ज्येष्ठ सम्परीक्षक	9300-34800	4200	1
6	लेखाकार	9300-34800	4200	2
7	प्रधान सहायक	9300-34800	4200	2
8	वरिष्ठ सहायक	5200-20200	2800	2
9	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	2000	3
10	अर्दली	5200-20200	1800	2
			योग	16

राज्य संग्रहालय, लखनऊ

राज्य संग्रहालय, लखनऊ उ0 प्र0 का प्राचीनतम तथा विशालतम् बहुउद्देशीय संग्रहालय है। इसकी स्थापना सन् 1863 ई0 में लखनऊ डिवीजन के तत्कालीन कमिश्नर कर्नल एबट द्वारा सींखचे वाली कोठी में की गयी थी। सन् 1883 में यह प्रान्तीय संग्रहालय के रूप में लाल बारादरी में व्यवस्थित हुई। सन् 1950 में इसका नाम प्रान्तीय संग्रहालय के स्थान पर राज्य संग्रहालय रखा गया तथा वर्ष 1963 में नवीन भवन बन जाने के बाद बनारसी बाग स्थित प्राणि उद्यान में आ गया। इस संग्रहालय के संकलन में लगभग एक लाख से अधिक कलाकृतियां हैं, जिसमें पुरातत्व अनुभाग, चित्रकला अनुभाग, प्राणि शास्त्र अनुभाग मुद्रा अनुभाग, कला एवं सज्जा कला अनुभाग और धातु कला अनुभाग आदि प्रमुख हैं। इसके साथ ही राज्य संग्रहालय, लखनऊ में एक वृहद पुस्तकालय भी है, जहां भारतीय संस्कृति, कला, पुरातत्व, इतिहास तथा प्राच्य विद्या सम्बन्धित दुर्लभ पुस्तकें हैं, जो विशेष रूप से शोधार्थियों के लिये उपयोगी हैं।

इस विशाल संग्रह के महत्वपूर्ण कलाकृतियों को संग्रहालय के निम्नलिखित वीथिकाओं में प्रदर्शित किया गया है:-

1. पुरातत्व वीथिका (प्रागऐतिहासिक काल से कुषाण काल)
2. पुरातत्व वीथिका (गुप्त काल से मध्यकाल तक)
3. जैन कला वीथिका
4. अवध की नवाबी कला वीथिका
5. मुद्रा वीथिका
6. अस्त्र-शस्त्र एवं धातु कला वीथिका
7. चित्रकला वीथिका
8. प्राणि शास्त्र वीथिका
9. विदेशी कला वीथिका
10. बौद्ध कला वीथिका

आलोच्य अवधि में संग्रहालय में संग्रहीत कलाकृतियों एवं भारतीय सांस्कृतिक धरोहरों के ज्ञानार्जन हेतु शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को निःशुल्क प्रवेश की स्थिति निम्नवत् रही है :-

1.	स्कूल-कालेजों की संख्या-	639
2.	विद्यार्थियों की संख्या-	27799
3.	अध्यापकों की संख्या-	3435

इसके अतिरिक्त माह 01 अप्रैल, 2014 से 31 दिसम्बर, 2014 तक सशुल्क दर्शकों का विवरण निम्नवत् है:-

1.	वयस्क दर्शकों की संख्या	159624
2.	अल्पवयस्कों की संख्या	29006
3.	विदेशी पर्यटकों की संख्या	128

आलोच्य अवधि में संग्रहालय द्वारा आयोजित शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का विवरण :-

माह	कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण
1	2
18 अप्रैल, 2014	विश्व धरोहर दिवस के अवसर पर मुद्रानुभाग द्वारा स्थानीय शासकों के सिक्कों पर अस्थायी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
18 मई, 2014	विश्व संग्रहालय दिवस के अवसर पर राज्य संग्रहालय, लखनऊ में पुरातत्व अनुभाग में संग्रहित ''शिल्प कला में मृतिकायें'' विषय पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
26 जून, 2014 से 28 जून, 2014 तक	ललित कला, भारत सरकार एवं राज्य संग्रहालय, लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में ''लर्निंग थ्रू एप्रीशएट आर्ट इन आडियो विजुएल आर्ट वर्कशाप'' का आयोजन किया गया।
10 अक्टूबर, 2014	वाणिज्य कर अधिकारी प्रशिक्षण संस्थान, गोमती नगर, लखनऊ के 92 असिटेन्ट कमिश्नरों को पुरासम्पदा के बारे में शोधपरक जानकारी दी गयी।
17 अक्टूबर, 2014	''अवध की कला एवं अवध के नवाब'' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।
12 नवम्बर, 2014 से 29 नवम्बर, 2014तक	कला अभिरूचि पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया।
16 नवम्बर, 2014	चित्रकला अनुभाग द्वारा 45-आगमाला कला की लघुचित्रों की अस्थाई प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
13 दिसम्बर, 2014	भारतीय संरक्षण संस्थान, लखनऊ एवं राज्य संग्रहालय, लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में ''अभिलेखों के संरक्षण'' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।
19 दिसम्बर, 2014	स्कूल के बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

माह का प्रदर्श

1. दिनांक 19.04.2014 को माह प्रदर्श श्रृंखला के अन्तर्गत कागड़ा शैली में ''ऊखल बंधन'' का लघु चित्र प्रदर्शित किया गया।
2. बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर माह प्रदर्श श्रृंखला के अन्र्तगत ''थंका पेन्टिंग-वौद्ध देवी'' तारा प्रदर्शित किया गया।
3. दिनांक 19.07.2014 में माह प्रदर्श श्रृंखला के अन्तर्गत हाथी दाँत की गणेश प्रतिमा प्रदर्शित की गयी।

4. दिनांक 19.08.2014 में माह प्रदर्श श्रृंखला के अन्तर्गत प्राणी शास्त्र अनुभाग की "बंगाली लोमड़ी" प्रदर्शित की गयी।
5. दिनांक 20.09.2014 में माह प्रदर्श श्रृंखला के अन्र्तगत धातु अनुभाग की लक्ष्मी प्रतिमा प्रर्दशित की गयी।
6. दिनांक 19.11.2014 में माह प्रदर्श श्रृंखला के अन्तर्गत मुद्रा अनुभाग के अवध के बादशाहों द्वारा जारी सिक्कों को प्रदर्शित किया गया।
7. माह- जनवरी में माह प्रदर्श श्रंखला के अन्तर्गत सज्जाकला अनुभाग का मुरादाबाद से प्राप्त फ्लावर पॉट प्रर्दशित किये जाने का प्रस्तावित है।

1. *पुरातत्व अनुभाग* - अनुभाग में वर्ष, 2014-15 में किये गये कार्यो का विवरण -

क - पुरातत्व अनुभाग से सम्बन्धित सभी पत्रों का सम्पादन का कार्य किया गया एवं पुरातत्व का चार्ज हस्तांतरण किया गया।

ख - आरक्षित संकलन में मृण मूर्तियों एवं प्रस्तर कलाकृतियों में कार्य किया गया।

ग - शोध कर्ताओं द्वारा 350 कलाकृतियों के छाया चित्र तैयार किये ।

घ - लगभग 80 विदेश से आए शोधकर्ताओं को जैन एवं बौद्ध कलाकृतियों की सूचना उपलब्ध करायी गई।

ड. लगभग 205 शोधकर्ताओं को उनके विषयानुसार शोध परक सूचनाएँ उपलब्ध कराई गई।

2. *मुद्रा अनुभाग* :- अनुभाग में वर्ष, 2014-15 में किये गये कार्यो का विवरण-

क- मुद्रा अनुभाग से संबन्धित बाहरी व्यक्तियों/संस्थाओं से होने वाले पत्राचारों में सहयोग प्रदान किया गया।

ख-अनुभाग में संग्रहीत लगभग 1000 सिक्कों का रसायनिक उपचार करवाया गया।

ग-शोधकर्ताओं की मांग पर 300 सिक्कों के छायाचित्र तैयार किये गये।

घ. लगभग 1746 चॉदी व तॉबे के सिक्के एवं 16.152 किलो चॉदी व 142.920 किलो मिश्रित

धातु टी.टी. होल्ड द्वारा प्राप्त किये गये।

च. टी.टी. होल्ड से प्राप्त सिक्कों का वर्गीकरण डॉ. अनिता चौरसिया, मुद्राशास्त्र सहायक द्वारा किया गया।

3. *अस्त्र-शस्त्र एवं धातुकला अनुभाग* -अनुभाग में माह वर्ष, 2014-15 में किये गये कार्यो का विवरणः-

क - आरक्षित संकलन की साफ सफाई सुनिश्चित की गई।

ख - माह की कलाकृति हेतु दो धातु प्रतिमाएँ चयनित कर प्रदर्शित की गयी।

ग - वीथिका में साफ सफाई व प्रकाश व्यवस्था सुनिश्चित की गई।

घ - 250 कलाकृतियों का रसायनिक उपचार करवाया गया।

ड.- 70 धातु मूर्तियों की रिपोर्ट थाने आदि को भेजी गयी।

4. *चित्रकला अनुभाग* :- अनुभाग में वर्ष, 2014-15 में किये गये कार्यों का विवरण-

क- अनुभाग की साफ-सफाई का कार्य किया एवं अनुभाग से सम्बन्धित पत्रों का सम्पादन ।

ख- रागमाला पर आधारित विषयक प्रदर्शनी हेतु लघुचित्रों का माउन्ट तैयार करा कर वीथिका में प्रदर्शित किया गया।

ग- रागमाला पर आधारित विषयक प्रर्दशनी हेतु लघुचित्रों का कैप्सन तैयार कर लगाये गये।

घ- राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली से आये डॉ. विजय माथुर एवं डॉ. दलजीत कौर को उनके विषयानुसार लघुचित्रों का अवलोकन कराया गया।

5. *सज्जा कला अनुभाग-* अनुभाग में वर्ष, 2014-15 में किये गये कार्यों का विवरण :-

क- आरक्षित संकलन की साफ सफाई सुनिश्चित की गई।

ख - माह की कलाकृति हेतु दो पुरावशेष चयनित कर प्रदर्शित किया गया।

ग - वस्त्र प्रदर्शनी हेतु संग्रह में संग्रहित वस्त्रों में से साड़ी, शाल, ओढ़नी, पट्का आदि का चयन किया गया।

घ - डॉ. अनामिका पाठक, क्यूरेटर, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली को उनके विषयानुसार मांगे गये कला पुरावशेषों के छायाचित्र तैयार कर भेजे गये।

5. *प्राणिशास्त्र अनुभाग* - अनुभाग में वर्ष, 2014-15 में किये गये कार्यों का विवरण :-

क - प्राणि-ास्त्र आरक्षित संकलन को खुलवाकर वहाँ पर रखे गये एन्थ्रोपोलाजी के आब्जेक्टों की सामग्री मरम्मत का कार्य जानवरों की सफाई आदि व्यवस्था एवं जीवाणुओं से बचाने हेतु उनका रसायनिक उपचार का कार्य किया।

ख - प्राणिशास्त्र वीथिका के शोकेसों की साफ -सफाई व प्रकाश व्यवस्था का कार्य समय - समय पर करवाया गया।

ग. अनुभाग से सम्बन्धित पत्रों का सम्पादन का कार्य किया गया।

6. *रसायन अनुभाग-* अनुभाग में वर्ष, 2014-15 में किये गये कार्यों का विवरणः-

क - कॉपर सिक्कों का रसायनिक उपचार - 1000

ख - प्रस्तर कलाकृतियों का रसायनिक उपचार -300

ग - धातु कलाकृतियों का रसायनिक उपचार- 250

7. *छाया चित्रकला अनुभाग* - अनुभाग में वर्ष, 2014-15 में किये गये कार्यों का विवरण-

क - 1200 फोटो संग्रहालय में हुए शैक्षिक कार्यक्रम व अन्य कार्यक्रम के खीचे गये।

ख - 800 फोटो कम्प्यूटर द्वारा सही किये गये।

ग - वार्षिक कलेण्डर हेतु 5 X 7 के फोटो तैयार किये गये।

घ - 400 फोटो छायाचित्र संग्रहालय के अनुभागों के तैयार किये गये।

7. <u>माडलिंग अनुभाग</u> :- अनुभाग में वर्ष, 2014-15 में किये गये कार्यों का विवरण-

क. प्लास्टर आफॅ पेरिस में ढाली गई अनुकृतियाँ - 200 अदद

ख. फिनिस की गई अनुकृतियाँ - 150 अदद

ग. कलर एवं डस्टिंग करके तैयार की गई अनुकृतियॉं - 135 अदद

घ. तैयार किये गये साँचें - 60 अदद

ड़. जनपदीय संग्रहालय, सुल्तानपुर में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

8. <u>प्रकाशन अनुभाग-</u> अनुभाग में वर्ष, 2014-15 में किये गये कार्यों का विवरण-

क. सेल काउण्टर को आवश्यकतानुसार प्रकाशनों को विक्रय हेतु उपलब्ध करवाया गया।

ख. संग्रहालय पुरातत्व पत्रिका में मुद्रित होने वाले लेखो की प्रुफ रीडिंग का कार्य किया।

ग. संग्रहालय में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के कार्डो को मुद्रण कार्य हुआ।

9. <u>पुस्तकालय अनुभाग</u> :- अनुभाग में वर्ष, 2014-15 में किये गये कार्यो का विवरण-

क. पुस्तकालय हेतु शोधपरक पुस्तकों का क्रय किया गया।

ख. लगभग 1200 शोध कर्ताओं ने पुस्तकालय में अध्ययन किया।

<u>स्वीकृत पदों का विवरण :-</u>

संग्रहालय के संचालन हेतु संस्कृति विभाग, उ० प्र० शासन द्वारा निम्नलिखित पद स्वीकृत किए गए हैं :-

क्र. सं.	पदनाम	सादृश्य वेतन बैण्ड/ वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पदों की संख्या
1	2	3	4	5
1	मुद्राशास्त्र अधिकारी	15600-39100	5400	01
2	सहायक निदेशक	9300-34800	4800	06
3	पुस्तकालयाध्यक्ष ग्रेड-।	9300-34800	4600	01
4	रसायनविद् ग्रेड-।	9300-34800	4600	01
5	फोटो अधिकारी	9300-34800	4600	01
6	प्रशासनाधिकारी	9300-34800	4200	01
7	प्रकाशन सहायक	9300-34800	4200	01
8	माडलर	9300-34800	4200	02
9.	प्रर्दशक व्याख्याता	9300-34800	4200	02
10.	वैयक्तिक सहायक ग्रेड-2	9300-34800	4200	01
11.	लेखाकार	9300-34800	4200	01
12.	फोटोग्राफर	5200-20200	2800	01
13.	रसायनशाला सहायक	5200-20200	2800	01
14.	ज्येष्ठ चर्मपूरक	5200-20200	2800	01
15.	वरिष्ठ सहायक	5200-20200	2800	01
16.	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	03
17.	अभिरक्षक	5200-20200	2400	01
18.	मुद्राशास्त्र सहायक	5200-20200	2400	01
19.	स्वागतकर्ता	5200-20200	2000	01
20.	संग्रहालय सहायक	5200-20200	1900	01

21.	रसायन प्रयोगशाला सहायक	5200-20200	1900	01
22.	सहायक लेखाकार	5200-20200	2800	01
23.	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	2000	06
24.	वाहन चालक	5200-20200	1900	01
25.	कैबिनट कम पैडेस्टल मेकर	5200-20200	1800	01
26.	वर्कशाप मिस्त्री	5200-20200	1800	01
27.	लिफ्टमैन कम इलेक्ट्रीशियन	5200-20200	1800	01
28.	बढ़ई	5200-20200	1800	01
29.	चिन्हकर्ता	5200-20200	1800	01
30.	बुकबांइडर	5200-20200	1800	01
31.	दफ्तरी	5200-20200	1800	01
32.	जमादार	5200-20200	1800	02
33.	चपरासी	5200-20200	1800	02
34.	वीथिका परिचर	5200-20200	1800	24
35.	चौकीदार	5200-20200	1800	07
36.	माली	5200-20200	1800	04
37.	साइकिल स्टैंड परिचर	5200-20200	1800	01
38.	सफाई कर्मचारी	5200-20200	1800	05
	योग			90

राजकीय संग्रहालय, मथुरा

उत्तर प्रदेश के पश्चिम में 27/28 अंश अक्षांश उत्तर तथा 71 अंश रेखांश पूर्व में मथुरा नगर पश्चिम से पूर्व की ओर बहती यमुना नदी के पश्चिम किनारे पर भारत की राजधानी दिल्ली से 145 कि.मी. दक्षिण पूर्व तथा 58 कि.मी. आगरा के पश्चिम-उत्तर में स्थित है। मथुरा यमुना नदी के दाहिने तट पर प्राचीन धार्मिक केन्द्र के रूप में 12 वन 24 उपवन तथा 5 पवर्तमालाओं का क्षेत्र रहा है।

आदि काल से मथुरा कृष्ण की लीलास्थली के रूप में वैष्णवों की उपासना स्थली रही है। यहाँ पर बौद्ध, शैव, व जैनियों ने भी अपने पूजा-स्थलों का निर्माण किया। इनकी गणना सप्त महापुरियों में की जाती है। यहां क्रमशः नन्द, मौर्य, शुंग, क्षत्रप और कुशाण वंशों का शासन रहा। विभिन्न धर्मो से सम्बन्धित सहस्त्रों मूर्तियाँ मथुरा में बनी। यह कला लगभग 12वीं शती ई0 तक जारी रही। कालान्तर में उपासना स्थल टीलों में परिवर्तित हो गये। आज मथुरा इन्हीं टीलों पर बसा है, जिनसे अनेक लाल चित्तीदार बलुए पत्थर की तरासी मूर्तियों की धरोहर प्राप्त हुई। ये मूर्तियाँ मथुरा से बाहर आज तक्षशिला, सारनाथ, श्रावस्ती, भरतपुर, बोध गया, साँची, कुशीनगर तथा कौशाम्बी तक बिखरी हैं। इस शैली के प्रभाव के प्रमाण दक्षिण पूर्व एशिया तथा चीन तक प्राप्त हुए हैं। ऐसी ही अनेक प्रतिमाएँ राजकीय संग्रहालय, मथुरा में संग्रहीत हैं।

संग्रहालय ज्ञान का वातायन, भविष्य का शिक्षक, अतीत का संरक्षक एवं राष्ट्रीय एक्य का उन्नालय है। संग्रहालय सांस्कृतिक सम्पदा, ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक धरोहरों को सुरक्षित

एवं संरक्षित रखने का वह केन्द्र है, जहां प्राचीन कलाकृतियों को संग्रहीत कर राष्ट्र के अतीत की गौरवशाली संस्कृति का दर्शन, शोधार्थियों, बुद्धजीवियों तथा सामान्य जनमानस को कराया जाता है। संग्रहालय का कार्य कलाकृतियों एवं पुरावशेषों का संग्रह करना, संरक्षित करना, शोध करना तथा उन्हें प्रदर्शित करना है। संग्रहालय वर्तमान में अनौपचारिक शिक्षा का केन्द्र भी है, जो समय-समय पर प्रदर्शिनियाँ, व्याख्यान तथा संगोष्ठी आयोजित कर सामान्य जनमानस में कला के प्रति अभिरूचि जागृत कर शिक्षा प्रदान करने का कार्य भी करते हैं। भारतीय कला के क्षेत्र में मथुरा का ऐतिहासिक स्थान रहा है।

राजकीय संग्रहालय, मथुरा की स्थापना भारतीय कला के मनीषी विद्वान पुरातत्ववेत्ता तत्कालीन जिलाधीश श्री एफ0 एस0 ग्राउज द्वारा वर्ष 1874 ई0 में कचहरी के समीप कलात्मक भवन में की गई थी। राजकीय संग्रहालय, मथुरा अपने प्रारम्भ में ''कर्जन म्यूजियम ऑफ आर्कियोलॉजी'' के नाम से विख्यात रहा। वर्ष 1933 ई0 में संग्रहालय वर्तमान भवन में स्थानान्तरित हुआ। वर्ष 1945 से इसे ''पुरातत्व संग्रहालय'' तथा वर्ष 1974 से ''राजकीय संग्रहालय, मथुरा'' के रूप में जाना जाता है। वर्ष 2003 ई0 में प्राचीन भवन में तत्कालीन मुख्यमंत्री, उ0 प्र0 द्वारा जैन संग्रहालय का लोकार्पण किया गया। संग्रहालय के प्रथम भारतीय मानद संग्रहालयाध्यक्ष पं0 राधाकृष्ण हुए जिनके प्रयास से ही अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के कुषाण शासकों-वेम, कनिष्क एवं क्षत्रप शासक चष्टन आदि की उत्कृष्ट/ऐतिहासिक मूर्तियाँ संग्रहालय को मिली। डा0 दिलकेलकर, डा0 वी0 एस0 अग्रवाल, प्रो0 कृष्णदत्त बाजपेयी, डा0 नीलकण्ठ पुरूषोत्तम जोशी तथा डा0 आर0 सी0 शर्मा जैसे विद्वानों ने संग्रहालय की मूर्तियों का अध्ययन एवं प्रकाशन कर अन्तर्राष्ट्रीय कला जगत में मथुरा के इस कला संग्रह को प्रतिष्ठा दिलायी।

मूर्ति शिल्प में मथुरा कला शैली का स्थानीय केन्द्र होने तथा प्रारम्भ से ही संग्रहालय का स्वरूप मूलरूप से पुरातात्विक होने के कारण स्पष्टतः संग्रहालय के संकलन में अधिसंख्य कुषाण एवं गुप्तकालीन मथुरा शैली की प्रस्तर कलाकृतियाँ हैं, परन्तु अन्य वर्गों जैसे मृण्मूर्ति, सिक्के, लघुचित्र, धातुमूर्ति, काष्ठ एवं स्थानीय कला के अनेक दुर्लभ कलारत्न संग्रहीत हैं, जो संस्था के लिए गौरव स्वरूप हैं। मृण्मूर्तियों में शुंगकालीन मातृ देवी, कामदेव फलक, गुप्तकालीन नारी व विदूषक, कार्तिकेय, साँचे, सिक्कों में बलराम अंकित आहत मुद्राओं के साँचे, गोविन्द नगर से प्राप्त निधि तथा सौंख से प्राप्त सिक्के एवं कुषाण कालीन धातु मूर्तियों में कार्तिकेय, देव युगल प्रतिमा व नाग मूर्तियाँ, स्थानीय कला में मन्दिरों की पिछवईयां, सांझी के चित्र आदि संग्रहालय की अत्यन्त मूल्यवान धरोहर हैं।

संग्रहालय में निम्नानुसार जनसामान्य के अवलोकनार्थ वीथिकाएँ प्रदर्शित हैं :-

(1) टेराकोटा एवं पाषाण वीथिका

(2) मौर्य युगीन वीथिका

(3) शुंग युगीन वीथिका

(4) कुषाण वीथिका

(5) गंधार वीथिका

(6) नाग वीथिका

(7) गुप्त युगीन वीथिका

(8) बुद्ध वीथिका

(9) कुषाण बलराम वीथिका

(10) मध्यकालीन वीथिका

(11) सूर्य वीथिका

(12) कॉस्य वीथिका

<u>राजकीय संग्रहालय, मथुरा के संकलन का विवरण :-</u>

(1)	पाषाण प्रतिमाएँ	5097
(2)	मृण्मूर्तियाँ	2800
(3)	धातु कलाकृतियाँ	358
(4)	मिट्टी के वर्तन	293
(5)	लघु चित्र	418
(6)	विविध	1494
(7)	सौंख संकलन	12000

<u>सिक्के</u>

(1)	स्वर्ण	178
(2)	रजत	5800
(3)	ताम्र	18724
(4)	आभूषण	32

<u>संग्रहालय के शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्रियाकलापों का संक्षिप्त विवरण :-</u>

<u>(1) वीथिकाओं का रख-रखाव एवं नवीनीकरण :-</u> संग्रहालय में जन सामान्य के अवलोकनार्थ कुल 12 वीथिकाएँ प्रदर्शित हैं। इसका वर्णन पहले किया जा चुका है। 13 वें वित्त आयोग में वीथिकाओं का नवीनीकरण किया जा रहा है। वीथिकाओं का रख-रखाव ठीक है।

<u>(2) पुस्तकालय :-</u> संग्रहालय में एक विशाल संदर्भ पुस्तकालय है, किन्तु पुरताकलयाध्यक्ष के अभाव में बन्द पड़ा है।

<u>(3) अनुभागीय गतिविधियाँ (छायाचित्र, रसायन, मॉडलिंग) :-</u> छायाचित्रशाला में सहायक फोटोग्राफर की नियुक्ति है। इनके द्वारा संग्रहालय में समय-समय पर आयोजित कार्यक्रमों, व्याख्यान, प्रदर्शनी एवं

प्रतियोगिता आदि की फोटोग्राफी की जाती है। साथ ही विद्यालयों से आने वाले बच्चों की भी फोटोग्राफी की जाती है। फोटोग्राफर का पद रिक्त है। इसी प्रकार रसायन एवं मॉडलिंग अनुभाग क्रमशः कैमिस्ट एवं मॉडलर न होने के कारण काफी समय से बन्द हैं।

<u>(4)शैक्षिक एवं सॉस्कृतिक गतिविधियाँ :-</u> :- राजकीय संग्रहालय, मथुरा, उ0प्र0 की शैक्षिक प्रसार सेवा के अन्तर्गत विश्व संग्रहालय दिवस दिनांक **18 मई, 2014** को **''निष्प्रयोज्य सामग्री से निर्मित कलात्मक वस्तुओं की प्रदर्शनी''** का शुभारम्भ किया गया। यह प्रदर्शनी दिनांक 18 मई, 2014 से 21 मई, 2014 तक संग्रहालय दिवसों में दर्शकों के अवलोकनार्थ खुली रही। दिनांक **31 जुलाई, 2014** को **बाल फिल्म** का प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न स्कूलों से छात्र/छात्राओं ने अपने अध्यापक/अध्यापिकाओं के साथ आकर कार्यक्रम से मनोरंजन एंव ज्ञान प्राप्त किया। दिनांक **30 अगस्त, 2014** को डॉ0 कन्हैया लाल पाण्डेय, पूर्व न्यायिक मजिस्ट्रेट, मथुरा का **''ब्रज लोक संस्कृति''** विषयक व्याख्यान आयोजित किया गया। दिनांक 26 सितम्बर, 2014 को **''मूर्तिकला में बुद्ध मूर्तियों की छायाचित्र प्रदर्शनी''** का प्रारम्भ किया गया। प्रदर्शनी दिनांक 26 सितम्बर, 2014 से 28 सितम्बर, 2014 तक दर्शकों के अवलोकनार्थ खुली रही। दिनांक 18 अक्टूबर, 2014 को **''मृण्मूर्ति कला एवं मथुरा कला में हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ''** तथा दिनांक 19 अक्टूबर, 2014 को ''गान्धार कला एवं मथुरा कला में बौद्ध एवं जैन मूर्तियाँ'' विषयक व्याख्यान का आयोजन किया गया। बाल दिवस (14-11-2014) तथा वि-व धरोहर सप्ताह (19-11-2014 से 25-11-2014) के उपलक्ष्य में दिनांक **14 नवम्बर, 2014** को **''बच्चों की मुस्कान राष्ट्र की शान''** डाक टिकटों की बचपन विषयक प्रदर्शनी संग्रह- इं0 श्री रमेश चन्द्र भाटिया, 85 ए, गोविन्द नगर, मथुरा का आयोजन किया गया। दिनांक **07 दिसम्बर, 2014** को प्रो0 (डॉ0) अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पूर्व कुलपति, डॉ0 सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी का **''द्वापरयुगीन समाज के जीवन मूल्य एवं श्रीकृष्ण की भूमिका''** विषयक व्याख्यान आयोजित किया गया। दिनांक 28 दिसम्बर, 2014 को राजकीय संग्रहालय, मथुरा एवं हिन्दी प्रचार सभा, मथुरा के संयुक्त तत्वावधान में पं0 श्यामसुन्दर गोस्वामी द्वारा रचित **''मासूम है गजल एवं व्यंग्य सरोवर''** का लोकापर्ण समारोह आयोजित किया गया।

<u>(5) पर्यटक सुविधाऐं :-</u> यद्यपि प्रदर्शक व्याख्याता के पद रिक्त हैं, तथापि सहायक निदेशक एवं वीथिका सहायक द्वारा पर्यटकों को संग्रहालय भ्रमण कराया जाता है। संग्रहालय से सम्बन्धित साहित्य फोल्डर आदि का वितरण भी किया जाता है।

<u>(6) सुरक्षा एवं रख-रखाव :-</u> संग्रहालय में सुरक्षा के लिए उ0प्र0 पुलिस के 1 पर 4 गार्द तैनात हैं। रात्रि चौकीदारों की भी व्यवस्था है। दिन में वीथिका परिचर, वीथिकाओं की सुरक्षा के लिए रहते हैं।

<u>(7) अन्य कार्यक्रम :-</u>शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता रहता है।

(8) दर्शक/पर्यटक/आय की सूचना :- वित्तीय वर्ष 2014-15 में 31 दिसम्बर, 2014 तक राजकीय संग्रहालय, मथुरा में कुल 8011 देशी, 528 विदेशी कुल 8539 दर्शकों/पर्यटकों ने भ्रमण किया तथा राजकीय जैन संग्रहालय, मथुरा में 803 दर्शकों ने भ्रमण किया।

पदों का विवरण इस संग्रहालय में वर्तमान में निम्नलिखित पद स्वीकृत है:-

क्र.सं.	पदनाम	सादृश्य वेतन बैण्ड/वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पदों की संख्या
1	2	3	4	5
1	उपनिदेशक	15600-39100	6600	01
2	सहायक निदेशक	9300-34800	4800	01
3.	मॉडलर	9300-34800	4200	01
4.	प्रर्दशक व्याखाता	9300-34800	4200	02
5	प्रधान सहायक	9300-34800	4200	01
6.	पुस्तकालाध्यक्ष ग्रेड-II	5200-20200	2800	01
7.	रसायनविद् -II	5200-20200	2800	01
8.	आशुलिपिक	5200-20200	2800	01
9.	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	01
10.	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	2000	04
11.	फोटो लैब सहायक	5200-20200	1900	01
12.	बिक्री सहायक	5200-20200	1900	01
13.	संग्रहालय सहायक	5200-20200	1900	01
14.	वाहन चालक	5200-20200	1900	01
15.	वर्कशाप मिस्त्री	5200-20200	1800	01
16.	कर्मशाला/रसायन सहायक	5200-20200	1800	01
17.	जमादार	5200-20200	1800	01
18.	बुकबांइडर/ बुक लिफ्टर	5200-20200	1800	01
19.	मार्क्समैन	5200-20200	1800	01
20.	विद्युत मिस्त्री	5200-20200	1800	01
21.	दफ्तरी	5200-20200	1800	01
22.	वीथिका परिचर	5200-20200	1800	04
23.	चपरासी	5200-20200	1800	07
24.	माडलिंग परिचर	5200-20200	1800	01
25.	फर्रास	5200-20200	1800	01
26.	साइट कुली	5200-20200	1800	01
27.	भिश्ती	5200-20200	1800	01
28.	चौकीदार	5200-20200	1800	04
29.	माली	5200-20200	1800	03
30.	सफाई कर्मचारी	5200-20200	1800	02
31.	गार्डनर/डे चौकीदार	5200-20200	1800	01
	कुल योग			50

राजकीय संग्रहालय, झाँसी

विन्ध्याचल की गोद में बसे बुन्देलखण्ड का अतीत गौरवशाली रहा है। बुन्देलखण्ड पुरातात्विक दृष्टि रो अत्यन्त सम्पन्न है। इस क्षेत्र रो प्राप्त होने वाले पाषाण एवं ताम्र उपकरण इस बात का परिचायक है कि हजारों वर्ष पूर्व आदि मानव यहाँ विचरण करता था। देश के अतीत का दर्शन संग्रहालय के प्रदर्शों से होता है। ये प्रदर्श हमारे अतीत की समुन्नत विरासत का प्रतिनिधित्व करते हैं। बुन्देलखण्ड की यत्र-तत्र बिखरी कला सम्पदा के संग्रह, संरक्षण अभिलेखीकरण के साथ ही इस क्षेत्र के गरिमामयी इतिहास एवं संस्कृति की जानकारी जन सामान्य को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से यहाँ पर उ0 प्र0 सरकार द्वारा सन् 1978 में राजकीय संग्रहालय की स्थापना की गयी। वर्तमान भवन का शिलान्यास तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा 1982 में तथा उद्घाटन उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री मोती लाल बोरा द्वारा 29 फरवरी, 1996 को किया गया।

संकलन

राजकीय संग्रहालय झाँसी में लगभग 20,000 कलाकृतियाँ संग्रहीत है जिनमें प्रस्तर प्रतिमाएँ, मृण्मूर्तियाँ, धातु मूर्तियां, शिला लेख, ताम्र पत्र, सिक्के, मुहरें तथा विभिन्न शैली के लघुचित्र, आभूषण तथा काष्ठ कला से सम्बन्धित वस्तुएँ संग्रहीत है।

संग्रहालय की विभिन्न वीथिकाओं में लघु चित्र जिनमें राजस्थानी, पहाड़ी कोटा आदि शैली के चित्र प्रदर्शित किये गये। वैष्णव प्रतिमाएँ, गणेश की चौदह भुजी नृत्य प्रतिमा अत्यन्त महत्वपूर्ण और सौन्दर्य की दृष्टि से प्रभावशाली है, प्रदर्शित की गयी।

संग्रहालय के शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्रियाकलापों का विवरण :-

1- राजकीय संग्रहालय, झाँसी एवं डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा स्मृति समिति, झाँसी के संयुक्त तत्वावधान में डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा जन्म दिवस के अवसर पर सचिव, दि हेरिटेज फाउंडेशन, नई दिल्ली के व्याख्यान का आयोजन किया गया।

2- राजकीय संग्रहालय, झाँसी एवं वीरांगना झलकारी बाई समिति, झाँसी के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी एवं वीरांगना झलकारी बाई की डॉक्यूमेंटरी फिल्म का प्रदर्शन किया गया।

3- राजकीय संग्रहालय, झाँसी एवं दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला झाँसी के संयुक्त तत्वाधान में बेटी बचाओ अभियान के अन्तर्गत पेन्टिंग कार्यशाला का आयोजन एवं पेन्टिंग का प्रदर्शन किया गया।

4- राजकीय संग्रहालय, झाँसी द्वारा स्कूली बच्चों के लिये फिल्म प्रदर्शन किया गया।

5- विश्व धरोहर दिवस के अवसर पर राजकीय संग्रहालय, क्षेत्रीय पुरातत्व इकाई, जिला प्रशासन, एवं समाज सेवी संगठन काइन्ड इनीसिएटिव, वेदान्ता एवं दि ग्रेट झाँसी एडवेंचर के सामूहिक प्रयास रो संग्रहालय में चित्रकला एवं निबन्ध प्रतियोगिता एवं फोटोग्राफी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

6- वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस की पूर्व संध्या पर राजकीय संग्रहालय एवं संस्कार भारती, झाँसी के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन एवं फिल्म प्रदर्शन किया गया।

7- राजकीय संग्रहालय एवं गहोई महिला जागृति क्लब, झाँसी के संयुक्त तत्वावधान में समर कैम्प का आयोजन किया गया जिसमें आर्ट एवं क्राफ्ट, कुकिंग, पर्सनल्टी डेवलपमेन्ट, माइन्ड पावर, नृत्य एवं गायन तथा प्राचीन केश सज्जा का प्रशिक्षण कुशल प्रशिक्षकों द्वारा दिया गया। समापन के अवसर पर प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिये गये।

8- स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर जिला प्रशासन, शिक्षा विभाग व राजकीय संग्रहालय, झाँसी के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय गीत एवं नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

9- स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर "सुभाष चन्द्र बोस" फीचर फिल्म का प्रदर्शन किया गया।

10- हिन्दी पखवाड़ा के अन्तर्गत "मूर्धन्य साहित्यकारों" पर प्रदर्शनी एवं "रामकथा में नारी चित्रण" विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

11- विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर राजकीय संग्रहालय, क्षेत्रीय पर्यटन कार्यालय, क्षेत्रीय पुरातत्व इकाई एवं मुख्य विकास अधिकारी, झाँसी के संयोजन में दो दिवसीय कार्यक्रमों में विभिन्न ऐतिहासिक स्थानों एवं व्यक्तियों पर अस्थायी प्रदर्शनी, पर्यटन और सामुदायिकता विषय पर संगोष्ठी, स्पॉट पेन्टिंग प्रतियोगिता तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

12- राजकीय संग्रहालय, झाँसी एवं गाँधी स्मृति समिति, झाँसी के संयुक्त तत्वाधान में गाँधी जीवन पर आधारित चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें 110 दुर्लभ चित्र लगाये गये।

13- राजकीय संग्रहालय, झाँसी एवं क्षेत्रीय पुरातत्व इकाई, झाँसी के संयुक्त तत्वावधान में विश्व धरोहर सप्ताह के अन्तर्गत चित्र प्रदर्शनी एवं स्कूली छात्र- छात्राओं की धरोहर से सम्बन्धित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में लगभग 150 चित्रों को प्रदर्शित किया गया। साथ ही स्थानीय कलाकारों के चित्रों को भी लगाया गया। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में लगभग 120 बच्चों ने भाग लिया। विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

14- राजकीय संग्रहालय, झाँसी में स्कूली छात्रों के लिये कार्टून फिल्म "रामायण" का प्रदर्शन किया गया।

(2) छायाचित्र अनुभाग :-

1- संग्रहालय में आयोजित कार्यक्रमों का छायांकन किया गया एवं संग्रहालय की 40 कलाकृतियों के छायाचित्र तैयार किये गये।

(3) माडलिंग अनुभाग :-

आलोच्य अवधि में पच्चीस मूर्तियों के रंग-रोगन, फिनिशिंग व टचिंग का कार्य किया गया।

4) पुस्तकालय :-

आलोच्य अवधि में पैंतीस शोधार्थियों द्वारा अपने विषय का अध्ययन किया गया ।

(6) भ्रमण :-

1- आलोच्य अवधि में 39477 दर्शकों व 49 विदेशी पर्यटक तथा 4416 स्कूली बच्चों व 392 अध्यापकों ने संग्रहालय का भ्रमण किया।

संग्रहालय में वर्तमान में निम्नलिखित पद स्वीकृत हैं :-

क्र.सं.	पदनाम	सादृश्य वेतन बैण्ड/वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पदों की संख्या
1	2	3	4	5
1	उपनिदेशक	15600-39100	6600	01
2	सहायक निदेशक	9300-34800	4800	01
3.	मॉडलर	9300-34800	4200	01
4.	छाया चित्रकार	9300-34800	4200	01
5.	आशुलिपिक	5200-20200	2800	01
6.	सहायक लेखाकार	5200-20200	2800	01
7.	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	01
8.	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	2000	01
9.	संग्रहालय सहायक	5200-20200	1900	01
10.	वाहन चालक	5200-20200	1900	01
11.	कैबिनट/ पैडस्टल मेकर	5200-20200	1800	01
12.	बिजली मिस्त्री	5200-20200	1800	01
13.	वीथिका परिचर	5200-20200	1800	06
14.	चपरासी	5200-20200	1800	01
15.	चौकीदार	5200-20200	1800	02
16.	चौकीदार कम माली	5200-20200	1800	01
17.	माली	5200-20200	1800	01
18.	सफाई कर्मी	5200-20200	1800	01
	कुल योग			24

राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर

पूर्वी उत्तर प्रदेश का क्षेत्र ऐतिहासिक व पुरातात्विक दृष्टि से न केवल भारत में वरन् विश्व स्तर पर सुविख्यात है। शाक्यों का कपिलवस्तु, कोलियों का रामग्राम, मोरियों का पिप्लीवन जनतंत्रात्क थी। ऐसे में हम यह कह सकते हैं कि जनतंत्र की प्रथम प्रयोगशाला होने का गौरव इस क्षेत्र को ही प्राप्त है। इतना ही नहीं, यहाँ के गणराज्य निःसन्देह यूनानी गणराज्यों से प्राचीन थे। ऐसे में यदि हम इस क्षेत्र के गणराज्यों को विश्व का प्राचीनतम गणराज्य कहें, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा। पूर्वी उत्तर प्रदेश बौद्ध धर्म के उद्भव और विकास का हृदय स्थल रहा है। भगवान बुद्ध के जीवन की घटनाओं से सम्बन्धित स्थान लुम्बिनी, देवदह, कोलियों का रामग्राम, कोपिया एवं तथागत की महापरिनिर्वाण स्थली कुशीनगर इसके महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं। जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर महावीर की परिनिर्वाण स्थली पावानगर भी इसी क्षेत्र में विद्यमान है। आमी नदी के तट पर स्थित संत शिरोमणि कबीरदास की निर्वाण स्थली मगहर और नाथ पंथ के गोरखनाथ की तपोभूमि भी यहाँ के इतिहास के कलेवर को उद्घाटित करता है।

पूर्वी क्षेत्र में यत्र-तत्र बिखरी सम्पदा के संग्रह, संरक्षण, अभिलेखीकरण, प्रदर्शन एवं शोध के साथ ही इस क्षेत्र के गरिमामय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व की जानकारी जन सामान्य को उपलब्ध कराने के बहुउद्देश्य से संस्कृति विभाग, उ0 प्र0 शासन द्वारा सन् 1988 में राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर की स्थापना की गई। पूर्व में यह संग्रहालय किराये के भवन में था। वर्तमान में रामगढ़ताल परियोजना गोरखपुर के अन्तर्गत निर्मित संग्रहालय भवन, गोरखपुर रेलवे एवं बस स्टेशन से लगभग 6 किमी0 दक्षिण एवं सर्किट हाउस से लगभग 1 किमी0 दक्षिण-पूर्व में स्थित है।

संग्रहालय द्वारा संग्रहीत कलाकृतियाँ जहाँ एक ओर हमारे समृद्ध कला एवं संस्कृति का आभास कराती हैं, वहीं दूसरी ओर वर्तमान पीढ़ी को उनके गौरवमयी विरासत से परिचित कराते हुए भविष्य के प्रेरणा स्रोत भी हैं।

2- संग्रहालय का बहुउद्देश्य एवं गतिविधियाँ :-

संग्रहालय का प्रमुख बहुउद्देश्य पूर्वी क्षेत्र एवं देश के अन्य भागों से प्राप्त पुरासम्पदा का संकलन, अभिलेखीकरण, संरक्षण, प्रदर्शन, प्रकाशन तथा देशी-विदेशी पर्यटकों को आकृष्ट कर उन्हें भारतीय संस्कृति के विविध पहलुओं की जानकारी उलब्ध कराना है। भारतीय इतिहास, कला, संस्कृति और पुरातत्व की जानकारी जन-सामान्य को उपलब्ध कराने के बहुउद्देश्य से संग्रहालय द्वारा शैक्षिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत प्रतिष्ठित विद्वानों के व्याख्यान एवं संगोष्ठी के अतिरिक्त विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जाता है।

3- सर्वेक्षण/संकलन

संग्रहालय द्वारा समय-समय पर स्थलीय सर्वेक्षण, दान, उपहार, दीर्घकालीन ऋण एवं क्रय द्वारा संग्रह में अभिवृद्धि की जाती रही है। वर्तमान में संग्रहालय के पंजीयन रजिस्टर के अनुसार क्रमांक-01/1991 से 2219/2012 तक कुल 4358 अदद कलाकृतियों/पुरावशेषों का संग्रह स्थलीय सर्वेक्षण, दान, उपहार, दीर्घकालीन ऋण एवं क्रय द्वारा किया गया है। संग्रहालय में प्रागैतिहासिक कलाकृतियों के साथ-साथ प्रस्तर, मृण, धातु मूर्तियाँ, आभूषण, सिक्के, लघुचित्र, थंका, हाथीदाँत एवं हस्तलिखित ग्रन्थ, डाक टिकट आदि का संकलन है। संग्रहालय द्वारा प्रतिवर्ष भारतीय संस्कृति एवं पुरातत्व के विभिन्न विषयों पर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले शोध छात्रों/विद्वतजन को आवश्यक जानकारी एवं आवश्यकतानुसार वांछित कलाकृतियों के छायाचित्र हेतु फोटोग्राफी करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

4-प्रदर्शन व्यवस्था :-

राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर में संग्रहीत कलाकृतियों में प्रस्तर मूर्तियाँ, मृण्मूर्तियाँ, वास्तुकला के अवशेष, मिट्टी की मुहरें, धातु प्रतिमाएँ, आभूषण, सिक्के, तिब्बती थंका, लघुचित्र, पाण्डुलिपियाँ एवं डाक टिकट विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। संरक्षित संकलन में से कतिपय चयनित कलाकृतियों को निम्नलिखित वीथिकाओं में प्रदर्शित किया गया है :-

प्रथम वीथिका (राहुल सांकृत्यायन कला वीथिका) में भगवान बुद्ध एवं बौद्ध धर्म से सम्बन्धित कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया है, जिसमें भगवान बुद्ध के विविध स्वरूपों, मुद्राओं के प्रदर्शन के अतिरिक्त मथुरा शैली में निर्मित गुप्तकालीन अलंकृत प्रभामण्डल एवं बुद्ध मस्तक से आदम कद मूर्तियों के निर्माण का स्पष्ट संकेत मिलता है। पाल वंशीय नरेशों के काल में पूर्वांचल पुनः बौद्ध धर्म और कला के हलचल का केन्द्र बना। फलस्वरूप अनेक प्रकार के तांत्रिक प्रतिमाओं और बौद्ध स्तूपों का निर्माण हुआ, जिनके नमूने भी प्रदर्शित कलाकृतियों में देखे जा सकते हैं। धर्म और कला की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण पवित्र मांगलिक चिन्हों से युक्त मथुरा शैली की कुषाणकालीन अभिलिखित आयागपट्ट के अतिरिक्त ऋषभनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर की प्रस्तर प्रतिमाएँ भी इस वीथिका में प्रदर्शित की गयी हैं।

द्वितीय वीथिका (पुरातत्व वीथिका) में प्रस्तर एवं मृण कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया है, जिसमें क्रमबद्ध पाषाणकालीन उपकरणों एवं पूर्व मौर्य काल से गुप्त काल तक की मृण मूर्तियों एवं हिन्दू धर्म से सम्बन्धित प्रस्तर मूर्तियों को कालक्रमानुसार प्रदर्शित किया गया है। वीथिका में प्रदर्शित मौर्यकाल से गुप्तकाल तक मृण्मूर्तियों में शिशु का आहार करती डाकिनी (हारिती), पशुसिर युक्त मोढ़े पर बैठी मातृका, शुकसारिका, विविध पशु आकृतियाँ, मत्स्य व जलपात्र के अतिरिक्त सिक्कों एवं मृण्मूर्तियों के साँचे विशेष रूप से दर्शनीय हैं। हिन्दू धर्म से सम्बन्धित प्रस्तर मूर्तियों में अष्टभुजी नृत्य गणेश,

त्रिशूलधारी शिव, शेषशायी विष्णु, सप्तमातृकाएँ, नवग्रह एवं कसौटी पत्थर पर बनी पाल शैली उमा-महेश्वर की प्रतिमा दर्शनीय है।

तृतीय वीथिका (कला के विविध आयाम) में कुषाण काल से आधुनिक काल तक की विविध माध्यमों में (मृण, प्रस्तर, धातु, हाथी दाँत, सीसा आदि) बनी कलाकृतियाँ प्रदर्शित की गई है। इसके अतिरिक्त इसी वीथिका में भगवान बुद्ध के जीवन की विविध घटनाओं एवं बौद्ध धर्म से सम्बन्धित झाँकी छायाचित्रों के माध्यम से प्रदर्शित की गई है।

चतुर्थ वीथिका (चित्रकला वीथिका) में तिब्बत एवं नेपाल में प्रचलित थंका तथा राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला के विभिन्न शैलियों की लघुचित्रकला के नमूने प्रदर्शित किये गये हैं।

पांचवी वीथिका (जैन वीथिका) में जैन धर्म से सम्बन्धित मूल कलाकृतियों/अनुकृतियों को प्रदर्शित किया गया है। वीथिका में चौबीस तीर्थंकरों के जन्म स्थान, माता-पिता तथा उनके लांछन सहित प्रदर्शित कलाकृतियों का संक्षिप्त इतिहास जनसामान्य के आकर्षण का केन्द्र है।

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा क्षेत्रीय एवं स्थानीय संग्रहालयों के विकास हेतु प्राप्त वित्तीय सहायता से इस संग्रहालय में एक बाल वीथिका भी बनाई जा रही है, जिसमें कुल 19 डायरमा (12 स्वचालित एवं 07 स्थिर डायरमा) के माध्यम से मनोरंजन पूर्ण ढंग से इतिहास एवं संस्कृति के विविध पक्षों का प्रदर्शन किया गया है। बाल वीथिका में शिकार का दृश्य, आग का अविष्कार, कृषि का प्रारम्भ, हड़प्पा के अवशेष, प्रारम्भिक सिक्के (आहत मुद्रा) का निर्माण, शिलालेख का प्रारम्भ, चाक पर मिट्टी का बर्तन बनाने, प्रस्तर खण्ड से मूर्ति बनाना (तक्षण कला) अजन्ता की चित्रकारी, भारी प्रस्तर एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाते, पाण्डुलिपि का प्रारम्भ, निर्माणाधीन ताजमहल को देखते शाहजहाँ, भगवान बुद्ध, महावीर, कबीर, गीता प्रेस, गोरखनाथ मन्दिर, जलीय जीवन, पर्यावरण प्रदूषण आदि के दृश्य रोचक ढंग से दिखाये गये हैं। उक्त वीथिका का कार्य अन्तिम चरण में है, जो जनसामान्य के अवलोकनार्थ यथाशीघ्र खोल दिया जाएगा।

इसके अतिरिक्त समय-समय पर विविध विषयों पर आधारित अस्थायी प्रदर्शनी भी लगायी जाती है।

5- पुस्तकालय

संग्रहालय में एक सन्दर्भ पुस्तकालय भी है, जिसमें कला, इतिहास, संस्कृति, पुरातत्व, मुद्राशास्त्र एवं प्राणिशास्त्र से सम्बन्धित लगभग 1327 पुस्तकें हैं। संग्रहालय द्वारा प्रतिवर्ष भारतीय संस्कृति एवं पुरातत्व के विभिन्न विषयों पर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले एवं शोध छात्रों/विद्वत्जनों को आवश्यक जानकारी, संदर्भ पुस्तकालय की सुविधा प्रदान की जाती है।

6- शैक्षिक गतिविधियाँ :-

(क) प्राचीन स्मारकों पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी- विश्व धरोहर दिवस की पूर्व संध्या पर दिनांक 17 अप्रैल, 2014 को संग्रहालय द्वारा प्राचीन स्मारकों (ग्वालियर दुर्ग के दुर्लभ छायाचित्र) पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जो दिनांक 20 अप्रैल, 2014 तक जनसामान्य के अवलोकनार्थ खुली रही।

(ख) बौद्ध कला पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी- विश्व संग्रहालय दिवस के अवसर पर दिनांक 18 मई, 2014 को बौद्ध कला पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जो दिनांक 31 मई, 2014 तक जनसामान्य के अवलोकनार्थ खुली रही।

(ग) चित्रकला प्रतियोगिता- दिनांक 31 जुलाई, 2014 को चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार व प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया गया।

(घ) स्वतंत्रता आन्दोलन पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी - दिनांक 22 अगस्त, 2014 को संग्रहालय द्वारा स्वतंत्रता आन्दोलन पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जो दिनांक 31 अगस्त, 2014 तक़ जनसामान्य के अवलोकनार्थ खुली रही।

(च) प्रदर्शनी- दिनांक 16 सितम्बर, 2014 को राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर तथा रोटरी क्लब गोरखपुर मिडटाउन, के संयुक्त तत्वावधान में संग्रहालय परिसर में साक्षरता पर आधारित छायाचित्र व पोस्टर प्रदर्शनी तथा पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जो दिनांक 30 सितम्बर, 2014 तक जनसामान्य के अवलोकनार्थ खुली रही।

(छ) सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता- दिनांक 24 सितम्बर, 2014 को सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार व प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया गया।

(ज) प्रदर्शनी- दिनांक 10 अक्टूबर, 2014 को राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर द्वारा 'सिक्कों की कहानी, चित्रों की जुबानी' विशयक छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जो दिनांक 31 अक्टूबर, 2014 तक जनसामान्य के अवलोकनार्थ खुली रही।

(झ) व्याख्यान- दिनांक 14 नवम्बर, 2014 को राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर द्वारा 'गोरखपुर क्षेत्र की पुरासम्पदा विषयक' व्याख्यान का आयोजन किया गया।

(ट) वीथिका व्याख्यान- दिनांक 15 नवम्बर, 2014 को स्थानीय विद्यालय/महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को वीथिका व्याख्यान के माध्यम से प्रदर्शित कलाकृतियों/पुरावशेषों के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की गयी।

(ठ) क्ले माडलिंग वर्कशाप एवं प्रतियोगिता - दिनांक 05 दिसम्बर, 2014 को संग्रहालय द्वारा क्ले माडलिंग वर्कशाप एवं प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर प्रतिभागियों को मिट्टी की उपादेयता की विस्तृत जानकारी देते हुए मिट्टी से खिलौने बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया गया।

(ड) कला प्रदर्शनी एवं वीथिका भ्रमण- दिनांक 06 दिसम्बर, 2014 को 'कला प्रदर्शनी एवं वीथिका भ्रमण' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर संग्रहालय द्वारा अस्थायी कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया तथा स्थानीय विद्यालय/महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को वीथिका व्याख्यान के माध्यम से अपने धरोहर के प्रति जागरूक किया गया।

उक्त के अतिरिक्त विद्यालयों/महाविद्यालयों से व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क कर निःशुल्क शैक्षिक भ्रमण हेतु उनकी सुविधानुसार तिथि पर आमंत्रित किया जाता है एवं उन्हें वीथिका-व्याख्यान के माध्यम से लाभान्वित भी किया जाता है।

6- संग्रहालय भ्रमण -

संग्रहालय में दिनांक 01 अप्रैल, 2014 से 31 दिसम्बर, 2014 तक शैक्षिक भ्रमण सहित आने वाले भारतीय एवं विदेशी पर्यटकों का विवरण निम्नवत है -

(1) शैक्षिक भ्रमण पर आने वाले विद्यालय/महाविद्यालयों की कुल संख्या -	37
(2) शैक्षिक भ्रमण सहित कुल भारतीय दर्शकों/पर्यटकों की संख्या -	4959
(3) विदेशी दर्शकों/पर्यटकों की संख्या -	04

7- प्रवेश टिकट व्यवस्था -

संस्कृति विभाग, उ0प्र0 शासन द्वारा राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर हेतु प्रवेश टिकट की व्यवस्था निम्नवत निर्धारित की गई है -

1- 5 वर्ष तक के बच्चों के लिए -	निःशुल्क।
2- 5 वर्ष से ऊपर आयु के भारतीय दर्शको हेतु प्रवेश शुल्क -	रू0- 3.00 मात्र प्रति दर्शक।
3- विदेशी पर्यटकों हेतु प्रवेश शुल्क -	रू0-10.00 मात्र प्रति दर्शक।
4- फोटो कैमरा शुल्क -	रू0-20.00 मात्र प्रति कैमरा।
5- शैक्षिक भ्रमण शोधार्थियों हेतु -	निः शुल्क।
6- सभागार का किराया -	रू0 2000.00 प्रति दिन

8- स्वीकृत पदों का विवरण :-

संग्रहालय पूर्वांचल के गरिमामय इतिहास, कला एवं संस्कृति के बहुमुखी विकास हेतु सतत् प्रयत्नशील है। संग्रहालय के समुचित संचालनहेतु संस्कृति विभाग, उ0 प्र0 शासन द्वारा निम्नलिखित पद सृजित हैं :-

क्र. सं.	पदनाम	सादृश्य वेतन बैण्ड/वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पदों की संख्या
1	2	3	4	5
1	उप निदेशक	15600-39100	6600	01
2	वयैक्तिक सहायक ग्रेड-2	9300-34800	4200	01
3	लेखाकार	9300-34800	4200	01
4	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	01
5	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	2000	01
6	वाहन चालक	5200-20200	1900	01
7	वीथिका परिचर	5200-20200	1800	04
8	चपरासी	5200-20200	1800	02
9	चौकीदार	5200-20200	1800	02
10	सफाई कर्मचारी/फर्राश	5200-20200	1800	01
	योग			15

रामकथा संग्रहालय, अयोध्या-फैजाबाद

अयोध्या के महत्व तथा रामकथा की व्यापकता को दृष्टिगत रखते हुए मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम की जन्म स्थली तथा भारतीय जनमानस की वन्दीया नगरी अयोध्या में संस्कृति विभाग, उ0 प्र0 सरकार द्वारा रामकथा संग्रहालय की स्थापना माह जनवरी, 1988 में की गयी तब से निरन्तर अपने बहुउद्देश्यों की प्रति रामकथा संग्रहालय अग्रसर है।

संग्रहालय का बहुउद्देश्य जहाँ एक तरफ रामकथा विषयक सचित्र, पाण्डुलिपियों, मूर्तियों, रामलीला व अन्य प्रदर्श कलाओं से सम्बन्धित सामग्री, अयोध्या परिक्षेत्र के पुरावशेषों, दुर्लभ सांस्कृतिक सम्पदा व प्रदर्श कलाओं, अनुकृतियों, छायाचित्रों का संकलन व परिवीक्षा करना है वहीं दूसरी तरफ संकलित सामग्री का वीथिकाओं में प्रदर्शन, छायाचित्रीकरण व अभिलेखीकरण तथा शैक्षिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत व्याख्यानों, गोष्ठियों प्रतियोगिताओं व कार्यशालाओं तथा अस्थायी प्रदर्शिनियों का आयोजन करना भी है।

संग्रहालय में अभी तक 1020 कलाकृतियों का संकलन हो चुका है तथा 313 कलाकृतियों को संग्रहालय वीथिका में प्रदर्शित किया गया है। संग्रहालय देखने के लिए दर्शकों के लिए निःशुल्क व्यवस्था है। प्रतिमाह दर्शकों की औसतन संख्या 2000 से अधिक हो जाती है, स्थानीय मेलों, विभिन्न त्यौहारों, रामनवमी, चौदह कोसी परिक्रमा आदि के अवसरों पर दर्शकों की संख्या अत्यधिक बढ़ जाती है। संग्रहालय की तरफ दर्शकों का आकर्षण बढ़ा है।

शोधार्थियों की सुविधा के लिए संग्रहालय में एक पुस्तकालय भी है। अभी तक 857 पुस्तकों को पंजीकृत किया जा चुका। अन्तर्राष्ट्रीय रामकथा संग्रहालय एवं आर्ट गैलरी नया घाट अयोध्या-फैजाबाद में दिनांक 01 जनवरी, 2015 में नवनिर्मित भवन में संचालित है। 10 जनवरी, 2015 को नये भवन में स्थानान्तरण किया गया।

संग्रहालय अभी तुलसी स्मारक भवन में किराये के भवन में चल रहा है। संग्रहालय के समुचित विकास के लिए निजी भवन की महती आवश्यकता है, जो सरयू तट पर निर्माणाधीन है, जिसमें यथाशीघ्र संग्रहालय स्थानान्तरित हो जाने पर संग्रहालय का विस्तार हो सकेगा।

शैक्षिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत दिनांक 27 अप्रैल, 2014 को रामकथा विषयक पर व्याख्यान। दिनांक 18 मई, 2014 को फैजाबाद की सांस्कृतिक धरोहर विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

दिनांक 17 से 21 जून, 2014 तक 05 दिवसीय चित्रकला प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। दिनांक 06 जुलाई, 2014 को मूक बधिर विद्यार्थियों की कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। दिनांक 27 अगस्त, 2014 को जूनियर वर्ग की चित्रकला रामकथा विषय पर आयोजन किया गया। दिनांक 20 सितम्बर, 2014 को रामकथा विषयक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दिनांक 03, 04 तथा 29 अक्टूबर, 2014 को आयोजित रामकथा विषयक चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। दिनांक 07-08 दिसम्बर, 2014 को ''बचपन'' बच्चों पर केन्द्रित कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

संग्रहालय के कार्यों के संचालन हेतु निम्नलिखित पद सृजित हैं :-

क्र0सं0	पदनाम	सादृश्य वेतन बैण्ड/वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पदो की संख्या
1.	2.	3	4	5
1.	उप निदेशक	15600-39100	6600	01
2.	लेखाकार	9300-34800	4200	01
3.	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	01
4.	वाहन चालक	5200-20200	1900	01
5.	वीथिका परिचर	5200-20200	1800	01
6.	चपरासी/अर्दली	5200-20200	1800	01
7.	चौकीदार/माली	5200-20200	1800	02
कुल पद				08

लोककला संग्रहालय, लखनऊ

लोक कला परम्पराऐं हमें विरासत एवं परम्पराओं से प्राप्त होती है, जिनका मूल अति प्राचीन है। जन्म से लेकर मृत्यु तक यह हमारे जीवन में रची बसी होती है और पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती हैं, किन्तु सामयिक परिवर्तन के कारण आधुनिकीकरण एवं औद्योगिकीकरण की आंधी में हमारे प्रदेश की लोक कला परम्पराऐं शनैः शनैः विलुप्त होती जा रही हैं एवं इनका मूल स्वरूप भी परिवर्तित हो रहा है। इसलिए इन प्राचीन लोककला परम्पराओं के मूल स्वरूप को अक्षुण्ण बनाये रखने एवं इनके विशेष दस्तावेजों को संकलित कर भविष्य के लिए सुरक्षित रखनें के बहुउद्देश्य से संस्कृति विभाग, उ0 प्र0 द्वारा फरवरी, 1989 में लोककला संग्रहालय की स्थापना कला परिसर कैसरबाग में की गयी थी। वर्तमान में नवनिर्मित लोककला संग्रहालय भवन, राज्य संग्रहालय परिसर, बनारसीबाग, लखनऊ में स्थापित है।

लोककलाओं के संकलन, संरक्षण तथा प्रदर्शन की दिशा में कार्यरत् लोककला संग्रहालय प्रदेश का एक मात्र संग्रहालय है।

संकलन :-

सम्प्रति संग्रहालय में प्रदेश के विभिन्न अंचलों की उत्कृष्ट एवं दुर्लभ लोककलाओं से सम्बन्धित लगभग 1900 कलाकृतियों का संग्रह है इनमें लोकनृत्य, लोक वाद्य, लोककला आलेखन, आभूषण, पोशाक, टेराकोटा, पारम्परिक मुखौटे, काष्ठ, लौह एवं प्रस्तर के खिलौने वर्तन तथा इनसे सम्बन्धित कला नमूने संग्रहीत हैं। संग्रहालय में भूमि एवं भित्ति अलंकरण से सम्बन्धित लोककला चित्रों का विशाल

संग्रह है, जो संरक्षित संकलन के रूप में व्यवस्थित है। इन चित्रों की रामय-समय पर प्रदर्शनी आयोजित की जाती है। संग्रहालय में कला प्रदर्शों का संग्रह प्रदर्श क्रय-समिति के माध्यम से तथा स्थान-स्थान का भ्रमण और सर्वेक्षण कर किया जाता है।

प्रदर्शन :-

संग्रहालय में उपलब्ध कला प्रदर्शों को प्रदेश के प्रमुख 05 क्षेत्रों यथा-ब्रज, बुन्देलखण्ड, अवध, भोजपुर एवं रूहेलखण्ड में विभक्त किया गया है। थारू जनजाति पर आधारित नये थारू वीथिका हेतु प्रस्ताव निदेशालय प्रेषित है, स्वीकृति उपरान्त कार्य पूर्ण कराया जाएगा। इनके क्षेत्रवार प्रदर्शन हेतु अलग-अलग कक्षों का निर्माण कराकर उनमें कलाकृतियों को अत्यन्त आकर्षक, सुरूचिपूर्ण एवं आधुनिक तकनीक में प्रदर्शित किया जाएगा।

संग्रहालय के द्वितीय तल पर एक हस्तशिल्प वीथिका का निर्माण किया जाना प्रस्तावित है।

लोकनृत्यों के डायरमा, विवाह मण्डप, जनेऊ संस्कार के डायरमा, पोशाक, लोकवाद्य, मुखौटे खिलौने तथा क्षेत्र विशेष की रहन सहन की शैली को दर्शाते हुए भिन्न भिन्न प्रकार की पारम्परिक झोंपड़ियों को तैयार करवाकर उनमें बर्तन चूल्हा, चौका आदि का प्रदर्शन कराया जाएगा। नये भवन में काफी जगह है जो समय-समय पर प्रगति कर काफी सुन्दर संग्रहालय का निर्माण करेगा। संग्रहालय विकास कार्य अभी प्रगति की ओर अग्रसर है।

भूमि एवं भित्ति अलंकरण :-

प्रदेश में भूमि एवं भित्ति अलंकरण की परम्पराएँ बहुत समृद्ध तथा विविध प्रकार की विद्यमान है। आलेखन शुभ सुख समृद्धि की महती भावना से बनाये जाते हैं। संग्रहालय में आलेखन और लोकचित्रों का अद्वितीय संग्रह है। जो समय-समय पर इनकी प्रदर्शनी लगवायी जाती है।

टेराकोटा मिट्टी की मूर्तियाँ :-

टेराकोटा एक परम्परागत हस्त शिल्प है। साधारण तौर पर टेराकोटा के अन्तर्गत देवी देवताओं की मूर्तियाँ घोड़ा, हाथी और खिलोने बनाये जाते हैं। संग्रहालय में टेराकोटा का विशाल संग्रह उपलब्ध है।

आभूषण :-

प्रदेश के प्रत्येक क्षेत्र के पहनावे, रहन-सहन में विविधता पायी जाती है। इसके अन्तर्गत अलग-अलग क्षेत्रों के विविध प्रकार के प्राचीन तथा दुर्लभ लोक कलात्मक आभूषण संग्रहालय में संग्रहीत कर प्रदर्शित किये गये हैं।

हस्तशिल्प :-

अवध के ग्रामीण अँचलों में मूँज तथा बेंत का हस्तशिल्प अत्यन्त लोकप्रिय है। बास, मूँज व बेंत से बनी डलिया, टोकरी, चटाई, फूलदान, पंखे, सूप आदि आज भी कलात्मक सामग्रियाँ दैनिक जीवन में देखने को मिलती हैं, जिनके उत्कृष्ट नमूने संग्रहालय में प्रदर्शित हैं।

पुस्तकालय :-

लोककला संग्रहालय में लोककला संस्कृति से सम्बन्धित पुस्तकालय भी है, जिसमें लोकनृत्य, लोकसंगीत, प्राचीन इतिहास, कला एवं संस्कृति आदि से सम्बन्धित लगभग 900 पुस्तकें उपलब्ध हैं। तत्सम्बन्धी और पुस्तकों को क्रय कर पुस्तकालय का विस्तार किया जा रहा है।

पर्यटक सुविधायें :-

संग्रहालय आने वाले पर्यटकों को यहाँ प्रदर्शित कलाकृतियों के साथ विभिन्न क्षेत्रों के जनजीवन, रहन-सहन, स्थानीय तीज-त्यौहारों, नृत्य एवं अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी दी जाती है। इच्छुक दर्शकों को फोल्डर उपलब्ध कराये जाते हैं।

अन्य कार्यक्रम :-

संग्रहालय द्वारा तेरहवें वित्त आयोग के अन्तर्गत चारों वीथिकाओं बृज, बुन्देलखण्ड, अवध भोजपुर, रूहेलखण्ड के शोकेसों एवं प्रदर्शन की व्यवस्था की और अधिक रूचिकर एवं सामान्य जन के लिए ज्ञानवर्धक बनाये जाने का कार्य किया जा रहा है। इस अतिरिक्त समय-समय पर शैक्षिक कार्यकम्रम यथा व्याख्यान, प्रदर्शनी, संगोष्ठी टोराकोटा इत्यादि कार्य कराये जाते हैं।

शैक्षिक कार्यक्रम :-

शैक्षिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत लोककला संग्रहालय द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम कराये गये :-

1- मेंहदी प्रतियोगिता — माह अगस्त, 2014
2- लोककला विषयक व्याख्यान — माह अक्टूबर, 2014
3- बच्चों की पोस्टर प्रतियोगिता — माह नवम्बर, 2014
4- विभिन्न क्षेत्रों के मुखौटों की प्रदर्शनी — माह दिसम्बर, 2014
5- ''ऐप्लीक एवं क्विलिटंग वर्क'' की कार्यशाला — माह नवम्बर, 2013
6- ''ब्रज की सॉझी कला'' — माह दिसम्बर, 2013

संग्रहालय में निम्नलिखित पद उक्त कार्यों के संचालन हेतु सृजित है :-

क्र0सं0	पदनाम	सादृश्य वेतन बैण्ड/ वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पदों की संख्या
1.	2.	3.	4	5.
1.	संग्रहालयाध्यक्ष	9300-34800	4800	1
2.	वीथिका सहायक-कम वरिष्ठ लिपिक	5200-20200	2400	2
3.	चौकीदार-कम-सफाई कर्मचारी	5200-20200	1800	3
4.	चपरासी-कम माली	5200-20200	1800	1
5.	वीथिका परिचर	5200-20200	1800	1
	योग			8

जनपदीय संग्रहालय, सुल्तानपुर

सुलतानपुर जनपद के अनेक महत्वपूर्ण पुरास्थलों जैसे शनिचरा कुंड भांटी, सोमना भार, कालूपाठक का पुरवॉ, अहिरन पलिया, सोहगौली, महमूदपुर आदि स्थलों पर पुरासांस्कृतिक सम्पदा बिखरी दिखायी देती है। यही नहीं इस जनपद के आस-पास के जनपदों में भी धरती के गर्भ से बराबर अतीत की धरोहर निकलती रहती है। इनके विविध आयामों से सम्बन्धित सामग्रियों और बिखरी सांस्कृतिक पुरा सम्पदा को संकलित, सुरक्षित, प्रदर्शित, प्रलेखीकृत व प्रकाशन कर उन पर अध्ययन अनुसंधान करने कराने के बहुउद्देश्य से वर्ष 1988-89 में इस संग्रहालय की स्थापना की गई। आज यह संग्रहालय सुल्तानपुर में नगर पालिका के पीछे सुपर मार्केट के प्रथम तल पर प्रतिष्ठित है।

वीथिकाएँ:-

वर्तमान में संग्रहालय में दो वीथिकाएँ जनसामान्य के अवलोकनार्थ खुली हैं। एक वीथिका में प्रस्तर प्रतिमाएँ, मृण मूर्तियॉं एवं काष्ठ कलाकृतियॉं प्रदर्शित हैं। द्वितीय वीथिका रफी अहमद किदवई को समर्पित है। इस वीथिका में उनके जीवन से जुडी वस्तुओं को संजोया गया है। आलोच्य अवधि में बड़ी संख्या में लोगों ने संग्रहालय का भ्रमण किया।

संग्रहः-

78 पाषाण प्रतिमाएँ 151 मृण्मूर्तियॉं, 1131 ताम्र सिक्के, 1118 रजत सिक्के, 18 स्वर्ण सिक्के, 03 चित्र/पांडूलिपियां , 06 ताम्र/पाषाण अभिलेख, 17 विशिष्ट सिक्के, 33 रजत/ताम्र पदक, 2 आभूषण, 46 कलात्मक वस्तुएँ इस संग्रहीत हैं।

पुस्तकालयः-

संग्रहालय के संदर्भ पुस्तकालय में कला, संस्कृति एवं इतिहास की लगभग 744 पुस्तकों का संग्रहीत हैं। इन संदर्भित ग्रन्थों को इच्छुक शोधार्थियों एवं छात्रों को उपलब्ध कराया जाता है।

शैक्षिक गतिविधियॉं :-

माह	कार्यक्रमों का विवरण
1	2
दिनांक 21 से 23 मई, 2014 तक	प्राचीन स्मारकों पर 03 दिवसीय छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
दिनांक 17.7. 2014	'चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
21.08.2014	संग्रहालय विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन।
19.09.2014	प्राचीन भारतीय धरोहर पर ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन।
18.11.2014 से 20.11.2014 तक	प्राचीन भारतीय सिक्कों पर ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन।
18.12.2014	क्ले माडलिंग वर्कशाप का आयोजन।

संग्रहालय की गतिविधियों को संचालित करने हेतु निम्नलिखित पद सृजित हैं :-

क्र0सं0	पदनाम	सादृश्य बेतन बैण्ड/वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पदों की संख्या
.	2.	3.	4	5.
1.	संग्रहालयाध्यक्ष	9300-34800	4800	1
2.	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	1
3.	लेखाकार	9300-34800	4200	1
4.	वीथिका परिचर-कम-चौकीदार	5200-20200	1800	2
5.	सफाई कर्मचारी	5200-20200	1800	1
	योग			6

राजकीय बौद्ध संग्रहालय, कुशीनगर

भारत के बौद्ध स्थलों में कुशीनगर (कशीनारा) का प्रमुख स्थान है। बौद्ध धर्म प्रवर्तक भगवान बुद्ध ने लगभग 80 वर्ष की अवस्था में अपना भ्रमणपूर्ण जीवन व्यतीत करने के पश्चात यहाँ पर शालवन में महापरिनिर्वाण प्राप्त (शरीर त्याग) किया था। कुशीनगर जैसे पवित्र स्थल पर असंख्य पर्यटक एवं बौद्ध धर्मानुयायी प्रति वर्ष भगवान बुद्ध को श्रद्धाजंलि अर्पित करने आते हैं। कुशीनगर की धार्मिक महत्ता एवं समृद्ध ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक धरोहर ने कई देशों एवं विभागों को इस क्षेत्र में अपने धार्मिक एवं सांस्कृतिक संगठन स्थापित करने की प्रेरणा दी। परिणामस्वरूप यह स्थल सम्पूर्ण विश्व में आर्कषण का केन्द्र बन गया। कालान्तर में कुशीनगर की पुरातात्विक सम्पदा सहित भारतीय संस्कृति को संकलित तथा सुरक्षित करने के उद्देश्य से संग्रहालय के निर्माण की आवश्यकता प्रतीत हुई। एतदर्थ पूर्वी क्षेत्र में यत्र-तत्र बिखरी कला सम्पदा के संग्रह, संरक्षण, अभिलेखीकरण, प्रदर्शन एवं शोध के साथ ही इस क्षेत्र के गरिमामय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व की जानकारी जन सामान्य को उपलब्ध बहुउद्देश्य से संस्कृति विभाग, उ0 प्र0 शासन द्वारा सन् 1993-94 मे राजकीय बौद्ध संग्रहालय की स्थापना की गयी।

संग्रहालय द्वारा संग्रहीत कलाकृतियाँ जहां एक ओर हमारे समृद्ध कला एवं संस्कृति का आभास कराती हैं, वहीं दूसरी ओर वर्तमान पीढ़ी को उनके गौरवमयी विरासत से परिचित भी कराती हैं।

2- संग्रहालय का बहुउद्देश्य एवं गतिविधियाँ :-

संग्रहालय का प्रमुख उद्देश्य पूर्वी क्षेत्र एवं देश के अन्य भागों से प्राप्त पुरासम्पदा का संकलन, अभिलेखीकरण, संरक्षण, प्रदर्शन, प्रकाशन तथा देशी-विदेशी पर्यटकों को आकृष्ट कर उन्हें भारतीय संस्कृति के विविध पहलुओं की जानकारी उपलब्ध कराना है। भारतीय इतिहास, कला, संस्कृति और पुरातत्व की जानकारी जन-सामान्य को उपलब्ध कराने के बहुउद्देश्य से संग्रहालय द्वारा शैक्षिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत प्रतिष्ठित विद्वानों के व्याख्यान एवं संगोष्ठी के अतिरिक्त विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जाता है।

3- सर्वेक्षण/संकलनः-

संग्रहालय द्वारा समय-समय पर स्थलीय सर्वेक्षण, दान, उपहार, दीर्घकालीन ऋण एवं उ0 प्र0 राज्य प्रदर्श क्रय समिति द्वारा क्रय की गई कलाकृतियों के माध्यम से संग्रह में अभिवृद्धि की जाती रही है। वित्तीय वर्ष 2013-14 में कुल 11 कलाकृतियाँ/पुरावशेष उपहार स्वरूप एवं सर्वे द्वारा संग्रहालय के लिए प्राप्त की गयी। वर्तमान में संग्रहालय में क्रमांक-01/1993 से 478/2014 तक कुल 1334 कलाकृतियों/पुरावशेषोंका संकलन है। संग्रहालय में प्रस्तर, मृण्मूर्तियाँ, धातु मूर्तियाँ, पेण्टिंग्स, सिक्के, थंका एवं तथा डाक टिकट हैं।

4- प्रदर्शन व्यवस्था-

राजकीय बौद्ध संग्रहालय, कुशीनगर में संग्रहीत कलाकृतियों में प्रस्तर मूर्तियाँ, मृण्मूर्तियाँ, वास्तुकला के अवशेष, मिट्टी की मुहरें, धातु प्रतिमाएँ, तिब्बती थंका एवं सिक्के विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। अधिकांश संग्रह संरक्षित संकलन के रूप में व्यवस्थित हैं, जिनमें से कतिपय चयनित कलाकृतियों को

विभिन्न वीथिकाओं में प्रदर्शित किया गया है। वर्तमान में संग्रहालय में चार वीथिकाएँ जनसामान्य के दर्शनार्थ खुली हुई है जिनका विवरण निम्नवत् है :-

प्रथम वीथिका- ''कला वीथिका'' में बौद्ध, जैन एवं हिन्दू धर्म से सम्बन्धित कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया है। वीथिका में मथुरा एवं गांधार शैली की प्रस्तर मूर्तियों के अतिरिक्त बौद्ध पूजा स्तूत, बौद्ध मन्दिर का अलंकृत द्वार, कुशीनगर क्षेत्र से प्राप्त अलंकृत ईटें (कई ईटों को जोड़कर बनने वाली मानवाकृतियाँ) धातु कलाकृतियाँ एवं तिब्बती थंका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वीथिका में प्रदर्शित गच (स्टकों) की बनी ध्यानमुद्रा में आसनस्थ बुद्ध प्रतिमा, गुप्तकाल तक चली आने वाली गांधारयुगीन परम्परा का उत्तम उदाहरण है।

द्वितीय वीथिका- ''अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध वीथिका'' में आस्ट्रेलिया में बन रहे बौद्ध स्तूप से चेन-चोर-खोर-लिंग के माडल का प्रदर्शन किया गया है। इस वीथिका में बौद्ध धर्म से संबंधित विभिन्न देशों की पूजा पद्धति बौद्ध भिक्षुकों के रहन-सहन आदि की झांकी प्रस्तुत की गई है।

तृतीय वीथिका- ''विविध मुद्राओं में बुद्ध वीथिका'' में भगवान बुद्ध की विभिन्न मुद्राओं में प्राप्त मथुरा एवं गान्धार शैली की प्रस्तर मूर्तियाँ का प्रदर्शन किया गया है। भगवान बुद्ध की अभय मुद्रा, ध्यान मुद्रा, भू-स्पर्श एवं धर्म चक्र प्रवर्तन मुद्रा में प्रदर्शित कलाकृतियाँ निश्चित रूप से दर्शकों को आह्लादित करती है।

चतुर्थ वीथिका- पुरातत्व वीथिका'' में प्रदर्शित मृण्मूर्तिया, मृण्पात्र, मुहरें एवं मनके तथा हड्डी की चूड़ियां दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र है।

5- राहुल सांकृत्यान पुस्तकालय :- संग्रहालय में एक सन्दर्भ पुस्तकालय भी है, जिसमें भारतीय इतिहास, कला, संस्कृति एवं पुरातत्व, मुद्राशास्त्र एवं प्रतिमाशास्त्र से सम्बन्धित पुस्तकें हैं। वर्ष 2013-14 में पुस्तकालय हेतु जिलाधिकारी, कुशीनगर के सहयोग से दान स्वरूप विश्व के प्रतिष्ठित लेखकों की कुल 184 पुस्तकों का संकलन किया गया है। भारतीय संस्कृति एवं पुरातत्व के विभिन्न विषयों पर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले एवं शोध छात्रों/विद्वत्जनों को आवश्यक जानकारी संदर्भ पुस्तकालय की सुविधा प्रदान की जाती है।

6- संग्रहालय सभागार (अज्ञेय स्मृति सभागार)

दिनांक 03 दिसम्बर, 2013 को जिला प्रशासन कुशीनगर द्वारा संग्रहालय सभागार का नामकरण प्रसिद्ध साहित्यकार एवं कवि हीरानन्द सच्चिदानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' के नाम पर किया गया। परिसर में जिलाधिकारी द्वारा 'अज्ञेय' की प्रतिमा भी स्थापित करायी गयी।

7- शैक्षिक गतिविधियाँ

माह	कार्यक्रमों का विवरण
1	2
24 से 31 मई, 2014 तक	भगवान बुद्ध के जीवन पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
22 से 31 जुलाई, 2014 तक	बौद्ध कला पर आधारित छायाचित्र कला प्रदर्शनी।
24.9.2014	चित्रकला प्रतियोगिता।
01 से 28 अक्टूबर,2014 तक	स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
21 नवम्बर, 2014	कुशीनगर जनपद के पुरावशेष विषयक संगोष्ठी।
05 से 30 दिसम्बर,2014 तक	सिक्कों पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
06 दिसम्बर, 2014	वीथिका भ्रमण।

8- संग्रहालय भ्रमण :-

1- शैक्षिक भ्रमण पर आने वाले विद्यालय/महाविद्यालयों की कुल संख्या- 397

(2) शैक्षिक भ्रमण पर आने वाले छात्रों की संख्या- 26624

(2) शैक्षिक भ्रमण सहित कुल भारतीय दर्शकों/पर्यटकों की संख्या- 49284

(4) विदेशी पर्यटकों की संख्या- 192

उपरोक्तानुसार संग्रहालय भ्रमण हेतु दर्शकों/पर्यटकों को अपेक्षित सहयोग प्रदान किया गया।

9- स्वीकृत पदों का विवरण :-

संग्रहालय पूर्वी उ0प्र0 के गरिमामय इतिहास कला एवं संस्कृति के बहुमुखी विकास हेतु सतत् प्रयत्नशील है। संग्रहालय के समुचित संचालन हेतु संस्कृति विभाग, उ0 प्र0 शासन द्वारा निम्नलिखित पद सृजित है :-

क्र0सं0	पदनाम	सादृश्य वेतनबैण्ड/वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पदों की संख्या
1.	2.	3.	4	5
1.	संग्रहालयाध्यक्ष	9300-34800	4800	1
2.	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	1
3.	कनिष्ठ सहायक	5200-20200	2000	1
4.	वीथिका परिचर	5200-20200	1800	1
5.	चौकीदार .	5200-20200	1800	1
	योग			5

राजकीय पुरातत्व संग्रहालय, कन्नौज

इत्र और इतिहास की नगरी ''कान्यकुब्ज'' वर्तमान जिला कन्नौज ईसा की छठीं शती के उत्तरार्द्ध से लेकर बारहवीं शती ई. के अन्त तक उत्तर भारत का महत्वपूर्ण अग्रणी नगरों में से एक था। कन्नौज लगभग 600 वर्ष तक उत्तर भारत का केन्द्र बिन्दु था। जहाँ मौखरी वंश, वर्द्धन वंश, प्रतिहार वंश, गहड़वाल वंश, पुष्पित पल्लवित हुये, नवीं शती ई. में कन्नौज दक्षिण के ''राष्ट्रकूट'' पूर्व के ''पाल'' और उत्तर पश्चिम के 'प्रतिहार' शक्तियों के मध्य त्रिकोणात्मक शक्ति संतुलन का केन्द्र बन गया था। जिस प्रकार मौर्य युग से लेकर गुप्त काल तक पाटलिपुत्र (पटना) का शासक भारत का सार्वभौम चक्रवर्ती सम्राट माना जाता था। उसी प्रकार हर्षोत्तर काल में 'कान्यकुब्जाधिपति' को शक्ति का प्रतीत माना जाता था। कन्नौज संग्रहालय समिति ने 25 फरवरी, 1975 को कन्नौज में संग्रहालय की स्थापना की। कन्नौज संग्रहालय में प्रागैतिहासिक अस्थि उपकरण महाभारत कालीन स्लेटी भूरे चित्रित पात्र उत्तरी कृष्ण मार्जित मृद्‌भांड, मृर्तिका, पाटल मुद्रा, शील, सिक्के, मृण्मूर्ति, हाथी दाँत की कलाकृतियाँ, मनकें, पाषाण प्रतिमायें संग्रहित है, जिसमें विशेष रावणानुग्रह, भैरवरूप में विषपान, तपस्विनी पार्वती, कार्तिकेय, नृत्य गणेश, विष्णु, विश्वरूप विष्णु, हरिहर, सूर्य प्रतिमाऐं, ब्रह्मा, अग्नि, देवी प्रतिमाऐं, महिषासुरमर्दिनी दुर्गा,शान्त रूप दुर्गा, चामुण्डा, सप्तमातृका, नवग्रह, तीर्थांकर प्रतिमाऐं संग्रहीत है। यह संग्रहालय प्रतिहार काल की कलाकृतियों के लिये विश्वविख्यात है। संग्रहालय के नवीन भवन में भूतल एवं प्रथम तल में निर्मित दोनों गैलरियो में पुरावशेषों को प्रदर्शित किया जा चुका है।

वित्तीय वर्ष 2014-15 में अप्रैल से जनवरी तक कन्नौज व अन्य शहरो के दर्शक एवं कई स्कूली छात्र छात्राओं ने समय समय में होने वाले विभिन्न प्रतियोगिताओं का भ्रमण किया वर्तमान में संग्रहालय के आधुनिकीकरण हेतु यू0पी0सी0एल0 कानपुर द्वारा कार्य शुरू कराया जा चुका है।

वर्ष 1995-96 में संस्कृति विभाग द्वारा अधिग्रहण करने का निर्णय शासन द्वारा किया गया। 29 फरवरी, 1996 को पुरातत्व संग्रहालय को शासकीय संग्रहालय घोषित करते हुये राजकीय पुरातत्व संग्रहालय का स्वरूप प्रदान किया गया। उक्त संग्रहालय का नवीन भवन बनकर तैयार हो गया है।

संग्रहालय में निम्नलिखित पद सृजित है:-

क्र0सं0	पदनाम	सादृश्य वेतन बैण्ड/ वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पदों की संख्या
1.	2.	3.	4	5
1.	संग्रहालयाध्यक्ष	9300-34800	4800	1
2.	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	1
3.	वीथिका परिचर-कम-चौकीदार	5200-20200	1800	1
4.	सफाई कर्मचारी-कम-चौकीदार	5200-20200	1800	1
	योग			4

राजकीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय, मेरठ

स्थापना वर्ष :-

वर्ष 1995 में उ0प्र0 शासन द्वारा संग्रहालय निर्माण का निर्णय लिया गया, तत्क्रम में वर्ष 1997 में टारकफोर्स द्वारा की गई संस्तुतियों के अनुरूप उ0प्र0 शासन के अधीन उ0प्र0 संग्रहालय निदेशालय द्वारा संचालित राजकीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय, मेरठ की स्थापना हुई। जिसका औपचारिक लोकार्पण 10 मई, 2007 को हुआ।

क्षेत्रीय/विषयगत महत्व :-

जनपद मेरठ 28^0 47^0 तथा 29^0 18^0 अक्षांश उत्तरी एवं 77^0 7^0 तथा 78^0 7^0 देशान्तर पूर्वी रेखाओं के मध्य स्थित है । प्राचीन काल में मेरठ ऊपरी गंगा यमुना के दोआब क्षेत्र में कुरू प्रदेश के अन्तर्गत आता था । वर्तमान में जनपद मेरठ उत्तर प्रदेश के पश्चिमी छोर पर गंगा-हिण्डन नदियों के दोआब क्षेत्र में स्थित है। इसके उत्तर में जनपद मुजफ्फरनगर दक्षिण में गाजियाबाद पश्चिम में बागपत तथा पूर्व में बिजनौर व ज्योतिबाफुले नगर जनपद की सीमाओं से घिरा हुआ है । मेरठ देश की राजधानी दिल्ली से 65 किमी0 उत्तर-पूर्व तथा प्रदेश की राजधानी लखनऊ से 461 किमी0 उत्तर पश्चिम में स्थित है, यहाँ रेल तथा बस द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है तथा यह उत्तर रेलवे के दिल्ली-मेरठ-सहारनपुर रेलवे मार्ग एवं उत्तर-पूर्वी रेलवे के लखनऊ-मुरादाबाद-मेरठ-सहारनपुर मुख्य रेलवे मार्गों के किनारे स्थित है ।

मेरठ का शुद्ध नाम मयराष्ट्र है । इस विषय में दो जनश्रुतियाँ प्रचलित हैं । पहली जनश्रुति के अनुसार दिति के पुत्र नमुचि के सहोदर, हेमा के पति मंदोदरी के पिता और रावण के श्वसुर मय नामक दानव ने इस नगरी को बसाया था । इसी कारण मेरठ को मयदन्त का खेड़ा कहा जाता है, मेरठ की प्रचीन आबादी तथा किले वाले भाग में वर्तमान मोरीपाड़ा, शुक्लों का चौक, कोतवाली, मशायखान(इस्माइलनगर) आदि मोहल्ले आते हैं । मय का उल्लेख वाल्मिकी रामायण में आया है । दूसरी जनश्रुति के अनुसार महाभारत नामक महाकाव्य में वर्णित खाण्डवदाह के समय अर्जुन द्वारा अपनी रक्षा के प्रत्युपकार में दानवों के शिल्पी त्रिपुर रचयिता विश्वकर्मा मय ने कृतज्ञतावश श्रीकृष्ण के आदेश पर

युधिष्ठिर के लिए एक अद्वितीय सभागृह का निर्माण किया था । युधिष्ठिर ने मय के शिल्प कौशल से प्रसन्न होकर दान में कुछ भूमि दी थी। कहा जाता है कि इसी भूमि पर मय ने मयराष्ट्र नामक नगर का निर्माण किया था तथा दानवराज मय एक अति रमणीक एवं वैभवयुक्त विशाल भवन में यहीं निवास भी करता था तथा यह भी कहा जाता है कि यहीं से प्रातः काल उसकी पुत्री मंदोदरी एक सुन्दर सरोवर के पश्चिमी किनारे पर विल्व वृक्षों के वन्य भाग में स्थित विशाल शिव मंदिर में जलार्चन एवं शिवोपासना के लिए जाया करती थी। यह आज भी विल्वेश्वर महादेव मंदिर के नाम से जाना जाता है तथा यह मेरठ जनपद का सबसे प्राचीन मंदिर है। जाटों के अभिकथन के अनुसार इन्द्रप्रस्थ के राजा महिपाल के नाम पर इसका नाम मेरठ पड़ा लेकिन यह तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता है । मयराष्ट्र का अपभ्रंश मेरठ है जो तर्क संगत है ।

पश्चिमी उ0प्र0 स्वतंत्रता आन्दोलन का उद्‌भव एवं क्रान्ति स्थल रहा है। स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी घटनाओं से सम्बन्धित स्थान मेरठ छावनी, देवबन्द, बरेली, बुलन्दशहर, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, बिजनौर एवं बागपत इत्यादि इसके महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मेरठ का विशिष्ट स्थान है, जहाँ से प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी फूटी। स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी घटनाओं एवं संस्मरणों, जीवन गाथाओं को संरक्षित करना, भावी पीढ़ी को नवीन दिशा प्रदान करना तथा राजकीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय, मेरठ को राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट संग्रहालय के रूप में स्थापित करने का लक्ष्य है। स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी घटनाएँ कैसी थीं और किस तरह से लड़ी गयीं इसका उल्लेख लिखित रूप से तो किताबों एवं अभिलेखों में मिलता है लेकिन दृश्य रूपों में इसका अभाव है, खासकर 10 मई 1857 को मेरठ में घटित घटनाएँ जो आम जनसामान्य की पहुँच से दूर रही हैं । इन तथ्यों को संग्रहालय में दिखाने का अनूठा प्रयास किया गया है।

<u>वीथिकाएँ</u>

संग्रहालय में पाँच वीथिकाएँ प्रदर्शित की गई हैं । प्रथम वीथिका में पेंटिंग, डायरमा एवं रिलीफ के माध्यम से विशेष रूप से 10 मई, 1857 की घटनाओं का प्रदर्शन किया गया है जो देश के अमर शहीदों को समर्पित है । प्रदर्शित चित्रों में फकीर द्वारा कालीपलटन मंदिर में क्रान्तिकारियों को उपदेश देने की घटना, 24 अप्रैल 1857 को 85 सैनिकों द्वारा विवादित कारतूस के प्रयोग से इन्कार करना एवं 9 मई, 1857 को क्रान्तिकारी सिपाहियों का सामूहिक कोर्ट मार्शल की घटना को दिखया गया है। प्रदर्शन के क्रम में 10 मई, 1857 की घटना को डायरमा के माध्यम से दिखाया गया हैं जो इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है, इस घटना ने सिर्फ उत्तर भारत में ही नहीं वरन पूरे देश में ऐसी लहर उत्पन्न की जिसने आज़ादी की प्राप्ति में अहम भूमिका निभाई । इसी तरह अन्य प्रमुख घटनाओं यथा- क्रान्ति के प्रस्फुटित होते ही 20वीं पैदल सेना के सैनिकों द्वारा कर्नल जॉन फिनिश पर गोली चलाना, हुआ यह था कि क्रान्ति प्रस्फुटित होते ही कर्नल जॉन फिनिश अपने सैनिकों(11वीं पैदल सेना) को समझाने ग्राउण्ड पहुँचे और सैनिकों को समझाकर एकत्र भी कर लिया था, तभी तीसरी अश्वसेना का अश्वारोही सैनिक आया तथा हाथ उठाकर चिल्लाया कि रायफल्स तथा तोपखाने के यूरोपियन्स सिपाही

देसी सैनिकों के गोला-बारूद तथा हथियारों पर कब्जा करने आ रहे हैं, और इसी के बाद कर्नल फिनिश पर सैनिकों द्वारा गोलियाँ चलाई गयीं । इस तरह कर्नल जॉन फिनिश 10 मई 1857 को क्रान्ति के दौरान मारे जाने वाले पहले अंग्रेजी अधिकारी थे । अपने आक्रोश को व्यक्त करने के लिए अपनी रिहायशी बैरकों में आग लगा दिया, विक्टोरिया पार्क स्थित नई जेल तोड़कर कैद 85 सैनिकों को मुक्त कराना एवं लगभग दो हजार क्रान्तिकारियों का दिल्ली कूच करना इत्यादि घटनाओं का प्रदर्शन किया गया है । यहाँ यह भी बताते चलें कि मेरठ की घटनाओं का वर्णन तो लिखितरूप में अनेक अभिलेखों के माध्यम से उपलब्ध रहे हैं किन्तु दृश्य रूप में पहली बार इस संग्रहालय द्वारा दिखाया गया है कि 1857 में मेरठ की क्रान्ति कैसी थी । जहाँ से प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की मशाल जली थी । इसका अवलोकन कर दर्शक भाव-विभोर हो उठते हैं।

द्वितीय वीथिका में फाँसी का दृश्य, 14 से 20 सितम्बर 1857 को दिल्ली में विद्रोह, कानपुर में सतीचौरा घाट का विद्रोह, लखनऊ की रेजीडेन्सी एवं रानी लक्ष्मीबाई की अंग्रेजों से लड़ाई को रिलीफ एवं पेंटिंग के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है । तत्क्रम में तात्या टोपे तथा कुवँर सिंह की क्रान्तिकारी गाथा का भी अवलोकन किया जा सकता है । देश विभाजन से पूर्व 1857 की क्रान्ति में पेशावर के आन्दोलन का योगदान इत्यादि को प्रमुखता से प्रदर्शित किया गया है ।

संग्रहालय के दो अन्य वीथिकाओं में भी देश के अन्य भागों में स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी प्रमुख घटनाओं को चित्रों एवं महत्वपूर्ण दुर्लभ अभिलेखों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है । जिसमें वीथिका संख्या तीन में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के आगमन से लेकर दिल्ली के लाल किले के इतिहास को प्रदर्शित किया गया है तथा साथ ही साथ आई.एन.ए. के दुर्लभ छाया चित्र एवं देश के अमर स्वतंत्रता सेनानियों पर भारत सरकार द्वारा समय-समय पर जारी भारतीय डाक टिकटों को भी आम जनसामान्य के अवलोकनार्थ प्रदर्शित किया गया है ।

चतुर्थ वीथिका में भी स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी देश विभिन्न भागों में घटित घटनाओं एवं आन्दोलनों को प्रदर्शित किया गया है । जिसमें रानी झाँसी के जीवन एवं संघर्षों, मंगल पाण्डे, उधम सिंह महात्मा गाँधी, राजाराम मोहन राय, सिस्टर निवेदिता इत्यादि प्रमुख क्रान्तिकारियों एवं देश के अग्रणी महापुरूषों के जीवन तथा चरित्र के विषय में बताया गया है । इसी वीथिका में आई.एन.ए. के सिपाही की वर्दियाँ, भारत सरकार द्वारा जारी स्मार सिक्के, चरखा एवं स्वतंत्रता सेनानियों के ताम्र पत्रों को प्रदर्शित किया गया है ।

पंचम वीथिका में पुरातात्विक पुरासामग्रियों का प्रदर्शन किया गया है । चूँकि पश्चिमी उ० प्र० पुरातात्विक सम्पदा से भी बहुत समृद्ध क्षेत्र रहा है । इस क्षेत्र की पुरातात्विक महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए एक पुरातात्विक वीथिका का भी गठन किया है । जिसमें इस क्षेत्र के विभिन्न पुरातात्विक स्थलों के सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त पुरासामग्रियाँ/कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया है । जिसमें वर्ष 2007 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग भारत सरकार के निर्देशन में उत्खनित स्थल सिनौली, बागपत से प्राप्त अवशेष, हस्तिनापुर से सर्वेक्षण में प्राप्त कलाकृतियाँ विशेष आकर्षण का केन्द्र रहती हैं । इसी तरह से

काकोर, कुरडीह, काठा, इसोपुरटील इत्यादि पुरास्थलों से प्राप्त कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया है । इसके साथ ही साथ भेट स्वरूप प्राप्त प्राचीन सिक्के, मनके, प्रस्तर एवं मृण मूर्तियाँ इत्यादि प्रमुख हैं ।

शैक्षिक गतिविधियाँ

माह	कार्यक्रमों का विवरण
1	2
10 मई, 2014	क्रान्ति दिवस के अवसर पर अस्थाई प्रदर्शनी का आयोजन।
18 मई, 2014	विश्व संग्रहालय दिवस के अवसर पर राजकीय स्वतंत्रता संग्रहालय, मेरठ एवं ग्रोइन्ग आर्टिस्ट ग्रुप के संयुक्त तत्वावधान में कला के विविध आयाम विषयक अस्थाई प्रदर्शनी का आयोजन।
15 अगस्त, 2014	जंग-ए-आजादी विषय पर अस्थाई प्रदर्शनी का आयोजन।
27 सितम्बर, 2014	राजकीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय, मेरठ एवं मिशिका एजूकेशन एण्ड सोशल वेलफेयर सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में हेरीटेज टूर का आयोजन।
02 अक्टूबर, 2014	महात्मा गाँधी एवं विश्व शांति विषय पर अस्थाई प्रदर्शनी का आयोजन।
09 से 11 अक्टूबर 2014	पेंटिंग व फोटो प्रदर्शनी का आयोजन।
14 नवम्बर, 2014	राजकीय स्वतंत्रता संग्रहालय, मेरठ एवं क्रिएटिव आर्टिस्ट सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में बाल दिवस के अवसर पर चित्रकला प्रतियोगिता एवं अस्थाई प्रदर्शनी का आयोजन।
14 दिसम्बर, 2014	सरदार पटेल एवं स्वतंत्रता आन्दोलन विषय पर अस्थाई प्रदर्शनी का आयोजन।

संग्रहालय में निम्नलिखित पदों का सृजन किया गया है:-

क्र0सं0	पदनाम	सादृश्य वेतन बैण्ड/वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पदों की संख्या
1.	2.	3.	4	5
1.	संग्रहालयाध्यक्ष	9300-34800	4800	1
2	लेखाकार	9300-34800	4200	1
3.	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	1
4.	वीथिका परिचर	5200-20200	1800	2
	योग			5

राजकीय बौद्ध संग्रहालय, पिपरहवाँ (सिद्धार्थ नगर)

पूर्वी उत्तर प्रदेश का क्षेत्र ऐतिहासिक व पुरातात्विक दृष्टि से न केवल भारत में बल्कि विश्व में विख्यात हैं। बौद्ध धर्म के इतिहास में पिपरहवा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। भगवान बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित प्रमुख स्थलों में से एक इस स्थल की पहचान प्राचीन कपिलवस्तु के रूप में की जाती है। प्राचीन काल में कपिलवस्तु शाक्यों की राजधानी थी तथा भगवान बुद्ध के पिता शुद्धोधन शाक्य गणराज्य के प्रमुख थे। छठी शताब्दी ईसापूर्व के दस प्रमुख गणराज्यों में इसकी गणना की जाती थी। इस स्थल पर भगवान बुद्ध का बाल्यकाल व्यतीत हुआ था तथा राजकुमार सिद्धार्थ के रूप में 29 वर्ष की अवस्था में सत्य की खोज के लिये उन्होंने यहाँ से प्रस्थान किया था। बौद्ध साहित्य में इस बात का उल्लेख है कि बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात उनके अस्थि अवशेषों को आठ भागों में विभक्त किया गया था, जिसका एक भाग शाक्यों को भी प्राप्त हुआ था। यहाँ का मुख्य स्तूप मूल रूप से शाक्यों द्वारा भगवान बुद्ध के अस्थि अवशेषों के अपने भाग पर निर्मित किया गया था। यहाँ पर सर्वप्रथम पुरातात्विक कार्य प्रारम्भ करने का श्रेय डब्ल्यू0 सी0 पेप्पे को है। उत्खनन के परिणामस्वरूप यहाँ स्थित स्तूप से एक धातु

मंजूषा प्राप्त हुई थी, जिस पर ब्राह्मी में लेख है-सुकिति-भतिनं स भगिनिकनम स-पुत-दलनं, इयं सलिल निधने बुधस भगवते सकियानं। अर्थात इस स्तूप का निर्माण उनके शाक्य भाईयों द्वारा अपनी बहनों, पुत्रों एवं पत्नियों के साथ मिलकर किया गया था। यहाँ से प्राप्त मृण मृदाओं पर ''देव पुत्र विहारे कपिलवस्तु भिक्खु संघस'' तथा ''महा कपिलवस्तु भिक्खुसंघस'' अंकित है। इससे यह प्रमाणित होता है कि यह स्थल प्राचीन कपिलवस्तु का बौद्ध प्रतिष्ठान था।

भगवान बुद्ध की स्मृतियों से जुड़ा होने के कारण यह क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का है। इस क्षेत्र में यत्र-तत्र बिखरी कला सम्पदा एवं देश के अन्य भागों से प्राप्त कलाकृतियों का संकलन, संरक्षण, अभिलेखीकरण, शोध एवं प्रदर्शन कर जन सामान्य को इसके गरिमामय इतिहास की जानकारी प्राप्त कराने के बहुउद्देश्य से बौद्ध हेरिटेज सेन्टर, पिपरहवा, सिद्धार्थ नगर के अन्तर्गत बौद्ध संग्रहालय एवं प्रशासनिक भवन कला वीथिका सहित अनेक परियोजनाओं का शिलान्यास वर्ष 1997 में मा0 मुख्यमंत्री जी, उ0 प्र0 के कर कमलों द्वारा किया गया था। शासन द्वारा दिये गये निर्देश के क्रम में संग्रहालय/प्रशासनिक भवन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, भारत सरकार को दिनांक 03 अक्टूबर, 2009 को हस्तांतरित कर दिया गया है।

वर्तमान में कला वीथिका भवन (दो हाल युक्त भवन) संस्कृति विभाग, उ0 प्र0 के नियंत्रणाधीन है, जिसमें प्रदर्शन व्यवस्था निम्नवत् है :-

1- <u>भूतल स्थित कला वीथिका</u> :- इस वीथिका में बौद्ध धर्म से सम्बन्धित कलाकृतियों की कुल 30 अनुकृतियाँ प्रदर्शित हैं।

2- <u>प्रथम तल स्थित कला वीथिका</u> :- इस वीथिका में बौद्ध धम्र से सम्बन्धित प्रसिद्ध स्थलों एवं कलाकृतियों के कुल 65 छायाचित्र प्रदर्शित हैं।

<u>2- संग्रहालय का बहुउद्देश्य एवं गतिविधियाँ :-</u>

संग्रहालय का प्रमुख बहुउद्देश्य पूर्वी क्षेत्र एवं देश के अन्य भागों से प्राप्त पुरासम्पदा का संकलन, अभिलेखीकरण, संरक्षण, प्रदर्शन, प्रकाशन तथा देशी-विदेशी पर्यटकों को आकृष्ट कर उन्हें भारतीय संस्कृति के विविध पहलुओं की जानकारी उपलब्ध कराना है। भारतीय इतिहास, कला, संस्कृति और पुरातत्व की जानकारी जन-सामान्य को उपलब्ध कराने के बहुउद्देश्य से संग्रहालय द्वारा शैक्षिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत विविध प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है।

3- <u>शैक्षिक गतिविधियाँ</u>

(क) <u>सिक्कों पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी :-</u> संग्रहालय की शिक्षा प्रसार सेवा क अन्तर्गत दिनांक 05 से 06 जून, 2014 तक सिक्कों पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन संग्रहालय परिसर में किया गया।

(ख) <u>स्वतन्त्रता संग्राम पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी</u> :- संग्रहालय परिसर गें दिनांक 13 से 14 अगस्त, 2014 तक दो दिवसीय स्वतन्त्रता संग्राम पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

(ग) <u>भारतीय कला में बुद्ध विषय पर छायाचित्र प्रदर्शनी</u> :- दिनांक 04 से 05 अक्टूबर 2014 तक भारतीय कला में बुद्ध विषय पर आधारित दो दिवसीय छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन संग्रहालय के प्रांगण में किया गया।

(घ) <u>कपिलवस्तु के शाक्य विषय पर एक दिवसीय व्याख्यान</u> :- दिनांक 07 नवम्बर 2014 को बुद्ध विद्यापीठ महाविद्यालय सिद्धार्थनगर के व्याख्यान हाल में कपिलवस्तु के शाक्य विषय पर एक दिवसीय व्याख्यान का आयोजन राजकीय बौद्ध संग्रहालय पिपरहवा, सिद्धार्थनगर द्वारा कराया गया।

(ङ) विश्व धरोहर सप्ताह के अन्तर्गत चित्रकला प्रतियोगिता :- विश्व धरोहर सप्ताह के अन्तर्गत दिनांक 23 नवम्बर, 2014 को स्थानीय विद्यालयों के मध्य चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन संग्रहालय में किया गया। उक्त कार्यक्रम में कुल 56 छात्र-छात्राओं की उपस्थिति रही।

(च) प्राचीन स्मारकों पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी :- दिनांक 05 से 06 दिसम्बर, 2014 को "बचपन" के आधार पर प्राचीन स्मारकों पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन संग्रहालय परिसर में किया।

(छ) कपिलवस्तु महोत्सव के अवसर पर गंधारकला में बुद्ध विषय पर छायाचित्र प्रदर्शनी :- संग्रहालय को शैक्षिक गातिविधियों के अन्तर्गत दिनांक 29 से 31 दिसम्बर, 2014 तक कपिलवस्तु महोत्सव के अवसर पर गंधारकला में बुद्ध विषय पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन संग्रहालय में किया गया।

(ज) सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता :- संग्रहालय में दिनांक 20 फरवरी 2015 को स्थानीय विद्यालयों के मध्य सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है। उक्त का आयोजन संग्रहालय परिसर में किया जायेगा।

संग्रहालय में निम्नलिखित पदों का सृजन किया गया है :-

क्र0सं0	पदनाम	सादृश्य वेतनबैण्ड/वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पदों की संख्या
1.	2.	3.	4	5
1.	संग्रहालयाध्यक्ष	9300-34800	4800	1
2	लेखाकार	9300-34800	4200	1
3.	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	1
4.	संग्रहालय परिचर	5200-20200	1800	2
योग				5

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर संग्रहालय एवं पुस्तकालय, रामपुर

स्थापना वर्ष

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर संग्रहालय एवं पुस्तकालय, रामपुर का निर्माण वर्ष 1997 में प्रारम्भ किया गया तथा 30 नवम्बर 1999 में इसका निर्माण कार्य पूर्ण हुआ । इसके उपरान्त 12 अगस्त, 2000 को उ0प्र0 शासन के संस्कृति विभाग ने इसे अपने अधिकार में ले लिया और 21 अगस्त 2004 को माननीय मो0 आज़म खाँ, तत्कालीन मंत्री, नगर विकास एवं संसदीय कार्य, उ0 प्र0 सरकार ने इसका औपचारिक लोकार्पण किया ।

क्षेत्रीय/विषयगत महत्व

जनपद रामपुर 28^0 $48'$ अक्षांश उत्तरी एवं 79^0 $05'$ देशान्तर पूर्वी रेखाओं के मध्य स्थित है। जनपद रामपुर प्राचीन काल से ही ऐतिहासिक महत्ता को बनाये रखे है । कथानकों के अनुसार रामपुर

का नाम कटहेर के राजा रामसिंह (कटहेरिया राजपूत) के नाम पर लगभग 10वीं शती ई0 में पड़ा । इस जनपद की स्थापना सन् 1775 ई0 में फैजुल्लहा खान ने किया था । इसका प्रारम्भिक नाम फैजाबाद रखा गया । इसके बाद यह तथ्य सामने आया कि इस नाम से पहले ही अनेक शहरों का नाम रखा गया है, तो इसके दूसरे नाम पर विचार किया जाने लगा और इसका नाम बदलकर मुस्तफाबाद इलियास रामपुर किया गया । कालान्तर में इसका नाम रामपुर पड़ गया ।

इस जनपद को 1 दिसम्बर 1949 को उ0 प्र0 राज्य में सम्मिलित करते हुए जिले का दर्जा दिया गया । इस क्षेत्र को मध्य-पूर्व रूहेलखण्ड के नाम से भी जाना जाता था । प्राचीन काल में इस क्षेत्र को पाँचाल अथवा उत्तर पाँचाल के नाम से भी जाना जाता था । इसके उत्तर में जनपद नैनीताल (उत्तराखण्ड), दक्षिण में जनपद बदायूँ, पश्चिम में जनपद मुरादाबाद तथा पूर्व में बरेली जनपद की सीमाओं से घिरा हुआ है । रामपुर देश की राजधानी दिल्ली से 196 किमी0 उत्तर-पचिश्म तथा प्रदेश की राजधानी लखनऊ से 314 किमी0 दक्षिण-पश्चिम में स्थित है, यहाँ रेल तथा बस द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है तथा यह उत्तर-पूर्वी रेलवे के लखनऊ-रामपुर-मुरादाबाद-दिल्ली मुख्य रेलवे मार्गों के किनारे स्थित है।

जनपद रामपुर पाचीन काल से ही ऐतिहासिक महत्व को बनाये हुए है । यह क्षेत्र उत्तर पाँचाल के नाम से विख्यात रहा है । यहाँ से लगभग 100 कि0मी0 की दूरी पर प्राचीन नगर अहिछत्र भी अवस्थित है जिसका सम्बन्ध महाभारत काल से जोड़ा जाता है । ऐसा कहा जाता है कि पाँचाल राजा द्रुपद ने इसको बसाया था । कालान्तर में रामपुर रोहिला राजाओं के अधीन रहा और इसके उपरान्त नबाबों के अधिकार क्षेत्र में रहा । रामपुर में संगीत घराने भी देश-विदेश तक ख्याति प्राप्त रहे हैं । इसी जनपद में ऐतिहासिक दस्तावेजों को सहेजे रजा लाइब्रेरी भी स्थित है ।

संग्रहालय में कुल दो वीथिकाऐं हैं । **प्रथम वीथिका** में डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के जीवन चरित्र को छाया चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया है । जिसमें इनके जीवन काल की विभिन्न महत्वपूर्ण घटनाओं एवं सामाजिक उत्थान के लिये किये कार्यों को प्रमुखता के साथ दिखाया गया है । **द्वितीय वीथिका** में इस क्षेत्र की पुरातात्विक महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए पुरातात्विक वीथिका का प्रदर्शन किया गया है । जिसमें उ0 प्र0 के अनेक संग्रहालयों में संग्रहीत प्रस्तर मूर्तियों की अनुकृतियों के माध्यम से प्रदर्शन किया गया है । इन अनुकृतियों में विशेषकर बौद्ध धर्म से सम्बन्धित हैं यथा कटरा बुद्ध, गान्धार कला के अन्तर्गत जातक कथाओं से अंकित पैनल, तथा बोधिसत्व पदमपाणि एवं बौद्ध देवी तारा की अनुकृतियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं ।

सग्रहालय में एक संदर्भ ग्रन्थालय भी स्थापित है, जिसमें डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के जीवन पर आधारित अनेक पुस्तकें एवं ग्रन्थ उपलब्ध हैं । इसके साथ ही साथ भारतीय इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति से सम्बन्धित पुस्तकें भी संग्रहालय के पुस्तकालय में छात्र/छात्राओं एवं शोधार्थियों के अध्ययन हेतु उपलब्ध हैं । जिससे सम्पर्क कर अनेक विद्ववत जन तथा शोधार्थी लाभान्वित होते हैं ।

पर्यटकों की संख्या :-

आलोच्य अवधि में देशी-विदेशी/स्कूली बच्चे/शोधार्थियों की संख्या-446

शैक्षिक गतिविधियाँ :-

माह	कार्यक्रमों का विवरण
1	2
14 अप्रैल, 2014	डा0 भीमराव अम्बेडकर के जन्म दिवस के अवसर पर ''डॉ0 भीमराव अम्बेडकर एवं स्वतंत्रता संग्राम'' विषय पर अस्थायी प्रदर्शनी का आयोजन।
03 अक्टूबर,2014	1857 की क्रान्ति विषय पर अस्थाई प्रदर्शनी का आयोजन।
14 नवम्बर, 2014	बाल दिवस के अवसर पर अस्थाई प्रदर्शनी का आयोजन।
06 दिसम्बर, 2014	डा0 बी0आर0अम्बेडकर ''जीवन एवं दर्शन'' विषय पर अस्थाई प्रदर्शनी।

संग्रहालय में निम्नलिखित पदों का सृजन किया गया है:-

क्र0सं0	पदनाम	सादृश्य वेतन बैण्ड/ वेतनमान	सादृश्य ग्रेड वेतन	पदों की संख्या
1.	2.	3.	4	5
1	सहायक लेखाकार	5200-20200	2800	1
2	वीथिका सहायक	5200-20200	2400	1
3	वीथिका परिचर	5200-20200	1800	2
		योग		4

राजकीय पुरातत्व संग्रहालय, फर्रूखाबाद

गंगा तट पर बसे हुए महाभारतकालीन पांचाल वर्तमान का फर्रूखाबाद इतिहास के आईने में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। पांचाल, कान्यकुब्ज, संकिशा आदि प्राचीन नगर फर्रूखाबाद की ऐतिहासिकता को प्रमाणित करते हैं। विश्वामित्र, कपिल, श्रृंगी, धौम्य द्रोणाचार्य, च्यवन, अगस्त्य ऋषियों की तपोस्थली फर्रूखाबाद रही। आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व में भगवान गौतम बुद्ध ने चार माह वर्षावास में मानवता के कल्याणकारी संदेश का उपदेश संकिशा में ही दिया था। फर्रूखाबाद की पुरातात्विक ऐतिहासिकता को देखते हुए वहाँ से प्राप्त कलाकृतियों को सुरक्षित, संरक्षित एवं प्रदर्शित करने के बहुउद्देश्य से संग्रहालय निर्माण का कार्य 12 वें वित्त आयोग की संस्तुतियों के अन्तर्गत कराया जा चुका है।

उ0 प्र0 संग्रहालय निदेशालय, लखनऊ

सांस्कृतिक कैलेण्डर वर्ष 2014-15 में प्रस्तावित कार्यक्रमों का विवरण

क्र. सं.	संग्रहालय का नाम	दिनांक	कार्यक्रमों का विवरण
1	2	3	4
1.	राज्य संग्रहालय, लखनऊ	अप्रैल, 2015	विश्व धरोहर दिवस (18 अप्रैल) के अवसर पर राज्य संग्रहालय की उत्कृष्ट कलाकृतियाँ विषय पर छायाचित्र प्रदर्शनी।
		मई, 2015	विश्व धरोहर दिवस (18 मई) के अवसर पर प्रदर्शनी
		जून, 2015	छात्र-छात्राओं के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
		जुलाई, 2015	स्व0 श्री आर0सी0शर्मा स्मृति व्याख्यान।
		अगस्त, 2015	मूक बधिर, मानसिक रूप से मंदित एवं सामान्य

			बच्चों के लिए क्लेमाडिलिंग की द्वि-दिवसीय कार्यशाला।
		सितम्बर,2015	विश्व पर्यटन दिवस (27 सितम्बर) के अवसर पर लखनऊ के स्मारक विषय पर लिथोग्राफों के छायाचित्रों की प्रदर्शनी।
		अक्टूबर,2015	कला अभिरूचि पाठ्यक्रम।
		नवम्बर,2015	विश्व धरोहर सप्ताह (18 से 25 नवम्बर) के अवसर पर प्रत्येक कार्य दिवस में विभिन्न विद्यालयों के छात्र/छात्राओं का संग्रहालय भ्रमण।
		दिसम्बर,2015	संग्रहालय के तकनीकी अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु कार्यशाला।
		फरवरी,2016	डा0 वासुदेव शरण अग्रवाल स्मृति व्याख्यान।
2.	राजकीय संग्रहालय, मथुरा	18.04.2015	विश्व धरोहर दिवस के अवसर पर प्रदर्शनी।
		18.05.2015	विश्व संग्रहालय दिवस के अवसर पर प्रदर्शनी।
		23.07.2015	बाल फिल्म प्रदर्शन।
		26.08.2015	प्राचीन भारतीय संस्कृति पर व्याख्यान।
		24.09.2015	मथुरा कला में देवी मूर्तियों की छायाचित्र प्रदर्शनी।
		17.10.2015	बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता।
		27.11.2015	मूक व बधिर बच्चों के लिए क्ले माडलिंग कार्यशाला एवं प्रतियोगिता।
		05.12.2015	श्री एफ. एस. ग्राउज की स्मृति व्याख्यानमाला।
		28.01.2016	बाल फिल्म प्रदर्शन।
		25.02.2016	ब्रज की लोक कला पर संगोष्ठी।
		05.03.2016 से 06.03.2016 तक	बाल फिल्म समारोह।
3	राजकीय संग्रहालय, झाँसी	18.04.2015	विश्व धरोहर दिवस के अवसर पर फिल्म प्रदर्शन।
		18.05.2015	विश्व संग्रहालय दिवस के अवसर पर अस्थायी प्रदर्शनी।
		जून, 2015	बाल चित्रकला प्रतियोगिता।
		जुलाई, 2015	चन्द्रशेखर आजाद पर केन्द्रित चित्र प्रदर्शनी।
		अगस्त, 2015	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर केन्द्रित चित्र प्रदर्शनी।
		सितम्बर,2015	व्याख्यान।
		अक्टूबर,2015	बुन्देलखण्ड की लोक कला पर केन्द्रित व्याख्यान।
		नवम्बर, 2015	बाल फिल्म उत्सव।
		दिसम्बर,2015	रामकथा पर केन्द्रित प्रदर्शनी।
		जनवरी,2016	पद्म श्री वृन्दावन लाल वर्मा स्मृति व्याख्यान।
		फरवरी, 2016	कला फिल्म उत्सव।
4.	राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर।	18-30.04. 2015	विश्व धरोहर दिवस पर प्राचीन स्मारकों पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		17-31.05. 2015	विश्व संग्रहालय दिवस की पूर्व संध्या पर बौद्ध कला पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		31.07.2015	चित्रकला प्रतियोगिता।

		14-30.08. 2015	स्वतंत्रता आन्दोलन पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		3-30.10.2015	सिक्कों पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		19.11.2015	विश्व धरोहर सप्ताह के अन्तर्गत सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता।
		21.11.2015	विश्व धरोहर सप्ताह के अन्तर्गत वीथिका व्याख्यान एवं विचार गोष्ठी।
		11.12.2015	क्लें माडलिंग वर्कशाप एवं प्रतियोगिता।
		05.02.2016	मूक बधिर बच्चों के मध्य चित्रकला प्रतियोगिता।
5.	**रामकथा संग्रहालय, अयोध्या, फैजाबाद।**	26.04.2015	व्याख्यान का आयोजन।
		24.05.2015	विश्व संग्रहालय दिवस पर व्याख्यान।
		21.6.2015	चित्रकला प्रतियोगिता।
		19.07.2015	मूक बधिर विद्यार्थियों की कला प्रदर्शनी।
		23.08.2015	चित्रकला प्रतियोगिता (जूनियर वर्ग)।
		27.09.2015	चित्रकला प्रतियोगिता (सीनियर वर्ग)।
		25.10.2015	चित्रकला प्रदर्शनी-रामकथा विषयक।
		22.11.2015	अवधी गीत प्रतियोगिता (रामकथा विषयक)।
		13.12.2015	लेखन प्रतियोगिता (संग्रहालय विषयक)।
		22.01.2016	व्याख्यान का आयोजन।
		20.02.2016 18.03.2016	चित्रकला प्रदर्शनी। फिल्म शो।
6.	**राजकीय बौद्ध संग्रहालय, कुशीनगर।**	03-10.05. 2015	बुद्ध पूर्णिमा की पूर्व संध्या पर भगवान बुद्ध के जीवन पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		09-25.07. 2015	सिक्कों पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		27.08.2015	चित्रकला प्रतियोगिता।
		21.11.2015	विश्व धरोहर सप्ताह के अन्तर्गत स्मारकों पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		08.01.2016 12.02.2016	बौद्ध कला पर छायाचित्र प्रदर्शनी। क्लें माडलिंग वर्कशाप व प्रतियोगिता।
7.	**लोककला संग्रहालय, लखनऊ।**	अप्रैल, 2015	पर्व एवं तीज-त्यौहारों पर चित्रकला की प्रदर्शनी।
		मई, 2015	ग्रीष्म कालीन कार्यशाला एवं प्रदर्शनी।
		जुलाई, 2015	मेंहदी प्रतियोगिता।
		अगस्त, 2015	लोककला विषयक व्याख्यान।
		सितम्बर,2015	उ0प्र0 की हस्तशिल्प कार्यशाला।
		अक्टूबर,2015	लोकगायन प्रतियोगिता।
		नवम्बर, 2015	भूमि-भित्त चित्रों की कार्यशाला।
		दिसम्बर,2015	मूक बधिर बच्चों की क्ले माडलिंग प्रतियोगिता।
		फरवरी, 2016	सिरेमिक पॉट कार्यशाला।
8.	जनपदीय संग्रहालय, सुलतानपुर।	21.05.2015	सुल्तानपुर की धरोहर पर व्याख्यान का आयोजन।
		23.07.2015	भारतीय सिक्कों पर व्याख्यान का आयोजन।
		19.08.2015	निबन्ध प्रतियोगिता।
		23.09.2015	चित्रकला प्रतियोगिता।
		20.11.2015	सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता।
		17.12.2015	वाद-विवाद प्रतियोगिता।
		28.01.2016	कला अभिरूचि पाठ्यक्रम।

		18.02.2016	वर्ल माडलिंग वर्कशाप एवं प्रतियोगिता।
9.	राजकीय बौद्ध संग्रहालय, पिपरहवाँ- सिद्धार्थनगर	18-19 मई, 2015	संग्रहालय दिवस के अवसर पर सिक्कों पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		15 अगस्त, 2015	स्वाधीनता दिवस के अवसर पर "स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		20-21 नवम्बर,2015	प्राचीन स्मारक पर आधारित छायाचित्र प्रदर्शनी।
		29-31 दिसम्बर, 2015	कपिलवस्तु महोत्सव के अवसर पर "गांधार कला में बुद्ध पर आधारित प्रदर्शनी।
		17.02.2016	"सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता।"
10.	राजकीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय, मेरठ।	10.05.2015	क्रान्ति दिवस के अवसर पर अस्थायी प्रदर्शनी।
		18.05.2015	विश्व संग्रहालय दिवस के अवसर पर प्रदर्शनी/चित्रकला प्रतियोगिता।
		23.07.2015	चन्द्रशेखर आजाद के जन्मदिवस के अवसर पर अस्थाई चित्र प्रदर्शनी।
		15.08.2015	स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन पर प्रदर्शनी।
		02.10.2015	महात्मा गॉधी के जन्मदिवस के अवसर पर व्याख्यान।
		14.11.2015	बाल दिवस के अवसर पर क्ले मॉडलिंग वर्कशाप/चित्रकला प्रतियोगिता।
		15.12.2015	लौह पुरूष सरदार बल्लभभाई पटेल के निर्वाण दिवस के अवसर पर व्याख्यान एवं अस्थायी प्रदर्शनी।
		26.01.2016	गणतन्त्र दिवस के अवसर पर अस्थायी प्रदर्शनी।
		22.02.2016	अस्थाई प्रदर्शनी/व्याख्यान का आयोजन।
11.	डॉ0 भीमराव अम्बेडकर संग्रहालय एवं पुस्तकालय, रामपुर।	14.04.2015	डॉ0 बी0 आर0 अम्बेडकर के जन्म दिवस के अवसर पर अस्थायी प्रदर्शनी।
		21.08.2015	संग्रहालय स्थापना दिवस के अवसर पर चित्रकला प्रतियोगिता।
		31.10.2015	निबन्ध प्रतियोगिता/अस्थाई प्रदर्शनी।
		06.12.2015	डॉ0 बी0 आर0 अम्बेडकर के निर्वाण दिवस के अवसर पर अस्थायी प्रदर्शनी।
		30.01.2016	अस्थायी प्रदर्शनी।
12	राजकीय पुरातत्व संग्रहालय कन्नौज।	18.04.2015	विश्व धरोहर दिवस पर स्कूली छात्र-छात्रों की चित्रकला प्रतियोगिता।
		18.05.2015	विश्व संग्रहालय दिवस पर अस्थायी प्रदर्शनी।
		15.08.2015	अस्थायी प्रदर्शनी।
		02.10.2015	गॉधी जयन्ती का आयोजन व स्कूली बच्चों की निबन्ध प्रतियोगिता।
		14.11.2015	बाल दिवस पर स्कूली छात्र-छात्राओं की विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन/अस्थायी प्रदर्शनी
		26.01.2016	गणतन्त्र दिवस पर विभिन्न स्कूलों के छात्र-छात्राओं का संग्रहालय भ्रमण व प्रतियोगिताएँ

नोट - अपरिहार्य परिस्थितियों में कार्यक्रम परिवर्तनीय है।

पी0एस0यू0पी0—ए0पी0 1 संस्कृति—10.03.2015—(2473)—1400 प्रतियां (आफसेट)।

: मुद्रक :
निदेशक, मुद्रण एवं लेखन सामग्री, उ० प्र०, लखनऊ
वेबसाइट-.*dpsup.up.nic.in*
2015